पुस्तिका पन्द्रह

नवम्बर 2020

जनवरी 2007 से दिसम्बर 2007

सम्भव है
कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

मसला यह व्यवस्था है (8)

इस–उस नीति, इस–उस पार्टी, यह अथवा वह लीडर की बातें शब्द–जाल हैं, शब्द–आडम्बर हैं

✶ राजे-रजवाड़ों के दौर में, बेगार-प्रथा के दौर में मण्डी-मुद्रा का प्रसार कोढ में खाज समान था। छोटे-से ग्रेट ब्रिटेन के इंग्लैण्ड-वेल्स- स्कॉटलैण्ड-आयरलैण्ड में भेड़ों ने, भेड़-पालन ने मनुष्यों को जमीनों से खदेड़ा। कैदखानों में जबरन काम करवाने, दागने, फाँसी देने के संग-संग बेघरबार किये गये लोगों को दोहन-शोषण के लिये दूरदराज अमरीका-आस्ट्रेलिया जैसे स्थानों पर जबरन ले जाया गया। उन स्थानों के निवासियों के लिये तो जैसे शामत ही आ गई हो। गुलामी जिनकी समझ से बाहर की चीज थी उन अमरीकावासियों के कत्लेआम किये गये। अफ्रीका से गुलाम बना कर लोगों को अमरीकी महाद्वीपों में काम में जोता गया।

✶ फैक्ट्री-पद्धति ने मण्डी-मुद्रा के ताण्डव को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली फैक्ट्री-पद्धति को भाप-कोयले ने, भाप-कोयला आधारित मशीनरी ने स्थापित किया। इसके संग दस्तकारी और किसानी की मौत, दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत आरम्भ हुई। छोटेसे-ग्रेट ब्रिटेन के कारखानों में 6-7 वर्ष के बच्चों, स्त्रियों और पुरुषों को सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम में जोता गया और ... और बेरोजगार बने-बनते लाखों लोगों के लिये अनजाने, दूरदराज स्थानों को पलायन मजबूरी बने।

✶ फ्रान्स-जर्मनी-इटली... में फैक्ट्री-पद्धति के प्रसार के संग वहाँ भी आरम्भ हुई दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत लाखों को मजदूर बनाने के संग-संग यूरोप से बड़े पैमाने पर लोगों को खदेड़ना भी लिये थी। अमरीका.... आस्ट्रेलिया... लोगों से "भर गये"।

✶ बिजली ने रात को भी काम के लिये खोल दिया। फैक्ट्री-पद्धति ने हमारी नींद ही नहीं उड़ाई बल्कि मारामारी का वह अखाड़ा भी रचा कि 1914-19 के दौरान ढाई करोड़ लोग और 1939-45 के दौरान पाँच करोड़ लोग तो युद्धों में ही मारे गये।

✶ अब फैक्ट्री-पद्धति में यह इलेक्ट्रोनिक्स का दौर है। फैक्ट्री-पद्धति का प्रसार पृथ्वी के कौने-कौने में और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। इस दौर में एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत तीव्र गति से हो रही है। भारत के, चीन के करोड़ों तबाह दस्तकार-किसान कहाँ जायें? इलेक्ट्रोनिक्स द्वारा दुनियाँ-भर में बेरोजगार कर दिये गये, बेरोजगार किये जा रहे करोड़ों मजदूर कहाँ जायें?

व्यक्ति/व्यक्तित्व को एक तरफ गौण-दर-गौण बनाती और दूसरी तरफ व्यक्ति का महत्व स्थापित करती वर्तमान समाज व्यवस्था वास्तव में गौण को महत्वपूर्ण बना रही है। छवि की महामारी के सन्दर्भ में आइये विद्यालय शिक्षा पर कुछ चर्चा करें।

स परिवार के तवे से विद्यालय के चूल्हे में बच्चों को धकेला जाना सामान्य बात बन गई है। बाल मन में छवि और वास्तविक के द्वन्द्व का सिलसिला आरम्भ कर दिया जाता है। तन को कष्ट देना और मन को मारना बच्चों की नियति-सी बन गई है। किसी के सिखाने पर-किसी के दबाव में यह करना अथवा स्वयं ही ऐसा करने वाला-वाली में ढल जाना स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं लिये है। पीड़ा को अन्यों से छिपाना, बल्कि खुद से भी छिपाना सिखाया-सीखा जाता है। विद्यालय शिक्षा पीड़ा का महिमामण्डन करती है, अधिक पीड़ा झेलने वालों को नायक-नायिका के तौर पर अनुकरणीय उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इच्छाओं, भावनाओं व प्रवृतियों को दबाना, छिपाना और अपमान सहना-दण्ड स्वीकार करना सीखना छवि निर्माण के स्रोत हैं। विद्यालयों में हैं :

– हँसने और रोने पर रोक।
– भोजन और खेल की घण्टी।
– आपस में बातचीत की मनाही, अध्यापक को देखना-सुनना, पंक्ति/क्रम का पालन।
– निर्देश अनुसार उठना-बैठना और पानी-पेशाब-टट्टी के लिये अनुमति लेना।
– बड़े और छोटे, वरिष्ठ और कनिष्ठ के भेद, आज्ञापालन।
– गुस्से की अभिव्यक्ति पर रोक, बोरियत को छुपाना।
–नींद, आराम, आलस्य, पसरना अवांछनीय।
– ज्ञान का, शक्ति का, कौशल का बखान।
– अन्य से कम, कमजोरी, अज्ञान हीन-हेय।
–मामुली भेद, भिन्नता को परीक्षाओं, प्रतियोगिताओं के जरिये बढाना और अन्तर का महिमामण्डन, मामुली अन्तर को महत्वपूर्ण

बनाना।
— लड़का और लड़की के स्वाभाविक व सहज सम्बन्धों को छिपाना, नकारना सिखाना-सीखना।
— गर्त में ले जा रही वर्तमान व्यवस्था के मूल्यों के अनुसार अच्छे और बुरे छात्र के पैमाने।
— दण्ड और अपमान।

उपरोक्त बातें सामान्यतः सब विद्यालयों में हैं। विद्यालय शिक्षा का सार हैं यह। विद्यालय कोई भी हो, छवि को-छवियों को स्थापित कर वास्तविक और छवि की तनातनी वाली पीड़ा के अथाह दलदल का निर्माण करता है। व्यक्ति की छवि और वास्तविक स्थिति में जितना अधिक फर्क होता है उतनी ही ज्यादा झूठ, फरेब, दिखावे की पीड़ा व्यक्ति को झेलनी पड़ती है। लेकिन छवि और वास्तविक की दूरी कम करना कोई समाधान नहीं है। छवि के अनुरूप अपने को ढालने वालों को अपने तन इतने तानने और मन इतने मारने पड़ते हैं कि उनका जीवन अत्यन्त एकांगी और एकाकी बन जाता है, समुद्र में पीड़ा का पहाड़ बन जाता है।

ऊँच-नीच। आधुनिक ऊँच-नीच। अखाड़ा-मण्डी। विश्व मण्डी। होड़-प्रतियोगिता-कम्पीटीशन का सर्वग्रासी अभियान। स्वयं मनुष्यों का मण्डी में माल बन जाना। यह है वर्तमान समाज व्यवस्था।

● छवियों के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाते विद्यालयों की अपनी-अपनी छवियाँ हैं। वर्तमान ऊँच-नीच वाली व्यवस्था के अनुरूप बड़े-छोटे, महँगे-सस्ते, अच्छे-खराब विद्यालय की श्रेणियाँ व छवियाँ हैं। विद्यालय पद्धति की विशेष, बीच वाले, और सामान्य श्रेणी-छवि के निर्माण में भूमिका है :
— चन्द विद्यालय, नफीस विद्यालय हैं जो वर्तमान व्यवस्था के संचालक मण्डल के सदस्य तैयार करते हैं। छवि का माहात्म्य इन विद्यालयों का
सार है और नफासत इनकी कार्यपद्धति।
— दूसरी श्रेणी में वे विद्यालय हैं जो वर्तमान व्यवस्था के दार्शनिक-सिद्धान्तकार स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। खुरदरे को तराश कर गोलमोल करना, सहज—सरल को गूढता के लबादे में लपेटने में दक्ष बनाना इन विद्यालयों की शिक्षा का सार है।
— तीसरी श्रेणी के विद्यालय वर्तमान व्यवस्था के उच्च प्रशासनिक स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। नफासत और खुरदरेपन के बीच की कड़ी को दीक्षित करते यह विद्यालय हीन भावना और महत्वाकांक्षा के संगम स्थल हैं।
—चौथी श्रेणी के विद्यालयों का कार्य वर्तमान समाज व्यवस्था के सामान्य प्रशासनिक स्तर के सदस्य तैयार करना है। डर और लालच के जरिये पीड़ितों में वर्तमान व्यवस्था के मूल्य इस श्रेणी के विद्यालय स्थापित करते हैं।
— और, विशाल सँख्या है पाँचवीं श्रेणी के विद्यालयों की। यह विद्यालय वर्तमान व्यवस्था के मजदूर- सिपाही, कर्मचारी, अध्यापक, फैक्ट्री व अन्य व्यवसाय के वरकर- और दुकानदार स्तर के सदस्य तैयार करते हैं। भौतिक और बौद्धिक तौर पर कंगले यह विद्यालय वीभत्स रूप में अपमान तथा दण्ड के जरिये विद्यालयों की वास्तविकता के दर्शन कराते हैं।

विद्यालयों की प्रत्येक श्रेणी अपनी-अपनी छवि का निर्माण करती है। एक श्रेणी में भी भिन्न छवियाँ होती हैं। निकट वाली श्रेणियों में थोड़ा-बहुत आवागमन होता है। ऊँची छलाँग-भारी गिरावट घटना हैं, कभी-कभार होती हैं और खबर बन कर छवियों में श्रेणीबद्धता को महत्व देती हैं, महत्वपूर्ण बनाती हैं।

गौण के महत्वपूर्ण बनने की त्रासदी ने छवियों का श्रेणीकरण कर उन में कम व अधिक महत्व की श्रेणी बना दी हैं। यह पीड़ा को छिपाने में दोहरी परत का काम करती है। हम ने अपनी क्या गत बना ली है कि अपने जीवन को सिकोड़ने को हम सफलता की कुँजी मान बैठे हैं!

नीति, पार्टी, नेता बदलने से इस सब में कोई फर्क पड़ेगा क्या? (जारी)

दर्पण में चेहरा—दर—चेहरा

फरीदाबाद में :

पी.पी. रोलिंग मिल्स मजदूर : ''प्लॉट 39 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में पूरी रोलिंग मिल बनती हैं — बियरिंग जापान से आती हैं और फैक्ट्री का उत्पादन सउदी अरब, इंग्लैण्ड आदि कई देशों को निर्यात किया जाता है। फैक्ट्री में ग्राइन्डिंग व पेन्ट के कारण बहुत प्रदूषण है और एग्जास्ट फैन एक भी नहीं है।

''कम्पनी का मुख्यालय फ्रैन्ड्स कॉलोनी, दिल्ली में है। पहली फैक्ट्री डी-1 ओखला फेज 1 में है। इधर 39 सैक्टर-27 सी में जगह की भारी कमी की वजह से कम्पनी ने सराय के पास भास्कर एस्टेट में तीसरी फैक्ट्री लगा ली है और अतुल ग्लास फैक्ट्री वाला प्लॉट भी खरीद लिया है।

''पी.पी. रोलिंग में मशीन शॉप में 12-12 घण्टे और फिटर विभाग में 11) -12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 8-8 घण्टे की ड्युटी। मजदूरों को फुरसत बिलकुल नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम देते थे। कई बार माँग करने के बाद इधर 4-5 महीने से ओवर टाइम सिंगल रेट से किया है।

''इस समय सैक्टर-27 सी वाली फैक्ट्री में 150 मजदूर व 50 से अधिक स्टॉफ के लोग हैं। स्थाई मजदूर 50 से कम हैं और 100

से ज्यादा को कैजुअल कहते हैं। कैजुअलों को निकालते नहीं, 7-8 साल से लगातार नौकरी कर रहे भी कैजुअल हैं। कैजुअल हैल्पर की तनखा 1800-2000 रुपये और कैजुअल कारीगर की 2500-3500 रुपये। ***कैजुअल वरकरों को कम्पनी दस्तावेजों में दिखाती ही नहीं।*** जाँच वालों के आने की सूचना कम्पनी को पहले ही मिल जाती है और उस दिन कैजुअलों को फैक्ट्री आने से मना कर देते हैं। साल में दो बार तो ऐसा हो ही जाता है।

''पी.पी. रोलिंग में कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी. एफ. नहीं हैं। छह महीने पहले रात की ड्युटी में क्रेन से जॉब उठाते समय एक कैजुअल की दो उँगली कट गई। वह 4 वर्ष से काम कर रहा था पर एक दिन पहले की भर्ती दिखा कर कम्पनी ने उसकी ई.एस.आई. करवाई। इधर 15 दिन पहले गियर बॉक्स में एक कैजुअल की उँगली छिल गई। कम्पनी ने उसकी ई.एस. आई. नहीं करवाई। पन्द्रह दिन पट्टी करवाने पर ठीक नहीं हुआ तो अब कम्पनी ने 10 दिन की छुट्टी पर भेज दिया है।

''पी.पी. रोलिंग की फरीदाबाद फैक्ट्रियों में मजदूरों को एक से दूसरी जगह भेजते रहते हैं। दस महीने पहले क्रेन ऑपरेटर को दिन की ड्युटी के बाद रात के लिये रोका था। घर से खाना खा कर फैक्ट्री लौटते समय रात 9 बजे मथुरा रोड़ पार करते समय एक्सीडेन्ट में मृत्यु हो गई। जिला अस्पताल से लाश लाये, दाह संस्कार किया— दोनों शिफ्टों में काम नहीं हुआ। कम्पनी ने दाह संस्कार वाले दिन के बदले त्यौहारी छुट्टी के दिन ड्युटी करवाई! पी. पी. रोलिंग मिल्स का चेयरमैन प्रेम खन्ना है।''

अल्फा इन्स्ट्रुमेन्ट्स-अभिराषि इम्पैक्स मजदूर: ''30/2 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे कार्य आरम्भ करने वालों में से 4-5 को साँय 6) बजे, बाकी कारीगरों को 7) पर और कैजुअल व पैकिंग वालों को आवश्यकता अनुसार 48 घण्टे तक लगातार काम करवाने के बाद छोड़ते थे। साँय 6) छूटने वालों को चाय—मट्ठी नहीं और एक घण्टे का ओवर टाइम भी नहीं। दो घण्टे वालों को सिंगल रेट से ओवर टाइम और 7 बजे चाय-मट्ठी। रात 10 बजे बाद तक रोकने पर रोटी के 10 रुपये। फैक्ट्री में काम करते आधे से ज्यादा मजदूरों को दस्तावेजों में दिखाते नहीं थे, उनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, और भर्ती पर तनखा 1500 रुपये। एस.जी.एम. नगर से इन्डस्ट्रीयल एरिया में स्थानान्तरित फैक्ट्री के मजदूरों को इधर-उधर दिखाने के लिये तीन कम्पनियाँ बना रखी हैं और इस से उस कम्पनी में नाम डाल कर स्थाई मजदूरों की 8-10 वर्ष की नौकरी मैनेजमेन्ट खा गई। पिता-पुत्र डायरेक्टर हैं और पिता हर समय सिर पर खड़ा रहता है। दो महीने पहले एक महिला मजदूर द्वारा श्रम विभाग में शिकायत पर कम्पनी ने एक स्थाई मजदूर को वहाँ मैनेजर बना कर पेश किया। इधर 24 नवम्बर को स्थाई मजदूरों ने श्रम विभाग में शिकायत की। इस पर 29 नवम्बर को अधिकतर कैजुअल वरकरों को निकाल दिया परन्तु समय पर वेतन नहीं देने वाली कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को नवम्बर की तनखा 9 दिसम्बर को दी और पहली बार पे-स्लिप भी दी। अब अधिकतर स्थाई मजदूर 5) बजे छुट्टी कर जाते हैं। कम्पनी ने बोनस कभी दिया ही नहीं है पर नवम्बर का वेतन देते समय बोनस रजिस्टर में भी हस्ताक्षर करवा लिये। फैक्ट्री में हर प्रकार के वाहनों के ऑटोमीटर बनते हैं और अधिकतर उत्पादन का अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी, हॉलैण्ड, तुर्की को निर्यात होता है। कम्पनी वर्ष में सिर्फ चार छुट्टी देती है।''

टालब्रोस इंजिनियरिंग वरकर : ''74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर हैं और एक हजार वरकरों को एक ठेकेदार के जरिये रखा बताते हैं हालाँकि भर्ती कम्पनी स्वयं ही करती है। ठेकेदार के नाम दर्शाये 1000 मजदूरों में से 60 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्पर की तनखा 1825 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और महीने के तीसों दिन कार्य करना अनिवार्य है। टालब्रोस में प्रवेश का समय निश्चित है, निकास का नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कार्य के दौरान चोट लगने पर थोड़ा इलाज करवा कर नौकरी से निकाल देते हैं। फैक्ट्री में टाटा, बजाज, महिन्द्रा, मैसी आदि के पुर्जे बनते हैं।''

जेमी मोटर्स मजदूर : ''सैक्टर-11 मॉडल टाउन स्थित फैक्ट्री पर पहले अमेरिकन यूनिवर्सल का बोर्ड था, फिर जी.ई. मोटर्स का लगा और अब नाम जेमी मोटर्स है। फैक्ट्री में साफ-सफाई बहुत है पर कैन्टीन में 10 रुपये की थाली में पेट नहीं भरता। दुबारा माँगने पर कैन्टीन वाले आनाकानी करते हैं और कहते हैं कि 10 रुपये में इतना ही मिलेगा। वैसे बताते हैं कि कम्पनी प्रति थाली 15 रुपये अलग से देती है। कम्पनी ने पैकिंग, सफाई आदि में ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे हैं और ट्रेनी में 6 महीने वालों तथा 1) साल वालों की श्रेणी बनाई हैं। डर और लालच के जरिये कम्पनी ट्रेनी पर काम के बोझ को लगातार बढा रही है। कहते हैं कि कम्पनी की अमरीका स्थित फैक्ट्रियों में शनिवार व रविवार की छुट्टी रहती है पर यहाँ तो रविवार को भी काम करवाते हैं। नये प्लान्ट में 24 दिसम्बर वाले रविवार को तो कम्पनी ने हद कर दी। इधर साल-भर में उत्पादन 40 प्रतिशत बढाया है और 24 दिसम्बर को मैनेजर आ कर बोल गया कि उस दिन उत्पादन में 80 प्रतिशत वृद्धि करने पर ही छुट्टी मिलेगी। सुबह 6 बजे से शिफ्ट शुरू हुई थी और रविवार को इक्का-

दुक्का स्थाई मजदूर जो आये थे वे शिफ्ट समाप्ति के समय 2) बजे चले गये परन्तु निर्धारित उत्पादन देने के लिये प्रशिक्षुओं को 5 बजे तक काम करना पड़ा। कम्पनी ओवर टाइम को मानती ही नहीं — शिफ्ट के बाद 2) घण्टे अतिरिक्त समय काम के लिये जेमी-जी.ई. मोटर्स कम्पनी कोई पैसे नहीं देगी। कम्पनी ने 24 दिसम्बर को मजदूरों से बेगार करवाई।''

अमर इंजिनियरिंग मजदूर : ''प्लॉट 5 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में सुबह 7 से रात 8) बजे तक की एक शिफ्ट है। रविवार को 7 से 4)। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1900 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में रेलवे के पुर्जे बनते हैं और भारी बोझ वाला काम है — चोट लगती रहती हैं। चोट लगने पर कम्पनी प्रायवेट में दवाई—पट्टी करवा देती है। ज्यादा चोट लगने पर कहते हैं कि जाओ आराम करो और ठीक हो जाओ तब ड्युटी आना। कम्पनी 13) घण्टे में एक चाय-मट्ठी देती है। नवम्बर की तनखा 13 दिसम्बर को दी।''

ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर : ''13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर, और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 80 मजदूर काम करते हैं। कैजुअल वरकरों की तनखा 2484 रुपये है और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर अधिकतर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे रोज पर तीस दिन के 1500-1600 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इस समय सुबह 8) से 5 की शिफ्ट है पर 7 बजे तक तो रोकते ही हैं — महिला मजदूरों को 7 के बाद नहीं रोकते पर पुरुष रात 9 बजे तक भी काम करते हैं। रात 7 से अगले रोज सुबह 7 बजे की शिफ्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर ही रहते हैं। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी सिंगल रेट से तो देती ही है, ओवर टाइम के आधे घण्टे अधिकारी खा जाते हैं। तनखा में फिर देरी शुरू कर दी है — नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर को दिया।''

एस-के-इंजिनियरिंग वर्क्स वरकर : ''सैक्टर-59 में जे.सी.बी. के सामने मथुरा रोड़ पर स्थित फैक्ट्री में सी एन सी मशीनों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट जारी हैं पर इधर अन्य विभागों में 12) घण्टे की एक शिफ्ट कर दी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रविवार को 8 घण्टे पर रोटी के लिये 15 रुपये और रात में 12 घण्टे पर 25 रुपये देते हैं। हैल्परों की तनखा 1600-1800 रुपये।''

दिल्ली में :

स्टाइल काउन्सल मजदूर : ''डी-96 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 के ही हैं। फैक्ट्री में सुबह 9) से रात 1 बजे तक की शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती। महीने के तीसों दिन सुबह 9) से रात 1 बजे तक काम - चार महीने से कम्पनी ने एक छुट्टी भी नहीं दी है।''

बीना प्रेस वरकर : ''सी-66/3 ओखला फेज 2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान डबल की बजाय सवा की दर से करते हैं।''

आनन्द इन्टरनेशनल मजदूर : ''डी-3 ओखला फेज 1 स्थित फैक्ट्री में 700 वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 127 के ही हैं। इधर कम्पनी ने फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट कर दी हैं। पुराने हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3312 रुपये और नये हैल्परों को 2500 रुपये। फैक्ट्री में 650 पुरुष मजदूरों के लिये सिर्फ एक लैट्रीन है — लाइन लगी रहती है।''

अनुबन्ध में आत्महत्या

ठेकेदारों के जरिये बड़ी सँख्या में कर्मी रखना सरकारों की परम्परा रहा है। इधर सरकारों द्वारा स्थाई कार्य के लिये अन्य तरीकों से अस्थाई भर्ती करना बहुत बढ गया है। सरकारें 89 दिन के अनुबन्ध पर कर्मचारी रखती हैं और फिर इन 89-दिनि अनुबन्धों को दोहराती रहती हैं। अनुबन्ध पर रखे जाते कर्मचारी की तनखा वही काम करते स्थाई कर्मी के वेतन से आधी-तिहाई होती है। बिना कारण बताये कभी भी नौकरी से निकाला जा सकता है इसलिये अनुबंधित को कदम-कदम पर झुकना पड़ता है और अधिक बोझ उठाना पड़ता है। अनुबंध का नवीनीकरण होता रहे इसके लिये एक जरूरी-सी शर्त है कि अनुबंधित कर्मचारी किसी प्रकार का विरोध नहीं करे....

छत्तीसगढ सरकार ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों में अस्सी हजार शिक्षक अनुबन्धों के आधार पर रखे हैं। इन अनुबंधित शिक्षकों को 2500-4500 रुपये वेतन दिया जाता है। तनखा बढाने की माँग करते हुये छत्तीसगढ सरकार के 80 हजार अनुबंधित शिक्षकों ने 20 नवम्बर 06 से राज्य-भर में पढाना बन्द कर दिया। सरकारी स्कूलों में पढाई प्रभावित होने से सरकारें कम ही चिन्तित होती हैं। ऐसे में दबाव बढाने के लिये अनुबंधित अध्यापकों ने 12 दिसम्बर को राजधानी रायपुर में धरना आरम्भ किया। एकत्र हुये हजारों महिला व पुरुष शिक्षकों की पुलिस ने लाठियों से पिटाई की और 4500 को गिरफ्तार भी किया। पुलिस द्वारा सार्वजनिक तौर पर अपमानित किये जाने पर अध्यापकों ने राज्यपाल से दया मृत्यु की अनुमति माँगी है..... सरकारें अनुबंध की शर्तों में आत्महत्या की अनुमति वाली धारा जोड़ सकती हैं। (जानकारी 18-12-06 के 'हिन्दुस्तान' अखबार से)

गुडईयर हड़ताल

नवम्बर अंक में हम ने अमरीका व कनाडा में ***गुडईयर टायर एण्ड रबड़*** कम्पनी की 16 फैक्ट्रियों में 12 हजार से ज्यादा मजदूरों द्वारा हड़ताल का जिक्र किया था। इन्टरनेट के जरिये मित्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार 5 अक्टूबर को आरम्भ हुई हड़ताल 20 दिसम्बर को भी जारी थी।

उत्तरी व दक्षिणी अमरीकी महाद्वीपों में गुडईयर सबसे बड़ी टायर निर्माता कम्पनी है। यूरोप में यह दूसरे नम्बर पर है। भारत में गुडईयर की फैक्ट्रियाँ हैं — फरीदाबाद में फैक्ट्री है। चीन में फैक्ट्रियाँ स्थापित करने की बातें....

कनाडा—अमरीका में गुडईयर फैक्ट्रियों में 5 अक्टूबर से हड़ताल का कारण जुलाई 06 से मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता नहीं होने को बताया गया। यूनियन के निर्देश पर हड़ताल....... प्रारम्भ में जो छुटपुट सामग्री मिली उससे हमें आशंका हुई थी कि यह हड़ताल एक जाल है जो मजदूरों को भारी नुकसान के लिये बुना गया है। इधर मित्रों से प्राप्त जानकारी ने हमारी आशंका को बढाने का काम किया है।

नये स्थाई भर्ती वाले मजदूरों को कम तनखा देने; पेन्शन में कटौती; चिकित्सा में कटौती; कार्यस्थल की स्थितियाँ बदतर करने; दो फैक्ट्रियाँ बन्द कर दो हजार मजदूरों की छँटनी करने पर मैनेजमेन्ट और यूनियन में सहमति बन चुकी थी। फिर, नये भर्ती के लिये अन्य टायर कम्पनियों से हुये समझौते से भी कम राशि की बात गुडईयर मैनेजमेन्ट ने की........ और यूनियन अड़ गई। चालीस प्रतिशत मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्ट-यूनियन सहमति के विरोध को एक आधार बना यूनियन ने हड़ताल की घोषणा की। मैनेजमेन्ट द्वारा अन्य लोगों के जरिये फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य — 10 प्रतिशत से कम और खराब भी....

स्थाई मजदूरों को अधिक दबाने के लिये नरम करने के वास्ते कम्पनियों द्वारा हड़ताल की रचना करना अथवा तालाबन्दी करना इधर काफी समय से आम बात है।

अमरीका में गुडईयर के स्थाई मजदूर की तनखा फरीदाबाद में गुडईयर फैक्ट्री के स्थाई मजदूर की तनखा से पच्चीस गुणा है और कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये यहाँ रखे जाते वरकरों के वेतन से तो डेढ सौ गुणा है। ऐसी ही स्थिति चीन आदि में है। ऐसे में यूरोप-अमरीका से बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ भारत-चीन आदि में उत्पादन स्थानान्तरित कर रही हैं। इधर वाहन उद्योग की तीव्र गति भी गुडईयर जैसी कम्पनियों के लिये आकर्षण है।

लेकिन वाहनों की अमरीका में भरमार है। प्रमुख टायर निर्माता की फैक्ट्रियों में ढाई महीने उत्पादन बन्द के कारण अमरीकाकनाडा में वाहन उद्योग प्रभावित होने के आसार। फिर, अमरीका सरकार की सेना के वाह-नों के टायरों का प्रमुख स्रोत भी गुडईयर कम्पनी है। इराक-अफगानिस्तान में युद्ध पर खराब असर.... अमरीका सरकार की फौज ने न्यायालय के जरिये हड़ताल समाप्त करवाने की बातें शुरू कर दी हैं। और, यूनियन ने ''हमारी सेना'' की कार्यकुशलता, ''हमारे सैनिकों'' की सुरक्षा का राग अलापना शुरू कर दिया है — हड़ताल खत्म करने की पैंतरेबाजी में यूनियन कहने लगी है कि फैक्ट्रियों में जो लोग काम कर रहे हैं उन्हें निकालो तो यूनियन फौरन काम चालू करवा देगी....... मजदूरों को प्रभावित करने वाले मुद्दे गायब !!

''फँसा दिया'' कह कर विलाप करने से कुछ नहीं होता। फैक्ट्रियों में हड़ताल-तालाबन्दी की घटना से आज स्थाई मजदूर बहुत प्रभावित होते हैं। इन घटनाओं से पार पाने के उपायों पर विचार—विमर्श आवश्यक हैं।

एक—दूसरे की मजबूरियों को समझना, एक—दूसरे की कमी—कमजोरी को स्वीकार करना तालमेल की दिशा में, हालात बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (6)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

✶ कभी-कभार के शोषण की बजाय नियमित शोषण ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी वाली समाज व्यवस्थाओं का आधार होता है। नियमित शोषण के लिये शोषणतन्त्र आवश्यक होते हैं। और चूँकि शोषितों द्वारा शोषण का विरोध स्वाभाविक है, किसी भी शोषण-तन्त्र को नियमित दमन की आवश्यकता होती है। शास्त्र और शस्त्र की जुगलबन्दी के संग पृथ्वी पर दमन-तन्त्रों का श्रीगणेश हुआ। दमन-तन्त्र का ही दूसरा नाम, अधिक प्रचलित नाम सरकार है।

✶ दमन-तन्त्र की विशेषता यह है कि यह खर्चा माँगता है। सरकार के खर्च का आदि-स्रोत टैक्स हैं और हाथ उत्पादन के आदि-स्रोत, इसीलिये कर = हाथ, कर = टैक्स। अधिक समय नहीं हुआ, महलों-किलों में रहने वाले राजा-सामन्त सरकार थे और भूदासों से उपज का छठा हिस्सा ($16^{2}_{3}\%$) वसूलने का कानून था। आज विधायक-सांसद-अधिकारी वाली सरकार के खर्च की पूर्ति के लिये कुल उत्पादन व खपत का आधे से ज्यादा हिस्सा लिया जाता है। सरकारों द्वारा उपज-खपत का लगभग 70 प्रतिशत विभिन्न प्रकार के टैक्सों के रूप में वसूलने के कानून हैं।

✶ भूदासों द्वारा अपनी उपज का 83^{1}@$_{3}\%$ रखना कानून अनुसार था। उत्पादकता में छलाँगें लगी हैं और आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक&दो प्रतिशत मजदूरों के हिस्से में आना कानून अनुसार है। बाकी के 98 प्रतिशत में शोषण-तन्त्र और दमन-तन्त्र में हिस्सा-बाँट होती है।

✶ कानूनी और गैर-कानूनी में चोली-दामन का साथ रहा है। प्रहरी, कोतवाल, मन्त्री द्वारा रिश्वत लेने के किस्से बहुत पुराने हैं। दरअसल दमन-तन्त्र रिश्वत की चर्बी के बिना चल ही नहीं सकते। इसलिये नगर-प्रान्त-देश के दायरों में कैद हो कर भ्रष्टाचार आदि को मूल समस्या मानना नादानी के सिवा और कुछ नहीं है। हाँ, गैर-कानूनी को मर्ज और कानून को दवा पेश कर कानून अनुसार दमन-शोषण को छिपाने का नुस्खा पुराना है, यह शुद्ध काँइयापन है।

✶ आज नई बात दमन-तन्त्र के संग-संग शोषण-तन्त्र में भी कानूनों का उल्लंघन, गैर-कानूनी कार्यों का बहुत-ही बड़े पैमाने पर होने लगना है। मण्डी-मुद्रा के साम्राज्य में कानूनों का यह अर्थहीन होना राजाओं-सामन्तों के अन्तिम चरण में कानूनों के अर्थहीन होने जैसा लगता है। *दिल्ली और इसे घेरे नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में कार्य करते 70-75 प्रतिशत मजदूरों को अब दस्तावेजों में दिखाना ही नहीं को विलाप की वस्तु की बजाय नई सम्भावनाओं से ओत-प्रोत के तौर पर देखना बनता है।*

मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया के चलते कानूनी/ गैर-कानूनी में हुई इस उलट-फेर के सन्दर्भ में यहाँ हम इन दो सौ वर्षों के दौरान मालिकाने में आये परिवर्तनों पर चर्चा जारी रखेंगे।

❍ कारखाने की स्थापना-संचालन की लागत में लगातार वृद्धि ने फैक्ट्री मालिक को एक आना-दो आना-चार आना वाले हिस्सेदार में बदला। फिर, लागत के बढते जाने के संग चन्द लोगों द्वारा मिल कर फैक्ट्री की स्थापना– संचालन असम्भव बना। हजारों शेयरहोल्डरों की भागीदारी वाले विशाल कारखाने उभरे जिनके संचालकों का लागत में अंश बहुत कम था। मालिक से हिस्सेदार बनने की राह ने प्रवर्तक-प्रमोटर बना दिया।

❍ कारखानों द्वारा विशाल आकार अख्तियार करने की अनिवार्यता ने हजारों शेयरहोल्डरों को जरूरी बनाया तो इनकी स्थापना-संचालन के लिये निदेशकों वाले बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स आवश्यक बने। ''मालिक'' शब्द-मात्र रह गया और प्रवर्तक लोग निदेशक मण्डल के तहत अध्यक्ष/प्रबन्ध निदेशक बने। संचालन और मालिकाने में बहुत फर्क आ गया।

❍ प्रवर्तक/अध्यक्ष-प्रबन्ध निदेशक की असल स्थिति बहुत कमजोर बनी। कम्पनियों की मैनेजमेन्टें बदलना सामान्य बनने लगा। ''मालिक नहीं, पर फिर भी मालिक'' वाली स्थिति की नाजुकता बढी। बने रहने के लिये समर्थन की जुगाड़ ने, छिटक दिये जाने पर औकात बनाये रखने की चाहत ने चेयरमैन मैनेजिंग-डायरेक्टर को कम्पनी की चोरी की राह पर अग्रसर किया।

❍ मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया विशाल-विराट कारखानों पर समाप्त नहीं होती। इस्पात कारखाने की बात करें तो स्टील उत्पादन में कोयला खदानें, चूना पत्थर खदानें, बिजलीघर, रेलवे जुड़ते जाते हैं। एक कारखाना कई अन्य कारखानों आदि की लड़ी की अनिवार्य आवश्यकता उत्पन्न करता है। इस सब से

लागत इतनी बढ जाती है कि यह हजारों शेयरहोल्डरों के बूते से बाहर की चीज हो जाती है। मण्डी का खप्पर करोड़ों लोगों से अंश की माँग करता है, लेने लगता है। आज से 80-100 साल पहले यह हालात अस्तित्व में आ गये थे। और , इस सन्दर्भ में सरकारों द्वारा आर्थिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप एक बढती अनिवार्यता के तौर पर उभरा।

❍ करोड़ों लोगों के अंश लेने का प्रमुख माध्यम कर्ज बना। कम्पनी की स्थापना-संचालन की लागत के बढते हिस्से ने कर्ज का रूप लिया। जमीन गिरवी, इमारतें गिरवी, मशीनें गिरवी.... यह किसी अलग-थलग फैक्ट्री/कम्पनी की बातें नहीं हैं बल्कि वर्तमान में यह उत्पादन/वितरण क्षेत्र में सामान्य हालात हैं। आज कम्पनी स्थापना-संचालन की लागत का औसतन 15 प्रतिशत शेयरों से और 85 प्रतिशत कर्ज से आता है। संचालन और मालिकाने के बीच खाई बहुत चौड़ी हो गई है। फिर भी प्रवर्तक, शेयरहोल्डर, बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर कम्पनियों की स्थापना—संचालन में उल्लेखनीय बने रहे हैं। लेकिन इन परिस्थितियों ने किसी के कम्पनी का अध्यक्ष—प्रबन्ध निदेशक बने रहने के लिये बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स तथा शेयरहोल्डरों को साधने के संग-संग कर्ज देने वाली संस्थाओं के साहबों को साधे रखना अनिवार्य कर दिया है। ऐसे में "मालिक नहीं, पर फिर भी मालिक" की त्रासद स्थिति का एक और उदाहरण मात्र है कोरिया में नेताओं को रिश्वत देने के लिये विशाल हुन्दई कम्पनी के चेयरमैन को तीन वर्ष जेल की सजा।

❍ बैंक कर्ज के मुख्य स्रोत रहे हैं। पेन्शन फण्डों के बढते आकार ने उन्हें कर्ज देने वाले बड़े खिलाड़ियों में शामिल कर दिया। अनेकों अन्य वित्त संस्थायें विशाल कर्ज देने वालों की कतारों में हैं। देशों के दायरों को तोड़ कर कर्ज विश्व स्तर पर दिया-लिया जाता है। एक कम्पनी द्वारा दूसरी कम्पनी पर कब्जा करने में कर्ज देने वालों की भूमिका प्रमुख होती है। जिसकी पीठ पर कर्ज देने वाले अधिक शक्तिशाली गठबन्धन का हाथ होता है वही कब्जा करने में सफल होता-होती है। कोरेस स्टील पर टाटा स्टील का कब्जा टाटा स्टील अथवा रतन टाटा की शक्ति का परिणाम नहीं है। बल्कि, यह टाटा स्टील को कर्ज देने वाले गठबन्धन का प्रतिद्वंद्वी ब्राजील में मुख्यालय वाली कम्पनी को कर्ज देने वाले गठबन्धन से अधिक शक्तिशाली होने का नतीजा है। (जारी)

मृत्यु पर नाम गायब

नित्या एक्सपोर्ट मजदूर : "फरीदाबाद में बडकल चौक के निकट मथुरा रोड़ पर स्थित फैक्ट्री के गेट पर स्कोर्पियो एपरेल्स का नाम लिखा है पर यह नित्या एक्सपोर्ट के नाम से जानी जाती है। कम्पनी की दिल्ली और फरीदाबाद स्थित तीन फैक्ट्रियों में 2500 मजदूर काम करते हैं जिनमें बड़ी सँख्या महिला मजदूरों की है।

"नित्या एक्सपोर्ट में सुबह 9 से रात 8 बजे तक की शिफ्ट है परन्तु पुरुष मजदूरों को उसके बाद भी रोक लेते हैं। इस प्रकार रात 8 बजे बाद रोके गये मजदूर 12 जनवरी को देर रात फैक्ट्री से छूटने पर मथुरा रोड़ पर वाहन की चपेट में आ गये। एक मजदूर की मृत्यु हो गई। ***नित्या एक्सपोर्ट (स्कोर्पियो एपरेल्स) कम्पनी ने म त मजदूर का नाम फैक्ट्री के दस्तावेजों से गायब कर दिया और लाश को पहचानने से इनकार कर दिया।*** पुलिस और श्रम विभाग के अधिकारियों ने अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाई।

"इधर नित्या एक्सपोर्ट के किसी मजदूर की एक कविता फैक्ट्री में घूम रही है :

सुन लो सजन
कुछ ऐसी सुनाता हूँ
नित्या का अपना कमाल
देश की शासन व्यवस्था को
ठेंगा दिखाये बेमिसाल।
वरकर बेचारे नाइट करें
लाइफ से अपनी, वो फाइट करें
वापस में जब वो सड़क पे मरें
तो कर दें रिकार्ड से
नौकरी हलाल।
पुलिस हमारी भी, क्या करे?
मुँह बन्द जानवर हैं अन्दर भरे
आँखें तरेर उन पे चमचे खड़े
ज़बान हिलते ही होगी बवाल।
लेबर कमिश्नर भी आये टपक
पूछा न कुछ, लिया रुपया लपक
रोते रहे दिल अन्दर फफक
लेकिन चलते रहे वो दलाल।
इनसान यदि यहाँ जाता है मर
ऐसी खबर कोई लिखता अगर
कविता बता के हँसें जानवर

मौत का भी नहीं है मलाल।
शक्ति है नारी में देवी समान
कहता दुशासन पकड़ने को कान
इज्जत परायी ना समझे नादान
बुद्धि है विपरित.... विनाशकाल।''

और, एस्कोर्ट्स महिमा

एस्कोर्ट्स मजदूर : ''फरीदाबाद में सैक्टर-13 स्थित फार्मट्रैक प्लान्ट में असेम्बली लाइन में दो शिफ्ट हैं और हीट ट्रीटमेन्ट तथा पेन्ट शॉप में तीन शिफ्ट। पेन्ट शॉप में 35 स्थाई मजदूर हैं, अधिकतर ए-शिफ्ट में हैं और बाकी बी—शिफ्ट में। सी-शिफ्ट में कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर ही रहते हैं। पेन्ट शॉप में 35 कैजुअल और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 190 वरकर हैं। एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक पेन्ट शॉप में 13-14% स्थाई मजदूर, 13-14% कैजुअल वरकर, और 72-74% ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर काम करते हैं।

'' एक ठेकेदार के जरिये रखे पेन्ट तैयार करने वाले वरकर सफाई भी करते हैं — एक शिफ्ट में 4 बार पोंचा लगाते हैं, पहले थिन्नर से और फिर पानी से। इन मजदूरों को 8 घण्टे के 90 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. कार्ड तथा गुड़गाँव के नम्बर वाली पी.एफ. स्लिप दी हैं। पेन्ट शॉप के बड़े ठेकेदार, जैन ग्लोबल से मजदूरों को भारी दिक्कतें हैं। आठ घण्टे के लिये स्प्रे पेन्ट करते 40 मजदूरों को 180 रुपये, पेन्ट के लिये लाइन पर माल चढाते व उतारते 40 मजदूरों में से 20 को 164 रुपये और 20 को 125 रुपये, सी-शिफ्ट में सी डी में काम करते 12 मजदूरों को 96 रुपये। जबकि, **एस्कोर्ट्स कम्पनी 8 घण्टे प्रति पेन्टर के 256** रुपये ठेकेदार को देती है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से।

'' जैन ग्लोबल ने फोटो सब मजदूरों से ली हैं पर ई.एस.आई. कार्ड आधों को ही दिये हैं और पी.एफ. में तो घोटाला नजर आता है। ठेकेदार कम्पनी का मैनेजर कहता है कि पी.एफ. गुजरात में जमा हो रहा है। मामूली गलती पर एक पेन्टर को 5 महीने पहले नौकरी से निकाल दिया परन्तु भविष्य निधि राशि निकालने का फार्म भर कर नहीं दे रहे। जैन ग्लोबल का मैनेजर कहता है कि फार्म भरने के लिये समय नहीं है, 4-5 बार ऐसा कह चुका है। रात की ड्युटी वालों ने पेन्ट कनवेयर सुबह 7) बजे बन्द की तो ठेकेदार कम्पनी का मैनेजर बोला कि 8 बजे तक चलाओ। मजदूरों द्वारा इनकार करने पर साहब ने 2-3 का गला पकड़ा। ऐसे नौकरी नहीं करनी कह कर 5 मजदूरों ने नौकरी छोड़ दी। यह दो महीने पहले की बात है और उन 5 मजदूरों के पी.एफ. राशि निकालने के फार्म भी जैन ग्लोबल नहीं भर रही — साहब कहता है कि तनखा दे दी वही बहुत है, फार्म नहीं भरेंगे।

''और, एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक में ***हरियाणा वेलफेयर फण्ड के नाम पर हर मजदूर की तनखा में से हर महीने ठेकेदार 80—90 रुपये काट लेते हैं।*** हरियाणा वेलफेयर फण्ड के नाम पर ही जी.ई. मोटर्स में प्रत्येक मजदूर की तनखा में से एक रुपया हर माह काटते हैं।

''ठेकेदार को पेन्टर की दिहाड़ी 256 रुपये देती एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट स्वयं भी पेन्टरों को कैजुअल वरकरों के तौर पर भर्ती करती है। इन कैजुअल पेन्टरों में आधों की दिहाड़ी 164 रुपये और आधों की 125 रुपये है। पेन्ट शॉप में स्थाई मजदूर की दिहाड़ी 600 रुपये। पेन्ट शॉप में एक समान काम करते मजदूरों की दिहाड़ी 96,125,164,180,600 रुपये हैं। एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक के अन्य विभागों में कैजुअलों में हैल्परों की दिहाड़ी 105 रुपये और फिटर, डीजल मैकेनिक, मशीनिस्ट आदि कारीगरों में कुछ की दिहाड़ी 125 रुपये तथा कुछ की 145 रुपये। सब विभागों में स्थाई मजदूरों की दिहाड़ी 600 रुपये के आसपास।

''कैन्टीन में कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को भारी दिक्कत होती है। ए और बी शिफ्ट में 3-3 लाइनें लगती हैं तथा एक पंक्ति में 100 से ऊपर लोग होते हैं। भोजन अवकाश आधे घण्टे का-खाना लेने में ही आधा घण्टा लग जाता है।''

बमों द्वारा सुरक्षा

मार्च 05 में अमरीका के टेक्सास प्रान्त में एक परमाणु बम लगभग फट गया था। यह बम जापान में हीरोशिमा नगर पर 1945 में गिराये एटम बम से सौ गुणा शक्तिशाली था। बाल-बाल टले इस महाविनाश के तथ्य को गुप्त रखा गया। बीस महीने बाद, फैक्ट्री में सुरक्षा के नियमों का उल्लंघन करने के आरोप में नवम्बर 06 में अमरीका सरकार ने परमाणु बम निर्माण करने वाली कम्पनी, बी डब्लू एक्स टेक्नोलोजीज पर 50 लाख रुपये का जुर्माना किया तब भयावह हालात की थोड़ी—सी जानकारी सामने आई है। परमाणु बमों के निर्माण वाली फैक्ट्री में काम करते तकनीकी वरकरों ने कार्य की खराब स्थितियों को लगभग हो गये विस्फोट के लिये जिम्मेदार ठहराया है। परमाणु बम बनाने वाली फैक्ट्री में प्रतिदिन 12 से 16 घण्टे कार्य करना अनिवार्य है, सप्ताह में 72-84 घण्टे एटम बम बनाने में खटना ! अधिक बुरी सूचना यह है कि कम्पनी ने 2007 के लिये परमाणु बमों के उत्पादन के लक्ष्य में 50 प्रतिशत की वृद्धि की है। (जानकारी फरवरी 07 की ''सोशलिस्ट स्टैन्डर्ड'' पत्रिका से, जिसने इसे

18 दिसम्बर 06 के ''दि नेशन'' से लिया। पता : Socialist Standrad, 52 Clapham High Street, London SW4 7UN, Great Britain)

रूस में चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर द्वारा मचाई विनाशलीला को अधिक समय नहीं हुआ है। भारत सरकार के एटम बम बनाने वाले कारखानों और परमाणु बिजलीघरों में कार्यस्थितियाँ तथा सुरक्षा के उपाय अमरीका सरकार, रूस सरकार के ऐसे संस्थानों से बदतर ही हैं।

बन्दी वाणी (12)

अमरीका सरकार ने ''अपने'' बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अमरीका में कैलिफोर्निया प्रान्त की एक जेल में बन्द गैरी हॉलफोर्ड के और पत्र इधर हमें मिले हैं।

सामान्य तौर पर प्रत्येक को अनेक खाकों-खानों-आल्ओं में रखे जाने से मैं बहुत विस्मित हूँ। कभी-कभार ही कोई आपके साथ समान के तौर पर व्यवहार करता-करती है। आमतौर पर मनमर्जी से कोई भिन्नता ढूँढ ली जाती है और उसी के अनुसार व्यक्ति को परिभाषित किया जाता है। खानों-खाकों-आल्ओं की सूची अनन्त है : आयु , लिंग, चमड़ी का रंग, धर्म-सम्प्रदाय, राष्ट्रीयता, राजनीतिक झुकाव, कद, वजन, बालों का रंग.....

व्यक्ति को खानों-खाकों-आल्ओं में रखने का व्यक्ति-विशेष से कुछ लेना-देना नहीं होता। बल्कि, दमन करने अथवा डराने-धमकाने के लिये किसी मनमर्जी की भिन्नता का इस्तेमाल कर व्यक्ति को खानों–खाकों-आल्ओं में रखा जाता है। अदृश्य शक्तियाँ जो कि अधिकतर ''स्वतन्त्र लोगों'' के ध्यान में नहीं आती, उन अदृश्य शक्तियों द्वारा पूरे दिन और प्रतिदिन ऐसा किया जाना एक कैदी के नाते मैं देखता हूँ। अमरीका सरकार के जेल खानों में रंगभेद छाया हुआ है और कट्टर ईसाई तथा मुसलमान तो गिरोहों वाली मनःस्थिति में पहुँच गये हैं। अगर आप मूसा–ईसा–मोहम्मद वाले धर्मों को स्वीकार नहीं करते तो आप को साथी बन्दी व जेल प्रशासन ही नहीं बल्कि धर्म अधिकारी भी अचम्भित करने वाली हेय दृष्टि से देखते हैं। ऐसे में जेल में निवास स्थान ढूँढना असम्भव–सा हो जाता है। प्रत्येक जायज माँग–प्रयास में अड़ँगा डाला जाता है, देरी की जाती है, अनदेखा किया जाता है, इनकार किया जाता है। इस सब के खिलाफ अमरीका सरकार के न्यायालयों में मामले दायर करने वाले कैदियों को अदालतें शत्रु के तौर पर लेती हैं। हालात भद्दे–बहूदे हैं....(गैरी को अँग्रेजी में इस पते पर लिख सकते हैं :

Gary Hallford, T-58516, C.S.P.-Solano,
17-211L, P.O.Box 4000, Vacaville, CA 95696-4000, U.S.A.

भाषा की राजनीति

उपमहाद्वीप के छुट-पुट क्षेत्रों में समुदायों का टूटना मिश्र-इराक-चीन में ऐसा होने जितना ही प्राचीन है। समुदायों की टूटन मानवों में ऊँच-नीच लाई। प्रारम्भ में ऊँच-नीच स्वामी और दास के रूप में थी। स्वामियों के आचार-विचार को भारतीय सभ्यता कहा जाता है, भारतीय सभ्यता का आदि-स्रोत कहा जाता है। इसी प्रकार मिश्र-इराक-चीन-यूनान-रोम में स्वामियों के आचार-विचार को चीनी सभ्यता, यूनानी सभ्यता, रोमन सभ्यता आदि कहा जाता है। यूनान व रोम के स्वामियों के आचार-विचार को यूरोपीय अथवा पश्चिमी सभ्यता, उसके आदि-स्रोत भी कहा जाता है।

मानवों के बीच की मामूली-मामूली भिन्नतायें समुदाय में बहुआयामी सम्बन्धों की सुगन्ध लिये होती हैं। ऊँच-नीच वाले सामाजिक गठन में मामूली भेद को बढा-चढा कर प्रस्तुत किया जाता है और थोड़े–से फर्क को बढाने के लिये अनेकानेक प्रपंच किये जाते हैं। स्वामियों ने दासों की भाषाओं से अलग भाषा अपने लिये गढी। स्वामियों की उपमहाद्वीप में प्रमुख भाषा संस्कृत थी और दासों के संस्कृत सीखने-बोलने पर कठोर-क्रूर पाबन्दियाँ थी।

आज के और निकट आयें तो उपमहाद्वीप में बेगार-प्रथा पर पलते तब के ने रैयत की बोली-भाषाओं से अलग फारसी को अपनी भाषा बनाया। और, मण्डी-मुद्रा का फैलाव उपमहाद्वीप में अँग्रेजी लाया...

लूट-खसूट में पुराने-नये ''उपमहाद्वीप वाले'' हिस्सेदारों के प्रमुख हिस्सों ने अपनी हिस्सेदारी बढाने के लिये अँग्रेजी सीखने के संग-संग उर्दू-हिन्दुस्तानी-हिन्दी के झण्डे लहराये। सफलता हासिल करने पर बनी पाकिस्तान सरकार ने उर्दू को राजभाषा घोषित किया जबकि क्षेत्र में अधिकतर लोग ''बांग्ला'', ''पँजाबी'', ''सिरियाकी'', ''सिन्धी'', ''पश्तो'' आदि भाषायें बोलते थे। भारत सरकार ने हिन्दी को राजभाषा घोषित किया। जिसे हिन्दी क्षेत्र कहा जाता है उस की ही बात करें तो वहाँ हिन्दी की बजाय व्यापक स्तर पर तो अंगिका, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज,

बुन्देली, मेवाड़ी, मारवाड़ी, बागड़ी, मेवाती, गढवाली, कुमाउँनी, मगही, सन्थाली, निमाड़ी, मालवी आदि-आदि भाषा समूह ही पाये जाते थे और अभी भी उल्लेखनीय हैं।

जन सामान्य की भाषा-बोलियों को असभ्य/अपभ्रंश/गँवार और उर्दू-हिन्दी को तहजीब की भाषा, शुद्ध भाषा कहा गया। लेकिन पाकिस्तान सरकार की उर्दू और भारत सरकार की हिन्दी का आगमन सौ वर्ष देरी से हुआ। इसलिये पाकिस्तान सरकार-भारत सरकार ने राजकाज के लिये अँग्रेजी को ही बनाये रखा तथा बढाया है। इसका एक कारण ऊँच-नीच जनित काँइयेपन में दीर्घ अनुभव भी लगता है — उर्दू/हिन्दी को मजदूरों-किसानों-दस्तकारों से पर्याप्त दूरी बनाने वाली नहीं पा कर उपमहाद्वीप में साहबों ने अँग्रेजी को अपना हथियार बनाये रखा है। और, मण्डी-मुद्रा के व्यापक प्रसार के दृष्टिगत साहब लोग अब तो खुलेआम कहते हैं कि मजदूर-मेहनतकश कामचलाऊ अँग्रेजी सीखें.... भारत सरकार के ज्ञान आयोग, यानि, नोलेज कमीशन ने सब विद्यालयों में पहली कक्षा से अँग्रेजी पढाने को कहा है।

ऊपर हम ने पँजाबी, सिन्धी आदि को उद्धरण चिन्हों में रखा है। यह इसलिये कि हिन्दी की ही तरह कई भाषाओं को छिपा कर-दबा कर सरकारी पँजाबी, मराठी, कन्नड, तमिल, उड़िया आदि की स्टैन्डर्ड भाषाओं के तौर पर रचना की गई है। और, कई प्रकार की डोगरी, काश्मीरी, लद्दाखी भाषाओं वाले क्षेत्र की राजभाषा उर्दू घोषित करना भाषा की राजनीति के टेढे पेंचों की एक अन्य झलक मात्र है।

भाषा की राजनीति इस उपमहाद्वीप की विशेषता नहीं है। अँग्रेजी जहाँ की भाषा कही जाती है वहाँ आइरिश, वैल्श, स्कॉटिश आदि भाषाओं का दमन किया गया। हालाँकि इंग्लैण्ड के राजा जर्मन भाषा बोलने वाले थे, मण्डी-मुद्रा वाली ऊँच-नीच की जरूरतों ने ब्रिटेन में अँग्रेजी भाषा को गढा व स्थापित किया। जिसे यहाँ उपमहाद्वीप में अँग्रेजी कहा जाता है उसकी रचना व पालन-पोषण ऑक्सफोर्ड-कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में हुआ है और यह ब्रिटेन में साहबों की भाषा है। इसी प्रकार जिसे फ्राँसिसी भाषा कहा जाता है उसकी रचना हुई है। अनेक भाषाओं का दमन कर मण्डी वाली ऊँच-नीच की जरूरत के अनुरूप इतालवी भाषा की रचना व स्थापना को इस सन्दर्भ में एक प्रतिनिधि उदाहरण के तौर पर ले सकते हैं।

इस उपमहाद्वीप की ही तरह अफ्रीकी महाद्वीप में अँग्रेजी-फ्राँसिसी की और दक्षिण अमरीकी महाद्वीप में स्पेनी-पुर्तगाली भाषाओं की राजनीति है।

ऊँच-नीच वाले समाज में, बँटे हुये समाज में भाषा को आदान-प्रदान का माध्यम मानना नादानी है। अँग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, तेलुगु, मलयालम, असमी, सिन्धी, पश्तो आदि भाषायें उपमहाद्वीप में मजदूरों-मेहनतकशों के खिलाफ पहचान की राजनीति के एक औजार के तौर पर भी काम कर रही हैं। मण्डी हमें इस-उस भाषा को सीखने को मजबूर कर रही है। इसे एक मजबूरी के तौर पर लेना ही बनता है। यह हमारी मजबूरी है कि हम यह सब हिन्दी में कह रहे हैं।

सहकर्मियों–पड़ोसियों–सहयात्रियों के साथ प्रेम–आदर के रिश्ते बनाना वर्तमान व्यवस्था से पार पाने के लिये प्राथमिक आवश्यकताओं में है।

कुछ छोटी-छोटी बातें

कई तरह की पेट की बीमारियों, विभिन्न प्रकार के उदर रोगों की भरमार है। ''पापी पेट'' का जिक्र और बहुत कुछ को व्यक्त करने के लिये किया जाता है परन्तु यहाँ हम स्वयं को उदर रोगों तक ही सीमित रखेंगे। व्यापक और सामान्य बन चुकी पेट की बीमारियों के उपचार के लिये किन्हीं गोलियों, घोलों, व्यायामों, प्रार्थनाओं-प्रवचनों का भी यहाँ जिक्र नहीं होगा हालाँकि पेट दर्द से राहत-छुटकारे के लिये इनका बहुत-ही ज्यादा प्रयोग हो रहा है। ''मर्ज बढता गया ज्यों-ज्यों दवा की'' का सन्दर्भ अन्य था परन्तु पेट की बीमारियों पर यह अक्षरशः लागू होता है। ऐसे में आइये उदर रोगों को कुछ हट कर देखने का प्रयास करें।

— भोजन का पेट से सीधा-सरल-सहज रिश्ता है। तो, टेढापन कहाँ-कहाँ से उपजता है ?

● भोजन का अभाव। भोजन खरीदना पड़ता है और पैसे नहीं हैं तो भूखे रहो। दुनियाँ में ऐसे लोगों की सँख्या बढती जा रही है जिनके पास पैसे नहीं हैं, कम पैसे हैं। पर्याप्त पौष्टिक भोजन का नहीं मिलना उदर रोगों का, इनके बढने का एक बड़ा कारण है।

● जल और मछली जैसा ही पेट और पानी का रिश्ता है। कल-कारखानों का विस्तार, नगरों का बढना, कृषि में रसायनों का प्रयोग सम्पूर्ण पृथ्वी पर जल के प्रदूषण को बढा रहा है। संसार में प्रदूषित पानी पीने वाले मनुष्य तीव्र गति से बढ रहे हैं। दुनियाँ में आज शायद ही कोई हो जो प्रदूषित जल पीने से बचा है। जल-जनित पेट की बीमारियों ने महामारी का रूप ले लिया है।

●निश्चित समय पर भोजन। आधे घण्टे से कम समय में निगलना। खानपान निर्धारित अन्तराल पर। भूख-प्यास लगी होना अथवा नहीं लगी होना का बेमानी होते जाना। विश्व-भर से इच्छा पर भोजन का लोप-विलोप हो रहा है। फैक्ट्री-दफ्तर-स्कूल द्वारा शौच का समय फिक्स! विद्यालय का एक अर्थ बचपन में ही पेट के रोगों के बीज बोने वाला स्थल भी है। फैक्ट्री-दफ्तर-स्कूल का विस्तार, समय-सारणी उर्फ टाइम टेबल की बढती जकड़ उदर रोगों को बढाना लिये है।

● नींद का अभाव। रात की नींद का अभाव। शिफ्टों में ड्युटी और शिफ्ट परिवर्तन के संग भोजन-शौच का समय बदलना। कार्यस्थल पर लगातार खड़े रहना अथवा लगातार बैठे रहना। उत्पादन व वितरण का अधिकाधिक विश्वव्यापी आधार पर होना दिन और रात के भेद मिटा कर भोजन-पाचन के हमारे जैविक वृत को तहस-नहस कर रहा है। इसलिये रात को जागना थोपने वाली बिजली को पेट की बीमारियों की एक जननी कह सकते हैं। और, इलेक्ट्रोनिक्स-कम्प्युटर-सैटेलाइट उदर रोगों के रक्तबीज हैं, पौराणिक रक्तबीज के क्लोन हैं।

— तन और मन का निकट का रिश्ता है। और, आज जैसे समाज में निकट जन का प्रिय जन होना नहीं रहा है वैसे ही मन में तन के प्रति कड़वाहट बढ रही है। मन द्वारा तन को हाँकना, मन द्वारा मन को मारना, तन द्वारा मन को नकारना हर व्यक्ति की नियति-सी बन गये हैं। मन की पीड़ा पेट को पेट नहीं रहने देती, मन की पीड़ा उदर रोगों की एक पूरी जमात लिये है। पैसे वाले भी मन की पीड़ा जनित पेट की बीमारियों से मुक्त नहीं हैं। संसार में सर्वत्र व सार्विक हैं मन से जुड़े उदर रोगः

● खुशी का, मस्ती का अकाल पूरी पाचन-क्रिया को बिगाड़ने के लिये काफी है। पूरी दुनियाँ में भड़ास निकालना खुशी-मस्ती का स्थान ले रहा है। दिखावटी खुशी-मस्ती जटिल उदर रोग उत्पन्न करती है।

● वास्तविक प्रेम और आदर को दिखावटी प्रेम व आदर द्वारा प्रतिस्थापित करना। कदम-कदम पर अनादर, अपमान का सामान्य बात बनना। ऐसे में गुस्से का हर व्यक्ति में हर समय उपजना और सामान्यतः गुस्से को दबाना-छिपाना, गुस्से को पी जाना तथा जब-तब गुस्से का विस्फोट पेट के लिये बमों की श्रृंखला समान है।

● इच्छाओं व अनिच्छाओं के अनन्त दमन को वर्तमान की एक चारित्रिकता कह सकते हैं। तनाव हर जगह छाया है और तनाव से भूख ही नहीं लगना अथवा इसके विपरीत ज्यादा खा जाना वाली स्थितियाँ बनती हैं — उदर रोगों के लिये यह दोनों ही उपजाऊ जमीन प्रदत करती हैं।

● अवसाद उर्फ डिप्रेशन ...पेट बेचारा क्या करे?

क्या खाते हैं? कैसे खाते हैं? किसके साथ खाते हैं? इन प्रश्नों का भोजन की पौष्टिकता, शरीर की आवश्यकता, मन की इच्छा के साथ रिश्ते कम ही बचे हैं। बल्कि, समाज में स्तर दर्शाते डण्डे-डँके इन्हें अधिकाधिक लोगों पर थोप रहे हैं। और, औपचारिकता का बोलबाला पेट का दिवाला निकाल देता है....

रोग में निजी पीड़ा राहत-उपचार को सर्वोपरि बना कर सामान्यतः रोग की जड़ों को ओझल करती है। और, रोगों की जड़ों को छिपाना स्वयं में एक फलता-फूलता व्यवसाय है। ऐसे में बीमारियों की सम्भावनायें कम करने वाले परहेज महत्वपूर्ण हैं . ... रोगों की जड़ें छिपाने-गहरी करने के लिये नहीं बल्कि रोगों की जड़ों को उखाड़ने के लिये उन्हें उजागर करने के वास्ते। (जारी)

फैक्ट्री रिपोर्ट

जे बी एम मजदूर : ''प्लॉट 133 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर 10 प्रतिशत से भी कम हैं, 90 प्रतिशत से ज्यादा वरकरों को तीन ठेकेदारों के जरिये रखते हैं। जो 50-60 स्थाई मजदूर हैं उनकी 8½-8½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं। फाइलिंग, स्पॉट वैल्डिंग, सफाई, पैकिंग विभागों में 200 मजदूर एक शिफ्ट में काम करते हैं — सुबह 7½ से रात 9 बजे, रात के 10 और 1 भी बज जाते हैं। प्रेस शॉप के 300 और एक्सल विभाग के 150 वरकर 2 शिफ्टों में काम करते हैं — सुबह 7½ से रात 7 बजे तक और रात 8 बजे से अगले रोज सुबह 6 बजे तक। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। जे बी एम में आयशर, मारुति, हीरो होण्डा का काम होता है।''

संगीता इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''प्लॉट 55 इन्डस्ट्रीयल एरिया फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2150 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा में 4-5 दिहाड़ियों की गड़बड़ी कर देते हैं। कह देते हैं कि तनखा कम्पनी की सैक्टर-24 वाली फैक्ट्री से बन कर आती है, हम क्या करें। धमका भी देते हैं पर जो बार-बार पूछते उन्हें पैसे दे देते हैं।''

वीनस मैटल इन्डस्ट्रीज वरकर : ''प्लॉट 262 सैक्टर-24 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में काम करते 600 मजदूरों में 10 प्रतिशत स्थाई, 10 प्रतिशत कैजुअल और 80 प्रतिशत को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है। प्रेस शॉप, पेन्ट शॉप और टूल रूम में दो शिफ्ट हैं — ओवर टाइम बहुत कम। वैल्डिंग, असेम्बली और पैकिंग विभागों में एक शिफ्ट है — सुबह 8½ से रात 9 बजे तक। एक कप चाय तक नहीं देते 12½ घण्टे में। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में जगह बहुत-ही कम पड़ती है। पेन्ट शॉप तक में एग्जास्ट फैन नहीं है — पँखा लगाने के लिये जगह ही नहीं है। पेन्ट शॉप की गर्मी प्रेस शॉप में भी आती है और गर्मियों में तो हालत बहुत खराब हो जाती है। कैन्टीन नहीं है — भोजन करने के लिये बिलकुल जगह नहीं है। वीनस मैटल में मारुति, हीरो होण्डा आदि का काम होता है।''

एस्कोर्ट्स वरकर : ''स्थाई मजदूरों को कम्पनी ने दिवाली पर बोनस दे दिया लेकिन कैजुअल वरकरों को आधी फरवरी बीत जाने पर भी नहीं दिया है। छोटे-से नुक्स, थोड़े-से नुकसान पर कैजुअल वरकर को फैक्ट्री से निकाल देते हैं। और .... और कैजुअल वरकर के तौर पर भर्ती के लिये कम्पनी अधिकारी 500 रुपये रिश्वत लेते हैं।''

कारखाना और थाणा

एम. जी. एक्सपोर्ट मजदूर : ''प्लॉट 108 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में स्टील व अल्युमिनियम का रसोई का तथा सजावटी सामान निर्यात के लिये बनता है।

''फैक्ट्री में 67 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन में 20 स्टाफ के हैं तथा बाकी स्थाई मजदूर। इस समय कम हैं पर फिर भी 235 कैजुअल वरकर हैं। दो-ढाई साल से लगातार काम कर रहे भी कैजुअल हैं और किसी भी कैजुअल वरकर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।

''एम. जी. एक्सपोर्ट में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर .... पर एक दिन छोड़ कर, यानी, तीसरे दिन दिन-रात काम करना पड़ता है — सुबह 8 बजे आरम्भ हुई ड्युटी दूसरे दिन साँय 4½ बजे खत्म होती है। लगातार 36½ घण्टे काम करना पड़ता है। ड्युटी के समय के बारे में कम्पनी स्थाई मजदूरों और कैजुअल वरकरों में कोई फर्क नहीं करती। और, स्थाई हों चाहे कैजुअल, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।

'' रविवार को फैक्ट्री बन्द दिखाते हैं पर सुबह 7 से साँय 3½ बजे तक फैक्ट्री में उत्पादन होता है। रविवार को मजदूरों की साइकिलें फैक्ट्री के अन्दर रखवाते हैं.... एम. जी. एक्सपोर्ट कम्पनी सैक्टर-24 में ही बन्द दिखा रखी तीन फैक्ट्रियों में रात को काम करवाती है। प्लॉट 108 से प्लॉट 305, 329,.... में रात को मजदूर भेजे जाते हैं। उत्पादन छिपाने के लिये असली-नकली कागजात की भरमार रहती है.... निर्यात के लिये माल पहले यहाँ फरीदाबाद में सैक्टर-59 भेजा जाता था, अब उत्तर प्रदेश में दादरी भेजते हैं।

''एम. जी. एक्सपोर्ट में हैल्पर की तनखा 1900 रुपये और ऑपरेटर की 2300 रुपये है। वेतन देते समय मजदूरों और स्टाफ वालों से कच्चे कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं। तनखा देने के दो-तीन दिन बाद पक्के रजिस्टर में दस्तखत करवाते हैं जहाँ 2485 रुपये आदि हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दर्ज रहता है। ओवर टाइम का विवरण कच्चे कागजों में ही रहता है।

''इधर 15 फरवरी को एम.जी. एक्सपोर्ट का चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर दोपहर 1 से साँय 4 बजे तक फैक्ट्री के दौरे पर था। इस दौरान इन साहब ने एक पावर प्रेस ऑपरेटर को मामूली-सी गलती पर पीटना शुरू कर दिया। सब मजदूरों के सामने बड़े साहब के थप्पड़-मुक्के-लात..... 15 फरवरी को सुबह 8 बजे काम शुरू करने वालों को 16 फरवरी साँय 4½ तक काम करना था। प्रेस ऑपरेटर 15 फरवरी को ही रात 8 बजे फैक्ट्री से चले गये। फैक्ट्री में 12 पावर प्रेस हैं और यह रात 8 से 9½ बजे तक बन्द रही। मैनेजमेन्ट दूसरी शिफ्ट के प्रेस ऑपरेटरों को कमरों से बुला कर लाई — 15 फरवरी की रात को 3 पावर प्रेस ही चली।

''16 फरवरी को सुबह 8 बजे प्रेस ऑपरेटर एम.जी. एक्सपोर्ट फैक्ट्री में जाने की बजाय पास के चौक पर एकत्र हुये। हैड फौरमैन वहाँ गया और 9½ बजे मजदूरों को फैक्ट्री ले आया। प्रेस ऑपरेटर काम में लग गये। तीन घण्टे बाद कम्पनी ने फैक्ट्री में पुलिस बुलाई। दो पुलिसवाले प्रेस शॉप से 4 मजदूरों को मुजेसर थाने ले गये। थाने से दो मजदूरों को वापस फैक्ट्री भेज दिया और दो को कहा कि तुम पर चोरी का आरोप है.... जो दो पुलिसवाले फैक्ट्री आये थे वे खुद ही 12 कटोरे साथ ले कर थाने गये थे ! जिन दो मजदूरों को थाने में रोका था उन में एक वह था जिसकी बड़े साहब ने पिटाई की थी और दूसरा उसका दोस्त। मुजेसर थाने में डरा-धमका कर पुलिस ने शाम तक उन मजदूरों से इस्तीफे लिखवा कर कम्पनी से उनका हिसाब करवाया.... पुलिसवालों ने हिसाब में से भी 500-500 रुपये उन मजदूरों से ले लिये।''

पत्र

✶ इन हवस की मंडियों में देखिये चारों तरफ
लड़खड़ाता क्या नशे में चल रहा है आदमी
— चाँद ''शेरी'', कोटा (राजस्थान)

✶ ....पति डॉ. मानव ने गृह जनपद वाराणसी रहने के दौरान अपनी पत्र-पत्रिकाओं में ''पोलियो ड्रॉप'' के विरुद्ध प्रभावी प्रकाशन किया था। उन पे बैन लगा। लम्बी सी.आई.डी. जाँच उपरान्त पिछले वर्ष केस फाइल हुई। अभी 5 माह पूर्व उनकी मेडिकल प्रैक्टिस प्रतिबंधित की गई। इस देश की व्यवस्था ही फासिज्म +शोषण की पर्याय बन गई है। ....पारिवारिक आय पर ग्रहण लगने से अब ''ज्योति'' को जलाये रखना लगता है असंभव होगा। यतीम बच्चों के कल्याण के इस उपक्रम में बाहरी सज्जनों का सहयोग तो सहायक होता है.... फिलहाल तो जैसे-तैसे कार्य जारी रखी हूँ।... —नीलम, मेरठ (उ.प्र.)

✶ नदी थी, जल था
जल सूख गया
सूखी हुई नदी को रेत कहना
या सूखी रेत को नदी कहना
किसे नसीब कहना? —अक्षय, मुम्बई

✶ .... मैं स्वयं 40 वर्ष तक मजदूर रह कर भारतीय जीवन बीमा निगम से 6 वर्ष पूर्व सेवानिवृत हुआ था।..... मेरा क्षेत्र है ''भाषा''। मेरा मत है और अनुभव है कि भारत में अँग्रेजी देश के गरीबों, मजदूरों व सामान्य जनता के शोषण व अन्याय का बहुत बड़ा हथियार है।.... — जगदीश नारायण, वाराणसी

✶ कहने को तो हमारे देश के प्रत्येक प्राणी को समान अधिकार प्राप्त हैं। कानून की निगाह में सब बराबर हैं, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं— पर ये सब किताबी बातें हैं।....

समाज में मजदूर वर्ग के साथ-साथ मध्य वर्ग का भी शोषण हो रहा है। जगह-जगह पर बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ जहाँ अपने डिपार्टमेन्टल स्टोर खोल कर गरीब दुकानदारों को उजाड़ने पर तुली हुई हैं वहीं पर प्रत्येक कम्पनी में मजदूरों का शोषण हो रहा है। कई जगह पर मजदूरों की हाजरी नहीं लगाई जाती। बस दो नम्बर में ही वरकर को रख कर जब चाहें छुट्टी कर देते हैं...

पंजाब सरकार ने भी बड़ी कम्पनियों को रियायतें देने के लिये कई गाँवों की सैंकड़ों एकड़ जमीन सस्ते दामों पर एक्वायर कर ली है जिसे छुड़वाने के लिये सैंकड़ों किसान संघर्ष कर रहे हैं...

इसी तरह से कोलकाता में सिंगुर स्थान पर जबरी जमीन लेने की कोशिशें जारी हैं।....

ध्यान योग्य बात यह भी है कि मध्य वर्गीय किसान, दुकानदार अब मजदूर बन रहे हैं..... कुछ लोगों ने इस नये घट रहे घटनाक्रम से आँखें बन्द की हुई हैं, बिलकुल कबूतर की तरह, पर बिल्ली.... — जगदीश, मानसा (पंजाब)

✶ किस से करें शिकायत, हम क्या किस से बोलें
मन में जो दर्द छिपे हैं, किस से खोलें ? — रामतीर्थ, दिल्ली

✶ जल संस्थान झाँसी, उ.प्र. में श्रम नियमों का पालन नहीं किया जाता है जबकि उपश्रम आयुक्त का कार्यालय भी झाँसी में ही है। सब से बुरी दशा पम्प चालकों की है। निरन्तर 8-12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी ली जाती है — लंच ब्रेक, ओवर टाइम, साप्ताहिक अवकाश नहीं दिये जाते। 40-45 दिन कार्य करने पर एक माह का वेतन दिया जाता है। यह हाल तो नियमित पम्प चालकों का है। पम्प संचालन के लिये जिन लोगों को ठेकेदार के जरिये रखा है उन्हें तो रोज 16 घण्टे ड्युटी करनी पड़ती है.... वेतन भी अधिकतम 1000 रुपये मासिक मिलता है, वह भी 6-6 माह बाद....
— कुछ पम्प चालक, कालपी

✶ श्रम के सीमेंट, पसीने के जल ने
खड़े किये राजप्रासाद, भवन, अट्टालिकायें सलोने।
—रामचन्द्र ''अमरेश'', खरगोन (म.प्र.)

✶ ...आज का बचपन कैसा बनाया जा रहा है। किशोर, तरुण सभी को सुबह का सूरज देखने से गुरेज हो गया है। निशाचरी प्रवृति बढ रही है।..एक महीने में मुम्बई में 80 महिलायें दुर्घटना, हत्या और साजिश से मारी गई हैं।...— यदुनाथ, मुम्बई

✶ खड़े हर दिशा हत्यारे, किसको करें सलाम
सच की कर रहे हैं हत्या, झूठ के गुलाम।
— जगन्नाथ ''विश्व'', नागदा (म.प्र.)

✶ ... 1 फरवरी 2007 को मुम्बई महानगरपालिका का चुनाव... सभी राजनैतिक पार्टियों के उम्मीदवार एक बार फिर जनता को

वही पुराने आश्वासन दे रहे हैं (....) कि वे नल, संडास, पानी, गटर इत्यादि का काम करेंगे। परन्तु चुनाव जीत जाने के बाद इन सब किये वादों को वे बाजू में रख देते हैं। टैक्स के रूप में जनता द्वारा माचिस से ले कर बस भाड़े पर लिये गये पैसे से ही सरकार और म्युनिसीपालिटी का बजट बनता है.....

26 जुलाई 2005 की बाढ और जान-माल के नुकसान के लिये मुम्बई महानगरपालिका ही जिम्मेदार है। बाढ के समय लोगों ने एक-दूसरे की मदद की जबकि सभी सरकारी संस्थायें पूरी तरह ठप्प पड़ गई थी। बाढ के बाद सरकार तथा राजनैतिक दलों ने जनता पर मेहरबानी समझ कर छुट-पुट राहत कार्य किया जिसमें बड़े पैमाने पर घोटाला हुआ।...

इसके विपरीत वासीनाका में इस्लामपुरा, मुकुंदनगर, इंदिरानगर के कुछ लोगों ने साथ आ कर खुद के बल पर राहत कार्य चलाया।.... लोगों का सक्रिय सहभाग होने के कारण इस राहत कार्य में भ्रष्टाचार का नामोनिशान नहीं था।

..... राज्यकर्ताओं की जन-विरोधी नीतियों के दुष्परिणाम हम हमारी जिंदगी के हर पहलू में भुगत रहे हैं।.... वासीनाका इलाके में बिजली, तेल, केमिकल्स के कारखाने हैं। इन में केलिको कम्पनी पिछले 22 साल से बन्द पड़ी है मगर मजदूरों को अभी तक उनकी सर्विस का हिसाब नहीं मिला है। एच.पी.सी.एल., बी.पी.सी. एल., टाटा पावर जैसी कम्पनियों में कायम काम होते हुये भी सालों-साल हजारों मजदूरों से ठेकेदारी पद्धति में काम लिया जाता है।....

.... हम रहिवासियों ने अपनी जिंदगी की कमाई डाल कर खाड़ी जैसी जमीनों को पाट कर अपने घर बनाये हैं। लेकिन महाराष्ट्र सरकार बद से बदतर आवास नीतियाँ बना कर हमें शहर से भगाने पर तुली है।

..... अब जो ''नई आवास नीति'' बनी है उसमें सरकार और उद्योगपतियों का इरादा साफ जाहिर है कि वे मेहनत करने वालों को मुम्बई से बाहर भगाना चाहते हैं।..... मुम्बई शहर से बाहर 30 से 50 किलोमीटर दूर.....

शहर से दूर हटाये जाने के कारण हमारा काम पर आने-जाने का खर्च बड़े पैमाने पर बढेगा। साथ ही आने-जाने में ज्यादा समय भी लगेगा। घटते पगार व बढती महँगाई के कारण हमारे परिवार और भी तबाह हो जायेंगे।.....

इसी तरह पूरे देश में लोगों की जमीनें हड़प ली जा रही हैं। शहरों में ''नई आवास नीति'' के नाम से तो गाँवों में ''विशेष आर्थिक क्षेत्र'' के नाम से उद्योगपतियों द्वारा लाखों किसानों की उपजाऊ जमीनें छीनी जा रही हैं।.....– शहीद दलवी-खान यादगार केन्द्र, सहयाद्री चाल, इंदिरानगर, वासीनाका, चेम्बूर, मुम्बई-400074

✶ उदासी के मंडराये बादल, चिन्ता की बौछार
श्रमिक के घर ना ठहरी समृद्धि की बयार।
दिल में धधके आग, आँखों में बसी है प्यास
बार-बार के शोषण से श्रमिक हुआ उदास।

–नन्दलालराम भारती, इन्दौर (म.प्र.)

✶ दिल्ली के ओखला क्षेत्र में बसी हुई संजय कॉलोनी में कई महीनों से सुलभ शौचालय बन्द पड़ा है। वहाँ की महिलायें शौच के लिये दिन में या रात में जब जंगल जाती हैं तो उनके साथ बड़ी घिनौनी हरकतें होती हैं।.... महिलाओं ने अगस्त महीने में एक मीटिंग की... संजय कॉलोनी निवासी संघर्ष समिति से... केन्द्रीय सचिवालय, दिल्ली नगर पालिका और स्थानीय निगम पार्षद व विधायक को भी माँग पत्र दिया गया..... कहीं से भी कोई जवाब नहीं मिला।

फिर से महिलाओं की एक मीटिंग.... 20-25 पुरुष और महिलायें बदरपुर क्षेत्र के विधायक रामवीर सिंह बिधुड़ी के पास गये। पर उस नेता ने उन सभी पुरुष और महिलाओं को यह कह कर भगा दिया कि जहाँ जाना है, जिसके पास जाना है तुम जाओ, मैं इसमें कुछ नहीं करूँगा। साथ ही साथ जो शौचालय को खुलवाने के लिये माँग पत्र ले कर हम लोग वहाँ गये थे उसको भी उस नेता ने फाड़ कर फेंक दिया.

..... ये कैसी व्यवस्था है जिसमें माँ-बेटियों को शौच के लिये डर-डर कर जाना पड़ता है?

– मीरा का ''मजदूर एकता लहर'' के 16-28 फरवरी 07 अंक में पत्र (श्री चन्द्रभान, ई-392 संजय कॉलोनी, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020)

✶ तुम क्षितिज को
छूने का प्रयास भर करो
तुम चलोगे तो
कारवाँ स्वयम् बन जायेगा।

– नरेन्द्र नाथ, ग्वालियर (म.प्र.)

मथ-मथ मन्थन

(गुड़गाँव से एक मित्र ने ''अक्षर पर्व'' पत्रिका को भेजे श्री किशन लाल, ग्राम-पोस्ट देमार, जिला धमतरी, छत्तीसगढ के पत्र की प्रति हमें भेजी है जिसके अंश हम यहाँ दे रहे हैं।)

.... मैं बेहद मामूली-सा पाठक हूँ। तीस-पैंतीस रुपये की मजदूरी में परिवार चलाता हूँ। यह मजदूरी भी रोज-रोज नहीं मिलती। अतः पत्र-पत्रिकायें खरीद कर नहीं पढ पाता। माँग कर पढता हूँ।.........

आप किस तरह के जन आंदोलनों में किस तरह के

साहित्यकारों की सहभागिता चाहते हैं ? यहाँ तरह-तरह के साहित्यकार हैं — वामपंथी विचारधारा वाले भी, दक्षिणपंथी विचारधारा वाले भी, तीसरे विचारहीन साहित्यकार भी जिनका एकमात्र वाद या पंथ है सत्ता के करीब रह कर उसका भरपूर फायदा उठाना। आज वामपंथी विचारधारा वाले साहित्यकार आम आदमी की बात भिलाई होटल के बहुद्देशीय सभागार में करते हैं। पानी की तरह व्हिसकी का दौर चलता है बीच-बीच में। ये साहित्यकार जब जन आंदोलन से जुड़ेंगे तब क्या हश्र होगा आप समझ सकते हैं। दक्षिणपंथी साहित्यकार जन आंदोलन से जुड़ेंगे तो देश की कोई भी मस्जिद सुरक्षित नहीं रहेगी।....

जब लोग दो वक्त की रोटी के मोहताज हैं। रहने के लिये घर न हों। रेल पटरी के किनारे सुअरों के साथ रहने के लिये अभिशप्त हों। गटर का पानी पीने को मजबूर हों। गाँव के गाँव पलायन कर रहे हों। ऐसी स्थिति में शहर-सौंदर्यीकरण की बात बेमानी है। ..

.....जब आरक्षण है तब तो अनुसूचित जाति, जनजाति तथा पिछड़े वर्ग की यह स्थिति है। यदि आरक्षण नहीं होता तब क्या स्थिति होती। मैं यहाँ दूसरी बात कहना चाहता हूँ।.... ...... छत्तीसगढ में मोटे तौर पर अनुसूचित जाति के अंतर्गत सतनामी, मोची, गांड़ा, महार, नगारची; जनजाति वर्ग में गोंड़, कोरी, मुरिया, माड़िया तथा अन्य पिछड़ा वर्ग में तेली, कलार, मरार, कुम्हार, लोहार, कुर्मी इत्यादि जाति के लोग हैं। इन तमाम जातियों में मोची ऐसी जाति है जिसे सब छुआछूत की दृष्टि से देखते हैं।.. .. केवल सतनामी जाति ही मोची जाति के करीब है। लेकिन सतनामी...........भी खुल कर मोची के घर खाना खाने से हिचकते हैं।...... सतनामी जाति के लिये ''चमरा'' जैसे अपमानजनक शब्द का प्रयोग करते हैं।

अब इनकी आर्थिक स्थिति पर गौर करें — इन सभी जातियों में अमीर वर्ग भी हैं और गरीब वर्ग भी हैं। यहाँ अमीरी और गरीबी का मेरा पैमाना आप लोगों से बिलकुल भिन्न है। यहाँ अमीरी से मेरा अभिप्राय सरकारी नौकरी पेशा, व्यवसायी या चार-पाँच एकड़ या इससे अधिक भूमि वाले तथा गरीबी से मेरा आशय भूमिहीन मजदूर वर्ग से है। तो आरक्षण का लाभ इन तथाकथित अमीरों को मिलता है, गरीबों को नहीं। मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा—

मैं सतनामी जाति का हूँ। .... सन् 1995 में हिन्दी साहित्य में एम.ए. तथा 1998 में बी.एड. करने के बाद शिक्षक बनने के लिये इधर-उधर बहुत हाथ-पाँव मारा। केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय से ले कर शिक्षा कर्मी, संविदा शिक्षक, सब के लिये प्रयास किया लेकिन मुझे नौकरी नहीं मिली। कारण, मेरे पास रिश्वत देने के लिये एक-डेढ लाख रुपये नहीं थे।.... मुझे नौकरी नहीं मिली जबकि मेरे गाँव के तीन स्वजातीय भाइयों को, जिन्होंने रिश्वत दी तथा वे मात्र बारहवीं पास हैं, नौकरी मिल गई। मैंने स्वरोजगार के लिये भी प्रयास किया किन्तु असफल रहा। अतः हताश हो कर अपनी तमाम डिग्री (पाँचवी से ले कर एम.ए. तक) जिलाधीश धमतरी को सौंप दी और अपने आप को अनपढ घोषित कर दिया।

उपरोक्त उदाहरण से मैं केवल यही कहना चाहता हूँ कि आरक्षण का लाभ उन्हीं लोगों को मिल रहा है जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं। मैं दरअसल कहना चाहता हूँ कि हम गरीबों को नौकरी में आरक्षण मत दो लेकिन रोजी रोटी के अवसर प्रदान करो।.

.... इस एक अरब की आबादी वाले देश के सत्तर फीसदी लोगों की मासिक आय 700-800 (सात-आठ सौ) रुपये है।... मैं महीने में आठ-नौ सौ रुपये खेतों में (दूसरों के) काम करके पाता हूँ। महीने के चार-पाँच दिन ही सब्जी पकती है, बाकी के चौबीस-पच्चीस दिन नमक-मिर्च के साथ भात-बासी खाते हैं।

जहाँ तक नक्सलवाद का सवाल है।.... कुछ भी कीजिये लेकिन सलवा जुडूम को बंद कर निरपराध आदिवासियों को मरने से बचाइये। सलवा जुडूम के नाम पर जितने भी शिविर लगाये गये हैं वे यातना शिविर हैं। वहाँ आदिवासियों को एक तरह से बंधक बना कर रखा गया है। महिलाओं के साथ बलात्कार कर रहे हैं पुलिस और अर्द्धसैनिक बल के जवान। नक्सलवादियों और पुलिस के संघर्ष में दोनों तरफ से सिर्फ और सिर्फ आदिवासी ही मारा जा रहा है।.......

किसानों को ज्यादा कर्ज देने वाली भारत सरकार की नीति दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत की रफ्तार बढाने के लिये सामाजिक हत्या वाली नीतियों का हिस्सा है।

आप–हम क्या–क्या करते हैं... (14)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ?

✶ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं।

✶ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है।

✶ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में।

✶ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे।

✶ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अक्सर कितना-कुछ होता है ! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

✶ **26 *वर्षीय मजदूर* :** सुबह 6 बजे की शिफ्ट के लिये 4-4½ बजे उठता हूँ। साइकिल नहीं है, 5 बजे तैयार हो कर 45-50 मिनट पैदल चल कर फैक्ट्री पहुँचता हूँ। देर होने पर दौड़ कर जाना — जाड़े में भी पसीना आ जाता है। सर्दियों में अन्धेरे में रेल लाइन और मथुरा रोड़ पार करना। सुबह 5 बजे सुनसान होता है। चलते-चलते दिमाग में आता है कि यह भी कोई जिन्दगी है........

हरियाली तीज पर फिरोजाबाद चूड़ी लाने गये पिताजी टूण्डला में लाइन पार करते समय रेल से कट गये थे। मैं तब पेट में था और माँ का निकाह चाचा के साथ कर दिया गया। मनिहारों में चार घार (पाट) हैं, गोत्र हैं और आमतौर पर ब्याह-शादी घार के अन्दर ही होती है। मथुरा जिले के एक गाँव के रहने वाले मेरे पिता व चाचा की शादी अहमदाबाद में दो बहनों से हुई थी। हादसे के बाद मौसी की फिर अहमदाबाद में शादी कर दी गई.... दो साल में मौसी की आग लगने-लगाने से मृत्यु हो गई। इधर बचपन से ही घर में मैंने भारी कलह झेली है। कुछ तो ब्रज व गुजराती भाषाओं की दिक्कत थी और फिर दादी व बुआ की माँ से खटपट — मेरे दूसरे पिता जी माँ को बहुत ज्यादा पीटते, मुझे बहुत बुरा लगता पर मैं कुछ कर नहीं सकता था। नाना-नानी ने पंचायत की, माँ अहमदाबाद चली जाती और फिर आ जाती। माँ अब भी कहती है कि मैं तेरे कारण यहाँ रुकी अन्यथा.......

छह बजे फैक्ट्री में पहुँच कर साथी मजदूरों से हाथ मिलाता हूँ। सामान लाते हैं और खाली पेट काम शुरू कर देता हूँ। नाश्ता तो कभी घर पर भी नहीं.....

माँ ने मॉंटेसरी में दाखिल करवाया था। अहमदाबाद गई तो मुझे छिपा लिया और बकरियों के बच्चों की देखभाल में लगा दिया। दादी चूड़ी पहनाती थी, पिताजी बकरी चराते थे और चार महीने दूध बेचने के लिये बकरियों को आगरा के पास एक गाँव में ले जाते। लौट कर माँ ने मुझे पहली कक्षा में दाखिल करवाया। मैं दूसरी में, चौथी में, दसवीं में फेल हुआ.... स्कूल में अध्यापक पिटाई बहुत करते थे, लड़कियों की भी। बच्चे छुआछूत और ऊँच-नीच का व्यवहार करते थे इसलिये मुझे खेल पसन्द नहीं थी, नफरत थी खेलों से और अब भी इन में रुचि नहीं है। किताब खोले बैठा रहता............

फैक्ट्री में खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। पहला ब्रेक 8½

बजे। तब तक खाली पेट। मैं चाय नहीं पीता और एक रुपये में नाश्ता करता हूँ, कभी-कभी वह भी नहीं करता, पानी पीता हूँ और फिर सीधा भोजन..

नकल तो पाँचवीं की बोर्ड परीक्षा में भी थी (अध्यापक करवाते थे) और दसवीं की परीक्षा में भी। दसवीं कर घर में क्लेश के कारण मैंने फरीदाबाद में फूफा व चाचा के जरिये नौकरी ढूँढी पर नहीं मिली। अहमदाबाद गया और वहाँ बुआ ने एक बेकरी, एस.वी. बेकर्स में लगवाया। वहाँ 25-30 लोग काम करते थे। बेकरी में ही सब रहते थे। काम सुबह 5 बजे शुरू होता और कम से कम रात 10 बजे तक होता था। आराम नाम की चीज तो उसमें थी ही नहीं। भोजन का प्रबन्ध बेकरीवाले ने किया था — खाना बनाने वाली आती थी। काम चलता रहता और भोजन हम बारी-बारी से करते। पैकिंग वालों को तो रात के1-2 बज जाते। दिवाली पर 4-5 दिन तो सब को रात के 3 बज जाते, 24 घण्टे भी लगातार काम करना पड़ता — कुछ बेकरियों में तो नींद नहीं आने की दवाई देते थे। बेकरी वाला रोज रात 10 बजे बेकरी के बाहर से ताला लगा जाता, रात को फोन करके काम के बारे में पूछता, जाँच के लिये भी आ जाता। शनिवार शाम को खर्चा मिलता, रविवार को घूमने जाते। तीन महीने बाद वहाँ काम छोड़ कर 150 मजदूरों वाली एक वर्कशॉप में लगा जहाँ ड्युटी 12 घण्टे की थी। दो महीने बाद वह छोड़ कर फौज में भर्ती होने के लिये गाँव चला आया......

सुबह 6 बजे की शिफ्ट में हमारे साथ लड़कियाँ भी हैं। ब्रेक में लड़कियाँ अलग बैठती हैं, लड़के उल्टी-सीधी अश्लील बातें करते हैं। पौने नौ बजे सब फिर मशीनों पर। भोजन के लिये 11 बजे आधे घण्टे का समय.... भोजन की व्यवस्था दूसरे प्लान्ट की कैन्टीन में है, 5 मिनट पहुँचने में लगते हैं, दौड़ कर जाता हूँ। दस रुपये में थाली, खाना धीरे-धीरे खाता हूँ....

फौज में भर्ती के लिए अच्छी खुराक ली, दौड़, दण्ड-बैठक, बीम की। एक रिश्तेदार था इसलिये आगरे में 4 बार भर्ती के लिये गया। मेरठ, रुड़की, मथुरा, अल्मोड़ा, दिल्ली में भर्ती देखी..... हर जगह भारी भीड़, जम कर हँगामा होता, आर्मी वाले लाठियाँ मारते। भर्ती में मिलती निराशा के कारण वृन्दावन में आई टी आई में दाखिला लिया। आई टी आई करने के बाद खाली बैठना पड़ा तब इन्टर में दाखिला ले लिया। आगरा में एक आई टी आई अध्यापक को 1700 रुपये रिश्वत दी तब उषा मार्टिन कन्स्ट्रक्शन स्टील फैक्ट्री में मुझे अप्रेन्टिस रखा। वहाँ रोज एक्सीडेन्ट होते — गर्म सरिया किसी के पैर में घुस जाता, कोई मशीन में फँस जाता, तेल-पानी के कारण फिसल कर गिर जाते, जल जाते.... एक इंजिनियर कहता कि तुम कहीं भी नौकरी नहीं कर पाओगे क्योंकि तुम्हारी सोच नेगेटिव है। जब 7-8 साल का था तब से फिल्मों में रुचि है, आगरा में अप्रेन्टिस था तब यह शौक और बढा। साल-भर बाद वापस गाँव में और फिर खाली। घरवाले कहते कि वह 5 हजार कमा रहा है, वह दस हजार और यह कहीं जाता ही नहीं....... थ्रेशर पर मूठा लगा कर मैंने 20 रुपये प्रति घण्टा में काम किया। दो बार गुड़गाँव के चक्कर लगाये पर काम नहीं मिला तब बहन के पास फरीदाबाद पहुँचा............

भोजन के बाद 11½ बजे फिर काम शुरू। काम करते समय कुछ नहीं सोचता। सिर्फ यही देखना कि मोटर पास करनी है कि फेल करनी है। जल्दी, और जल्दी करो की कहते हैं तब स्थाई मजदूरों द्वारा दिखाई राह पर चल कर एक-दो खराबी को अनदेखा कर, बाइपास कर मोटर को पास कर देते हैं। एक बजे 15 मिनट के ब्रेक में बैठ जाते हैं....

जीजा ने यहाँ जेमी मोटर (जी.ई.मोटर) में ट्रेनी लगवाया। लालच और डर के जरिये ट्रेनी पर काम का बोझ लगातार बढाया जाता है। निकाल देंगे, 6 महीने बाद 1½ साल वाला ट्रेनी बना देंगे, शायद पक्का ही कर दें...... और 6 महीने बाद सड़क पर, जैसे कि मैं आ गया हूँ......

2½ बजे छुट्टी होने पर मैं पानी पी कर आराम से निकलता हूँ — कमरे पर पानी खारा है। बहन थी तब वह खाना बनाती थी। बहन बीमार रहती थी, भाई के साथ गाँव भेज दिया। जीजा भी नौकरी छोड़ कर चले गये। मैंने 550 रुपये किराये पर मुजेसर में कमरा लिया। भोजन बनाने का सामान लिया। मुझे खाना बनाना नहीं आता था, पड़ोसियों से पूछ-पूछ कर बनाना सीखा।

सुबह जल्दी-जल्दी आता हूँ और छूटने पर धीरे-धीरे जाता हूँ। रास्ते में कभी-कभार बाटा पुल के नीचे धरती पर दुकान लगाये रिश्तेदार के पास बैठ जाता हूँ, कभी फुटपाथ पर बटुये बेचते खुले विचारों वाले आदमी के पास, कभी मजदूर लाइब्रेरी में। रास्ते से सब्जी खरीद कर 5-6 बजे कमरे पर पहुँचता हूँ। दिमाग में यही रहता है कि जल्दी भोजन तैयार हो जाये ताकि खा-पी कर सोया जाये। सोने में 10½-11 बज जाते हैं। कभी-कभी ही सपना आता है और हर बार सपने में बहती हुई नदी, साफ पानी की नहरें, चारों तरफ हरियाली, उड़ते हुये पक्षी होते हैं।

2½ से रात 11 तक की शिफ्ट बिलकुल अच्छी नहीं लगती पर फिर भी एक महीने करनी पड़ी। मिलने-जुलने का सर्दियों में तो समय ही नहीं बचता : 8 बजे उठना, 35-40 लोगों के बीच एक लैट्रीन है, लाइन लग जाती है इसलिये सुबह 5 बजे से पहले या फिर 9 बजे के बाद लैट्रीन जाता हूँ। दस बजे नहाना, भोजन बनाने-खाने में 12½ बज जाते हैं।

तीन हफ्ते रात 11 से सुबह 6 तक की शिफ्ट में काम किया। आलस्य रहता, 7 बजे कमरे पर पहुँच कर सो जाता। उठने, मंजन करने, नहाने में 12 बज जाते। भोजन बनाने की बजाय बाजार जा

कर फल या गुड़-चना खाना और लौट कर पुनः सो जाना। फिर 4-5 बजे उठ कर सब्जी लाना, 6 बजे भोजन बनाना शुरू करना और खाने-बर्तन धोने में 9 बज जाते। दिन में कितना ही सो लो नींद पूरी नहीं होती। रात 3 से सुबह 5 के बीच तो नींद ज्यादा ही आती है — मशीन पर खड़े हो कर काम करते हुये उँघने लगते हैं। नींद आती इसलिये चाय पीता ....

अब नये सिरे से काम ढूँढना होगा......वर्तमान को इस कदर भोगना पड़ रहा है कि मेरा स्वभाव ही नहीं है कि आगे की सोचूँ। (जारी)

चीन से –

कुछ माह चीन में रह कर आये एक मित्र के अनुसार :

चीन में तीव्र गति से कारखानों की सँख्या बढ रही है और सन् 2001 तक फैक्ट्रियों में 4 करोड़ स्थाई नौकरियाँ खत्म कर दी गई। गाँवों से 20 करोड़ लोग काम की तलाश में शहरों में पहुँचे हैं। चीन स्थित फैक्ट्रियों में इस समय सामान्य तौर पर 12 से 16 घण्टे प्रतिदिन एक मजदूर को काम करना पड़ रहा है। मैनेजमेन्टों द्वारा गाली-गलौच सामान्य बात है। अधिकतर मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा जा रहा है। मजदूरों की बड़ी सँख्या को दस्तावेजों में दिखाते ही नहीं हैं। जो श्रम कानून हैं उन्हें भी लागू नहीं किया जा रहा। तनखाओं का बकाया होना आम बात है। जबरन ओवर टाइम....

यही हालात तो ओखला (दिल्ली), नोएडा (उत्तर प्रदेश), गुड़गाँव-फरीदाबाद (हरियाणा) स्थित फैक्ट्रियों में हैं।

चीन में रह कर आये मित्र अमरीका सरकार के नागरिक हैं और मजदूरों के बीच सीमाओं के पार तालमेलों (सोलिडेरिटी एक्रॉस बोरडर्स) के पक्षधर हैं। और आप ?

ग्वालियर से –

जे सी मिल और ग्वालियर रेयन (ग्रासिम) ग्वालियर में बड़ी फैक्ट्रियाँ थी। वर्षों से बन्द पड़ी जे सी मिल की नीलामी हो रही है और इस फैक्ट्री में कभी स्थाई रहे मजदूर 15 वर्ष से अपने हिसाब का इन्तजार कर रहे हैं। इधर आश्वासन व जबरदस्ती की जुगलबन्दी से ग्वालियर रेयन मजदूरों से कॉलोनी भी खाली करवा ली गई है पर इस फैक्ट्री में कभी स्थाई रहे मजदूरों को भी उनकी बकाया राशियों का भुगतान नहीं किया गया है। (जानकारी ''सत्यम् निर्भीक वाणी'' के 7.3.07 के अंक में 'प्रबंधन व प्रशासन द्वारा फिर छले गये मजदूर' शीर्षक वाले समाचार से।

पता — डॉ. विनोद केशवानी, बालाबाई का बाजार, लश्कर, ग्वालियर)

फैक्ट्री रिपोर्ट

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : ''प्लॉट 22 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर कम्पनी 2-2 घण्टे ओवर टाइम के बताती है और इन दो घण्टों का भुगतान भी सिंगल रेट से करती है। यहाँ 8=10 हैं। इस समय कम हैं पर फिर भी 80 कैजुअल वरकर हैं और इन्हें 10 घण्टे काम के बदले 60 रुपये। तीस दिन के महीने में 4 या 5 रविवार होने पर तनखा 1248 या 1200 रुपये हुई .... जाँच के लिये आये सरकारी अधिकारी को एक कैजुअल ने तनखा 1200 रुपये बताई थी तो बाद में ग्लोब कैपेसिटर के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर ने सत्याग्रही दुख जताते हुये कहा था कि जो देते हैं वह तो बताओ! बड़े साहब का हिसाब 60X30=1800 वाला है — आठ घण्टे और साप्ताहिक छुट्टी इसमें नहीं हैं। वैसे कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं, यानी, यह मजदूर कम्पनी तथा सरकार के दस्तावेजों के अनुसार फैक्ट्री में हैं ही नहीं हालाँकि ये रोज 12-12 घण्टे इस फैक्ट्री में काम करते हैं। नियमित थैलियों ने जाँच की पूर्व-सूचना को नियमित बना कर जाँच को औपचारिकता बनाया हुआ है। जिस दिन 8½ घण्टे बाद छुट्टी हुई उस दिन जाँच थी... जिस दिन कैजुअलों को फैक्ट्री से बाहर रखा उस दिन जाँच थी। शिकायतों पर लीपापोती और खानापूर्ति के लिये कुछ मजदूरों को तो दिखाओ ही के कारण रगड़-रगड़ कर 40 मजदूर स्थाई किये गये हैं। दस घण्टे के 60 रुपये के संग किसी स्थाई मजदूर की जमानत पर इधर कैजुअल वरकर मिल नहीं रहे जबकि कम्पनी को ज्यादा मजदूर चाहियें। ऐसे में कम्पनी ने जमानत वाली शर्त हटा दी है और 10 घण्टे के 80 रुपये देगी — मजदूर लाओ! काम का भारी जोर है, स्थाई मजदूरों के 100 रुपये बढाने के बदले में कम्पनी उत्पादन 10% बढाने की कह रही है पर कोई मजदूर राजी नहीं हो रहा। स्थाई मजदूरों के लिये भी 8=10 है और 2 घण्टे के पैसों को भत्तों में दिखाते हैं — दस्तावेजों में ओवर टाइम का जिक्र नहीं। ग्लोब कैपेसिटर की इन्डस्ट्रीयल एरिया में ही प्लॉट 30/8 स्थित फैक्ट्री में भी यही बातें हैं।''

ऑटो इग्निशन वरकर : ''ऑटो इलेक्ट्रिकल पार्ट्स बनाती कम्पनी की प्लॉट 6 सैक्टर-24 व 1 19/6 मथुरा रोड़ फरीदाबाद, रुद्रपुर और दक्षिण अफ्रीका में फैक्ट्रियाँ हैं। फरीदाबाद में सुबह 8 बजे आरम्भ होती शिफ्ट को रोज रात 8½ तक कर रखा है और साँय 4½ शुरू होती शिफ्ट को अक्सर अगले रोज सुबह 5 बजे तक करते हैं। रविवार को भी एक शिफ्ट में काम। स्थाई मजदूरों को हैल्पर के न्यूनतम वेतन के डबल के हिसाब से ओवर टाइम का भुगतान करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ओवर टाइम 10 रुपये प्रतिघण्टा की दर से देते हैं। कई ठेकेदार हैं, एक

12 घण्टे पर महीने के 2000 रुपये और दूसरा 2485 रुपये देता है। इन दो ठेकेदारों के लिये ओवर टाइम 12 घण्टे बाद शुरू होता है। एक ठेकेदार, शिव एसोसियेट्स के जरिये ऑटो इग्निशन तथा ऑटो गैलन में रखे गये 150 वरकरों की भविष्य निधि राशि जमा नहीं करवाई गई। कम्पनी ने साल-भर पहले ठेका खत्म कर दिया पर उन मजदूरों को पी.एफ. के पैसे नहीं मिले हैं। कम्पनी की मथुरा रोड़ फैक्ट्री में वार्निस में डिप करके फील्ड कॉयल को ओवन में पकाते हैं तब पूरी फैक्ट्री में धुँआ फैल जाता है, दिन में दो बार। आर्मेचर के फाइनल में लैकरिंग में एन.सी. थिन्नर लगातार इस्तेमाल होता है — इससे आँखों में छाती में जलन होती है।''

ई. एस. आई.

कारखानों में कार्य के कारण होती मृत्यु, अंग भंग, गम्भीर बीमारियों की जिम्मेदारियों से फैक्ट्री संचालकों को बरी करने के लिये भारत सरकार ने 1948 में कानून बना कर 1952 में कर्मचारी राज्य बीमा निगम उर्फ ई.एस.आई. कॉरपोरेशन की स्थापना की। मैनेजमेन्टों-कम्पनियों को राहत देने वाले इस कदम को चलन के अनुसार मजदूरों के हित में उठाया कदम प्रचारित किया जाता है।

कारखानों में काम करते 80 लाख मजदूर (परिवार समेत 3 करोड़ 20 लाख लोग) 2005-06 में ई.एस.आई. के दायरे में थे। जिन क्षेत्रों में सरकारों ने ई.एस.आई. लागू कर दी है वहाँ की हर फैक्ट्री के प्रत्येक मजदूर पर ई.एस.आई. के प्रावधान लागू करना कानून ने अनिवार्य कर रखा है। मजदूर स्थाई हो, चाहे कैजुअल हो, या फिर ठेकेदार के जरिये रखा-रखी गया-गई हो, फैक्ट्री में काम करते प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. को कानून ने अनिवार्य घोषित किया हुआ है। फैक्ट्री में कार्य करते किसी मजदूर की अगर ई.एस.आई. नहीं है तो इसका मतलब यह है कि वह मजदूर फैक्ट्री में है ही नहीं ! आमतौर पर फैक्ट्री-कम्पनी-सरकार दस्तावेजों को कानून अनुसार रखती हैं इसलिये दस्तावेजों में वे उन मजदूरों को नहीं दिखाती जिनकी ई.एस. आई. नहीं है।

हरियाणा में फरीदाबाद और दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र का उदाहरण लें। जिन फैक्ट्रियों को दिखा नहीं रखा उनकी चर्चा फिलहाल छोड़ दें। फरीदाबाद और ओखला में जो फैक्ट्रियाँ दस्तावेजों में दिखा रखी हैं उन सब पर ई.एस.आई. प्रावधान लागू हैं। ओखला और फरीदाबाद की ऐसी फैक्ट्रियों में काम करते 75% मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है ! कम्पनियों-मैनेजमेन्टों, दिल्ली सरकार, हरियाणा सरकार, भारत सरकार के अनुसार फैक्ट्रियों में काम करते तीन चौथाई मजदूर वहाँ काम ही नहीं करते! यही हाल भारत में अन्य क्षेत्रों में लगता है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं स्वयं में चर्चा के लिये विषय है। आइये ई.एस.आई. वाले एक चौथाई मजदूरों से जुड़ी कुछ बातें देखें।

ई.एस.आई. कॉरपोरेशन मजदूर के वेतन का 6.5% हर महीने लेता है — 1.75% मजदूर से, 4.75% कम्पनी से। इस प्रकार से वर्ष 2004-05 में 2260 करोड़ रुपये तथा 2005-06 में 2410 करोड़ रुपये भारत-भर में एकत्र किये गये। खर्च कितने किये ? वर्ष 2004-05 में 1258 करोड़ रुपये और अगले वर्ष 1278 करोड़ रुपये....

मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा कही जाने वाली ई.एस.आई. योजना की लूट की थोड़ी अधिक जानकारी के लिये हरियाणा में इसके कुछ आँकड़े देखें। वर्ष 2004-05 में आमदनी 94 करोड़ 58 लाख रुपये और खर्च 43 करोड़ 61 लाख। वर्ष 2005-06 में आमद 121 करोड़ 62 लाख और खर्च 41 करोड़ 65 लाख रुपये। वर्ष 2006-07 के 6 माह (30.9.06 तक) में आमदनी 80 करोड़ 9 लाख रुपये और खर्च 25 करोड़ 80 लाख। आमदनी का 46 से 34 से 32 प्रतिशत की राह खर्च 25% की ओर है। स्पष्ट है कि ई. एस.आई. कॉरपोरेशन की कमाई और कमाई का प्रतिशत बढता जा रहा है। लूट का एक प्रमुख तरीका प्रति मजदूर प्रति वर्ष खर्च की सीमा बाँध देना है। मजदूर व उसके परिवार पर एक वर्ष में 1000 रुपये खर्च की सीमा ई.एस.आई. कॉरपोरेशन ने बाँधी है — यह भी 750 से 900 रुपये की राह से गुजर कर। परिणामस्वरूप परेशानी-दर-परेशानी भुगत रहे हैं ई.एस.आई. वाले मजदूर और उनके परिजन। और, हरियाणा सरकार के श्रम विभाग द्वारा बनाये जाते बजट में राशि का ई.एस.आई. कॉरपोरेशन द्वारा निर्धारित सीमा से भी कम होना तो सरकारी तन्त्र की एक और कहानी है।

ऐलोपैथिक पद्धति के अनुसार उपचार के लिये जो आवयश्क हैं उन से दुगुनी दवाइयों को कमीशन के चक्कर में दिया जाना, कदम-कदम पर भ्रष्टाचार व अपव्यय तो हैं ही परन्तु यह सब तो जो खर्च किया जाता है उस में हैं। ई.एस.आई. कॉरपोरेशन की खुली लूट, दस्तावेजों में दर्ज लूट के सम्मुख यह बौने हैं।

आतंकवादी हैं सड़कें

सरकार के अनुसार दिल्ली में ही सन् 2006 में 8838 सड़क हादसों में 1910 लोग मारे गये और 7970 लोग गम्भीर रूप से घायल हुये।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (7)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया के चलते कानूनी/ गैर-कानूनी में हुई इस उलट-फेर के सन्दर्भ में यहाँ हम इन दो सौ वर्षों के दौरान मालिकाने में आये परिवर्तनों पर चर्चा जारी रखेंगे।

❍ फैक्ट्री-कम्पनी की स्थापना व संचालन के लिये आज जो पैसा आवश्यक है उसका करीब 15 प्रतिशत शेयरों से आता है और 85 प्रतिशत कर्ज से। यह औसत के तौर पर है और यहाँ हम उल्लेखनीय कम्पनियों की ही बातें कर रहे हैं। अनउल्लेखनीय फैक्ट्रियों-कम्पनियों की आई बाढ और उनकी भूमिका की चर्चा आगे आने वाले अंकों में करेंगे।

कम्पनी के शिखर पर बैठे बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स का, विशेषकर चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर तथा अन्य निदेशकों का सामान्य तौर पर शेयरों में भी 2-4 प्रतिशत से अधिक पर प्रत्यक्ष नियन्त्रण नहीं होता। किसी निदेशक के पास निजी शेयरों के रूप में जो शेयर होती हैं वे तो और भी कम होती हैं, बहुत-ही कम होती हैं। ऐसे में कम्पनी के निदेशक मण्डल में शामिल होना, डायरेक्टर बनना किसी करतब से कम नहीं है। और, चेयरमैन- मैनेजिंग डायरेक्टर बनना तथा बने रहना तो चमत्कारों की श्रेणी में आता है।

❍ फैक्ट्री-कम्पनी में लगे 85 प्रतिशत पैसों को कर्ज रूप में देने वाली संस्थायें और उनके बड़े साहब आमतौर पर पृष्ठभूमि में रहते हैं। वे पर्दे के पीछे से कठपुतलियों पर नजर-नियन्त्रण रखते हैं। फैक्ट्री-कम्पनी में शेयरों के रूप में लगे 15 प्रतिशत पैसों को कुँजी प्रस्तुत किया जाता है। फैक्ट्री-कम्पनी की यह चाबी निदेशक मण्डल के नियन्त्रण में बताई जाती है। और, आमतौर पर निदेशक मण्डल एक औपचारिकता मात्र नजर आता है। फैक्ट्री-कम्पनी का चेहरा चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर होता-होती है। और, ***चेहराविहीनता के इस दौर में चेहरे मुखौटे मात्र हैं।***

❍ फैक्ट्री-कम्पनी में लगे पैसों में हजारवें हिस्से से भी कम की हिस्सेदारी वाले व्यक्ति, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर को "मालिक" कहना एक तरफ जहाँ नादानी है वहीं दूसरी तरफ अति काँइयेपन से बिछाया जाता जाल है। नादानी व्यक्ति पर केन्द्रित हो कर सामाजिक प्रक्रिया और वर्तमान व्यवस्था को ओझल कर परिवर्तन के प्रयासों व मेहनत को दलदल में ले जाती है। काँइयापन ऊँच-नीच की प्रक्रिया और वर्तमान व्यवस्था को निशाने पर आने देने से रोकने के लिये समय-समय पर बलि का प्रबन्ध करता है, इस-उस साहब को पाप की मूर्ति करार दे कर ठिकाने लगाया जाता है।

❍ व्यक्ति द्वारा व्यक्तित्व त्याग कर मुखौटा बनना, मुखौटा बनने के लिये तन तानना और मन मारना की पहेली को बूझना मुर्गी-अण्डे में पहले कौन का उत्तर देना है। इस सन्दर्भ में चुटकी-झटके हमें चमत्कार की बन्द गली में ले जाते हैं। प्रक्रिया, सामाजिक प्रक्रिया को देखना-समझना बनता है....

❍ फैक्ट्री-कम्पनी का चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बनने-बने रहने के लिये अपने जैसे अनेकानेक लोगों को साधना-साधे रखना प्राथमिक जरूरत है। फिर, अपने स्वयं के स्तर को बड़े साहबों वाला बनाये रखना भी आवश्यक है। और, बड़े साहबों का स्तर स्थिर नहीं है, ठहरा हुआ नहीं है। बड़े साहब के स्तर की गतिशीलता बढते पैमाने पर पैसों की माँग करती है।

शिखर पर बढते भ्रष्टाचार का यह एक कारण है। कम्पनी के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर और कम्पनी के अन्य अधिकारियों द्वारा कम्पनी की चोरी करने के यह महत्वपूर्ण कारण हैं। (जारी)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

फरीदाबाद फैब्रिकेटर मजदूर : ''प्लॉट 311, 312, 313 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 550 वरकरों में सिर्फ 8 स्थाई मजदूर हैं और बाकी सब को 4 ठेकेदारों के जरिये रखा है। फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं — सुबह 8½ से रात 9 बजे तक और रात 8½ से अगले रोज की सुबह 8½ तक। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 2500 रुपये है पर इसमें से ठेकेदार 500 रुपये ले लेता है और चर्चा है कि इन 500 में से डायरेक्टर साहब 200 रुपये लेता है। तनखा में से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं — ई.एस.आई. की कच्ची पर्ची देते हैं और नौकरी छोड़ने पर पी.एफ. राशि निकालने वाला फार्म नहीं भरते। कार्य के दौरान चोट लगने पर गेट पर बैठा देते हैं — ठेकेदार आयेगा तब दवाई करवायेगा। फैक्ट्री में 60 पावर प्रेस हैं और महीने में चार हाथ कट जाते हैं — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर कर ई.एस.आई. अस्पताल भेज देते हैं। फैक्ट्री में मारुति, क्लास, एस के एच (नोएडा) का काम होता है।''

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज वरकरः ''31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में स्टाफ कहे जाते 20-25 लोग ही स्थाई हैं और 500 मजदूरों को 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखा गया है। ठेकेदारों के जरिये रखे 500 में 15-20 की ही ई.एस.आई. व पी. एफ. हैं। मिग वैल्डिंग, स्पॉट वैल्डिंग, पेन्टिंग के संग फैक्ट्री में 40 पावर प्रेस तो होंगी ही और प्रेसों पर उँगली-हाथ कटते रहते हैं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते, ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले जाते — हाथ कटने पर मजदूर को एन एच 5 में डॉ. शर्मा अस्पताल ले जाते हैं। हैल्परों की तनखा 2000 रुपये और ऑपरेटरों की 2600-4000 रुपये। फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं — सुबह 8 से रात 8½ तक और रात 8 से अगले रोज सुबह 8 बजे तक। पार्टनर नहीं आने पर लगातार 24 घण्टे काम करना पड़ता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। बहुत ज्यादा काम तो कम्पनी को चाहिये ही, सटीक समय पर भी चाहिये — 8 बजे मतलब 8 बजे ! मारुति के पुर्जे गुड़गाँव में असेम्बली लाइन पर पहुँचाने के लिये छोटे ट्रक हर समय दौड़ते रहते हैं। वी जी में तनखा देरी से — फरवरी का वेतन 25 मार्च को जा कर दिया था और मार्च की तनखा आज 19 अप्रैल तक नहीं दी है।''

कृष्णा प्रिन्ट्स मजदूर : '' 13/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 500 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। पैसे 12 घण्टे के 100 रुपये के हिसाब से देते हैं। फरवरी और मार्च की तनखायें आज 21 अप्रैल तक नहीं दी हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध भी नहीं है।''

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : ''प्लॉट 21-22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में डिप्लोमा किये वरकरों की तनखा 4000 रुपये बताते हैं। इन 4000 में से 400 रुपये तो कम्पनी सेक्युरिटी के नाम पर काट लेती है। फिर पी.एफ. के 12% और ई.एस.आई. के 1.75% तनखा से निकल जाते हैं। महीने में 15 दिन तो कम्पनी हम से प्रतिदिन 16 घण्टे काम करवाती है और बाकी के 15 दिन रोज 10½ घण्टे। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। दो घण्टे, आठ घण्टे, रविवार को ड्युटी के लिये कम्पनी हम डिप्लोमा वालों को कोई पैसे नहीं देती। जबरन ओवर टाइम और ओवर टाइम के पैसे नहीं! वास्तव में एस.पी.एल. कम्पनी हम डिप्लोमा वालों से बेगार करवाती है — हम से हर महीने 172 घण्टे बेगार ली जाती है।''

नेवाड़ कार्बन एण्ड सिरेमिक्स (इम्पीरियल) मजदूर : ''प्लॉट 175 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में वजन वाला काम है — भट्टियों में लगने वाली ईंट बनती हैं। फैक्ट्री में काम करते 80 मजदूरों में 5-7 ही स्थाई हैं और बाकी को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे के 60 रुपये के हिसाब से महीने के पैसे देते हैं। तनखा देरी से — मार्च का वेतन आज 14 अप्रैल तक नहीं दिया है।''

व्हर्लपूल वरकर : ''प्लॉट 27, 28, 29 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10-15 ठेकेदारों के जरिये कम्पनी ने 1000-1500 मजदूर रखे हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि के तौर पर तनखा में से 280 रुपये काटते हैं। ई. एस.आई. का कच्चा कार्ड देते हैं, पी.एफ. की पर्ची तो इन 6-7 वर्ष में एक भी नहीं दी है। पुणे की विकास कम्पनी का ठेका व्हर्लपूल मैनेजमेन्ट ने खत्म कर दिया पर वरकरों को उनकी पी.एफ. राशि नहीं मिली है। कनवेयर पर मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। लोडिंग वालों की शिफ्ट सुबह 8½ बजे शुरू होती है और रात 12-2-2½ बजे खत्म होती है। रोज 12 घण्टे काम पर महीने के 2500-3200 रुपये बनते हैं।''

और, किस्सा सुपर फैशन का

सुपर फैशन मजदूर : ''12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जिन्हें कैजुअल वरकर कहते हैं उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और ऐसे वरकर इस समय 150 के करीब हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2000 रुपये (इन में धागा काटने वाली महिला मजदूर भी हैं) और कारीगरों को पीस रेट से। धागा काटने वाले पुरुष मजदूरों को 50 पैसे प्रति पीस जबकि कम्पनी 1 रुपया 10 पैसे प्रति पीस ठेकेदार को देती है। इधर 3-4 महीने से काम कम है और 7-8 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या 350 के करीब है। फैक्ट्री 3 मंजिल की है

और 600 तो सिलाई की मशीन हैं। काम आने पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर 800-1000 हो जाते हैं। फैक्ट्री में 1500 मजदूर हो जाते हैं।

''सुपर फैशन में 400 स्थाई मजदूरों में से 300 के करीब फिनिशिंग विभाग में हैं और 50 सैम्पल बनाते सिलाई कारीगर। फैक्ट्री में सुबह 9½ से साँय 6¼ की शिफ्ट है पर आमतौर पर रात 8¼ तक रोकते हैं — फरवरी में तो पूरे महीने सुबह 9½ से रात 2¼ बजे तक काम करवाया। स्थाई मजदूरों को ही पे-स्लिप दी जाती है और इसमें कम्पनी महीने में 4-6-10 घण्टे ओवर टाइम के दिखाती है जिनका डबल की दर से तनखा के संग 7 तारीख को भुगतान करती है। वास्तव में हर महीने 50 से 200 घण्टे ओवर टाइम के होते हैं और कम्पनी इनके पैसे 27-28 तारीख को सिंगल रेट से देती है — जो पैसे तनखा के समय ओवर टाइम के रूप में दिये थे उन्हें इन पैसों में काट लेती है।

''साहब लोग गाली भी देते हैं। पीस रेट कम देने पर ठेकेदारों के जरिये रखे सिलाई कारीगरों ने 2 मार्च को कम्पनी अधिकारियों की पिटाई की। कम्पनी ने स्थाई मजदूरों पर पुलिस के सम्मुख गवाही देने के लिये दबाव डाला पर स्थाई मजदूरों ने यह करने से इनकार कर दिया।

''सुपर फैशन के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर मदन कुकरेजा हैं और कम्पनी की ओखला फेज-2 तथा यहाँ प्लॉट 262 ए-बी सैक्टर-24 में भी फैक्ट्रियाँ हैं। सुपर फैशन का माल रीबोक, ग्रान्ट थॉमस खरीदते हैं।''

मितासो वरकर : ''प्लॉट 63 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 6 विभाग हैं और हर विभाग में एक ठेकेदार। कुल 200 मजदूर हैं और सब को ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों को 8 घण्टे के 80 रुपये के हिसाब से तनखा। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पावर प्रेस विभाग में काम ज्यादा है और हाथ कटते हैं — अप्रैल में 19 तारीख तक 4 की उँगलियाँ कटी। एक-दो दिन प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देते हैं। तनखा देरी से — हर ठेकेदार अलग तारीख पर देता है। मार्च का वेतन 14 अप्रैल तक नहीं दिया तब प्रेस शॉप में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। कम्पनी ने फौरन ठेकेदार को बुला कर तनखा बँटवाई।''

सेक्युरिटी गार्ड

हरियाणा इन्डस्ट्रीयल सेक्युरिटी सर्विस गार्ड : ''हाउसिंग बोर्ड मार्केट, सैक्टर-7 में कार्यालय वाली एच.आई. एस.एस. के 2500 के करीब गार्ड फरीदाबाद में लगभग 500 फैक्ट्रियों में ड्युटी करते हैं। एक हजार के करीब सफाई कर्मी, हैल्पर व कारीगर भी यह ठेकेदार कम्पनी फैक्ट्रियों को सप्लाई करती है।

''आमतौर पर गार्डों को 12 घण्टे रोज और महीने के सब दिन ड्युटी करनी पड़ती है। कोई 26 जनवरी नहीं, कोई 15 अगस्त नहीं, कोई होली नहीं, कोई दिवाली नहीं — बीमारी या अन्य किसी कारण से साल में एक दिन भी छुट्टी कर ली तो उस दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं। दूसरा गार्ड नहीं आया तो 36 घण्टे लगातार ड्युटी करनी पड़ती है। इन 36 घण्टों में 12 घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं पर इनका भी भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। एच.आई.एस.एस. 36 घण्टे की ड्युटी करवाते समय भी रोटी के लिये पैसे नहीं देती। गार्ड को 36 घण्टे में दो बार बाहर ढाबे का भोजन करना पड़ता है जो कि महँगा भी पड़ता है।

''12 घण्टे की ड्युटी में थकान महसूस होती है और शरीर अकड़ जाता है। छत्तीस घण्टे की ड्युटी में तो मुर्दा ही हो जाते हैं। दिन की ड्युटी में तो मनोरंजन के लिये समय होता ही नहीं। रात की ड्युटी में मनोरंजन करने पर 5 घण्टे वाली नींद में कटौती करनी पड़ती है और इससे रात को भारी दिक्कत होती है — फैक्ट्री में चक्कर लगाते समय नींद में नशे में जैसे डगमगाते चलते हैं। मन ऊब जाता है।

''साप्ताहिक छुट्टी नहीं होने से वे गार्ड तो बहुत-ही ज्यादा परेशान होते हैं जो परिवार के बिना यहाँ रहते हैं। पानी भरना, सब्जी लाना, रोटी बनाना तो रोज रहते ही हैं, हफ्ते में राशन लाने, कपड़े साफ करने का सिरदर्द अलग से रहता है। घूमने-मिलने के लिये समय तो किसी गार्ड को नहीं मिलता। हर दिन ड्युटी के कारण मन में उबाल रहती है।

''भर्ती के लिये राशन कार्ड व प्रमाणपत्र के संग एक जमानती जरूरी है। फैक्ट्रियों में अन्दर काम करने के लिये नौजवानों को ही लेते हैं पर सेक्युरिटी गार्ड के तौर पर उन्हें कम ही रखते हैं। इसकी वजह नौजवानों की तड़ी-फड़ी, मस्ती, बोलचाल में गाली, रोज 12 घण्टे ड्युटी कम ही करना है। चालीस पार को फैक्ट्री के अन्दर काम देने से पहले ही मना कर देते हैं। चालीस पार को गेट पर गार्ड के रूप में पसन्द करते हैं। चालीस पार करते-करते कुटते-पिटते लोग टूट कर गार्ड लायक बन जाते हैं। ज्यादातर सेक्युरिटी गार्ड रिटायर अथवा अन्य कारणों से नौकरी छूटे चालीस वर्ष से अधिक आयु के मजदूर हैं।

''गेट खोलना-बन्द करना, आते-जाते माल की जाँच करना-गिनना, निकलते समय मजदूरों की तलाशी लेना, यह ध्यान रखना कि कोई अनजान व्यक्ति फैक्ट्री में नहीं जा सके, साहबों को सल्युट मारना, रात को चक्कर लगाना वाले चौकीदारी के काम हमारे हैं। लेकिन हम से मजदूरों की हाजिरी लगवाना, रजिस्टर में चालान दर्ज करवाना, माल चालान अनुसार है या नहीं यह सुनिश्चित करवाना वाले टाइम ऑफिस के काम भी अधिकतर

फैक्ट्रियों में करवाये जाते हैं। दिन में गाड़ियों में बहुत माल आता-जाता है, साहब आते-जाते रहते हैं....

''एच.आई.एस.एस. में 12 घण्टे रोज ड्युटी करने पर गार्ड को 30 दिन के 2200 से 4300 रुपये देते हैं। अधिकतर गार्डों को 3000 से 3500 के बीच देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. सब की हैं। तनखा 13 और 14 तारीख को सुबह 9 से रात 12 बजे तक सैक्टर-7 दफ्तर जा कर लेनी पड़ती है। पे-स्लिप नहीं देते — एक पर्ची पर नाम और राशि लिख देते हैं जिसे कैशियर को देना होता है। एक रजिस्टर में हस्ताक्षर करवाते हैं। ई.एस.आई. के 55 रुपये और पी.एफ. के 294 रुपये काटते हैं, यानी, दस्तावेजों में 8 घण्टे की ड्युटी, साप्ताहिक छुट्टी और हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दिया जाना दर्शाते हैं।

''महसूस तो गरीब को सब बात होती हैं। कम पैसे में कैसे गुजारा करें इसकी चिन्ता हर समय रहती है। लाल कार्ड पर महीने में 35 किलो गेहुँ 74 रुपये में सरकारी राशन की दुकान से, पिछली साल चीनी दी ही नहीं क्योंकि मण्डी में भाव ज्यादा होने के कारण डिपो वाले ने बोरी की बोरी वहीं बेच दी, 1300 लीटर मिट्टी के तेल में से 100 लीटर ही बाँटा जाता है .... डिपो वाला पार्षद को सिक्कों से तौलता है, अधिकारियों को गड्डियाँ देने की बातें करता है और महीने में एक ही दिन डिपो खोलता है। बेटी पढ रही है, बेटे का ब्याह कर दिया — कपड़े की दुकान पर नौकरी करता है। कम किराये के चक्कर में हम बिना बिजली के मकान में रहते हैं। मकान नीचा है — बरसात में नाली का पानी अन्दर आ जाता है । कड़ी लचक गई हैं, छत टपकती है और बरसात में गिरने का खतरा है....एक फैक्ट्री में 22 वर्ष कुशल मजदूर के रूप में परमानेन्ट नौकरी कर चुका हूँ।''

गुड़गाँव— आग

गोल्फ कोर्स रोड़-सेन्ट थॉमस मार्ग चौराहे के निकट 2500 झुग्गियों की बस्ती है। झुग्गी निवासी प्लास्टिक-कागज-लोहे के टुकड़े बीनने, रिक्शा चलाने, नजदीक के चमकते घरों में झाड़ू-पौंचा व बर्तन-कपड़े साफ करने, बहुमंजिली इमारतों में कम्पनियों के कार्यालयों की सफाई करने के कार्य करते हैं। बस्ती में 23 अप्रैल को देर रात आग लगी जिसमें 800 झुग्गियाँ स्वाहा हो गई। ऐसे में 24 अप्रैल को साहबों के यहाँ सफाई के लिये झुग्गी निवासी नहीं गये। जिनकी झुग्गियाँ जल गई वे पड़ोसियों के साथ रहने के जुगाड़ और नये सिरे से झुग्गी बनाने में जुटे। बुधवार, 25 अप्रैल को भी झुग्गीवासी साहबों के यहाँ सफाई करने नहीं पहुँचे। कार्यालयों में सफाई क्यों नहीं हुई? सफाई करने वाले क्यों नहीं आये? कुछ साहब पूछताछ करने 24 को ही झुग्गी बस्ती में पहुँच गये थे, कुछ 25 को पहुँचे...........

किसकी सुरक्षा ?

गुड़गाँव में सुशान्त लोक जैसे क्षेत्रों में हर घर के सामने रात को सेक्युरिटी गार्ड होता है। घर के प्रवेश-द्वार की कीमत से गार्ड की जीवन-भर की तनखा कम ही बैठेगी।

सुबोध मारुति कार फैक्ट्री में कैजुअल वरकर था। निकाल दिये जाने पर उसने फरीदाबाद में भी फैक्ट्रियों में नौकरी की — स्वास्थ्य को खतरों और भारी तनाव के कारण छोड़ दी। सुबोध अब सेक्युरिटी गार्ड है। बैठना और नजर रखना, कारों के लिये गेट खोलना, आगन्तुकों से ''किससे मिलना है?'' पूछना ...... 6 महीने से सुबोध रात को 12 घण्टे की ड्युटी कर रहा है। छह महीने में एक दिन भी छुट्टी नहीं। हर रात 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के सुबोध को 2000 रुपये देते हैं। दिन वाला गार्ड बीमार पड़ गया तो साहबों के एसोसियेशन ने दूसरे गार्ड का प्रबन्ध नहीं किया। सुबोध को लगातार 48 घण्टे ड्युटी करनी पड़ी कि कहीं नौकरी छूट न जाये......परिवार दूर गाँव में है।

फैशन एक्सप्रेस

प्लॉट 100 उद्योग विहार फेज 1, गुड़गाँव स्थित फैशन एक्सप्रेस फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर काम करते हैं। निर्यात के लिये वस्त्र तैयार करती फैशन एक्सप्रेस की दो और फैकिट्रयाँ हैं जिनमें एक मानेसर में है।

ढर्रे के अनुसार फैशन एक्सप्रेस में भी यूनियन का स्थाई मजदूरों से ही वास्ता है। जुलाई 06 में यूनियन ने मैनेजमेन्ट को माँग-पत्र दिया। खींच-तान आरम्भ हुई। दो महिला मजदूरों ने कम्पनी के दो डायरेक्टरों के खिलाफ यौन शोषण की शिकायत पुलिस को की। पुलिस की ढील पर यूनियन मामले को अदालत ले गई। जज ने डायरेक्टरों को एक दिन की हिरासत में भेजा और दो दिन बाद, 24 नवम्बर 06 को कम्पनी ने चार यूनियन नेताओं को नौकरी से निकाल दिया। फिर दबाव डाल कर दो महिला मजदूरों से इस्तीफे लिये। यूनियन-मैनेजमेन्ट खींचा-तान जारी रही। चार महिला मजदूरों ने कम्पनी अधिकारियों के खिलाफ पुलिस को यौन शोषण की शिकायत की और 20 मार्च 07 को स्थाई मजदूर काम बन्द कर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये। बैठने वालों में 40 से ज्यादा महिला मजदूर थी। फैक्ट्री में उत्पादन बन्द होने पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर काम की तलाश में चले गये। फैशन एक्सप्रेस यूनियन के समर्थन में कुछ अन्य फैक्ट्रियों की यूनियनें गुड़गाँव के कमला नेहरू पार्क में सभाओं में शामिल हुई। ऐसे में 8 अप्रैल को भारी सँख्या में पुरुष व महिला पुलिस फैशन एक्सप्रेस फैक्ट्री पहुँची और मैनेजमेन्ट, यूनियन तथा उप

श्रमायुक्त के बीच सौदेबाजी के बाद समझौता हुआ। स्थाई मजदूरों ने 9 अप्रैल को काम शुरू कर दिया और फैशन एक्सप्रेस गेट पर सिलाई कारीगर चाहियें का इश्तहार लग गया।

(जानकारी ''गुड़गाँव वरकर्स न्यूज'' के मई 07 अंक से।)

नोएडा से –

ऋतिका सिस्टम मजदूर : ''सी-22/18 सैक्टर-57, नोएडा स्थित फैक्ट्री में रोज 2-3 घण्टे ओवर टाइम करवाते हैं। ओवर टाइम को इनसेन्टिव खाते में डाल कर इसका भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। कम्पनी यह पैसे तनखा के साथ देती थी पर मार्च माह के आज 21 अप्रैल तक नहीं दिये हैं।''

जर्मनी में

ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर

यूरोपियन यूनियन के काँइया साहब जानते हैं कि आधुनिक कारखानों में उत्पादन मजदूर के अपने कार्यस्थल से कुछ प्रकार के लगाव और भविष्य में रोजगार सुरक्षा की सम्भावना पर निर्भर है। अगर ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों का प्रतिशत एक हद से बढ जाता है तो स्थाई मजदूर बनने की सम्भावना से जुड़ा लालच समाप्त हो जाता है। ऐसे में काम करने की प्रेरणा खत्म हो जाती है और उत्पादकता घट जाती है। इसलिये 2005 में यूरोपियन यूनियन ने सदस्य स्पेन सरकार को उसके क्षेत्र में ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों का प्रतिशत ज्यादा होने पर चेतावनी दी।

ब्रिटेन में ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूर 4.7% हैं। इनकी तुलना में जर्मनी में यह 1.7% हैं और कम लगते हैं पर इन दस वर्ष में 10% प्रतिवर्ष की दर से बढ रहे हैं। मध्य-2006 में जर्मनी में 5 लाख मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये थे।

जर्मनी में सिर्फ 2.4% कम्पनियाँ ही ठेकेदारों के जरिये मजदूर रख रही हैं लेकिन 500 से ज्यादा वरकर रखने वाली कम्पनियों में यह प्रतिशत 35 है। ऐसे एक तिहाई मजदूर बिजली उपकरण और धातु उद्योग क्षेत्रों की बड़ी कम्पनियों में अकुशल मजदूर के तौर पर रखे गये हैं। हवाई जहाज बनाती हैम्बर्ग की एयरबस फैक्ट्री में 12 हजार स्थाई मजदूर हैं तो ठेकेदारों के जरिये रखे 5-6 हजार वरकर। स्थाई मजदूरों के विरोध और साहबों के काँइयापन को धकेलती सामाजिक प्रक्रिया ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की सँख्या बढा रही है। जर्मनी में इस सन्दर्भ में बदलते कानून देखिये : ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर को 6 महीने बाद स्थाई करने के कानून में परिवर्तन कर 1994 में इसे 9 महीने किया, फिर 1997 में इसे 12 महीने किया, 2002 में 24 महीने किया, और 2003 में कानून ने ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर को उस रूप में असीमित समय तक रखने की छूट दी।

जर्मनी में आमतौर पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को स्थाई मजदूरों के वेतन का 70% मिलता है लेकिन जनरल मोटर-ओपेल की बोखुम कार फैक्ट्री में यह एक तिहाई है। स्थाई मजदूरों ने 1999 में चाणचक्क हड़ताल कर कम्पनी की छँटनी योजना ठप्प की और 2004 में चाणचक्क हड़ताल कर फिर ऐसा ही किया तो कम्पनी ने दूसरा रास्ता अपनाया। एक करोड़ रुपये की मुआवजा राशि के इर्द-गिर्द अलग-अलग मजदूर से सौदेबाजी कर कम्पनी ने 3000 को निकाला। अगस्त 06 में जनरल मोटर की बोखुम कार फैक्ट्री में 6, 799 स्थाई मजदूर बचे थे (और ठेकेदारों के जरिये रखे 400 थे)। पुर्तगाल में फैक्ट्री बन्द, इंग्लैण्ड में फैक्ट्री में रात पाली खत्म की बातें और डेल्टा II कार मॉडल बाखुम फैक्ट्री में ला कर स्थाई मजदूरों का फैक्ट्री बन्द हो जाने का डर दूर करने के लिये जनरल मोटर कम्पनी माँग कर रही है कि ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों की सीमा 5% से बढा कर 15% की जाये। चेतावनी यह भी है कि डेल्टा II मॉडल से जनरल मोटर की यूरोप में एक और फैक्ट्री बन्द होगी। बोखुम कार फैक्ट्री के परिसर में जनरल मोटर के लिये काम करती 150 कम्पनियों पर 5% की सीमा लागू ही नहीं है। तुलना में बी एम डब्लू की लीपजिग में नई कार फैक्ट्री में 3400 स्थाई मजदूर हैं तो 1000 वरकर ठेकेदारों के जरिये रखे।

कम्पनियाँ ठेकेदार हैं। यूरोपियन यूनियन का और जर्मनी सरकार का समान काम के लिये समान वेतन का कानून है.... और इसमें है बड़ा छेद : यूनियन से समझौता! जर्मनी में सब ठेकेदार कम्पनियाँ यूनियनों से समझौते करती हैं और समान काम के लिये वेतन में भारी भेद का प्रबन्ध करती हैं।

नोकिया की मोबाइल फोन बनाने वाली फैक्ट्री बोखुम में 1989 से है। यहाँ 2005 में प्रतिदिन 1-1½ लाख मोबाइल फोन बनते हैं। इन 5 वर्षों में स्थाई मजदूर 3000 से 2500 कर दिये गये हैं और यूनियन ने ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों की सँख्या को 550 से 800 की राह 2005 में 1200 करने के समझौते किये हैं।

ठेकेदारों के जरिये रखे जाते अधिकतर मजदूर युवा हैं। एक जगह रहने की अवधि घट रही है — 1997 में औसतन यह 3 महीने 3 दिन थी और 2003 में 2 महीने 3 दिन हो गई थी। जनरल मोटर फैक्ट्री में एक ठेकेदार कम्पनी ने 13½ यूरो प्रति घण्टा वेतन को उत्पादन बोनस घटा कर 7 यूरो प्रति घण्टा करने की कोशिश की तो उसके 150 वरकरों ने सामुहिक छुट्टी कर ली....

वेतन कम करने के लिये जर्मनी में साहब लोग न्यूनतम वेतन 7 यूरो प्रति घण्टा करने की कसरत कर रहे हैं (इस समय एक यूरो 56 रुपये से कुछ ज्यादा है)। (जानकारी हम ने प्रोल-पोजीशन न्यूज के अप्रैल 07 अंक से ली है। इन्टरनेट पर देखें <www.prol-position.net>)

कुछ बातें गुड़गाँव से

मदरसन सुमी सिस्टम्स मजदूर : "प्लॉट 21 सैक्टर-18, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में काम करते 2500 मजदूरों में 100 स्थाई हैं और बाकी सब कैजुअल। यहाँ फैक्ट्री 5 वर्ष से चल रही है और जो 100 स्थाई हैं उन में भी अधिकतर को कम्पनी की नोएडा फैक्ट्री से लाया गया है। फैक्ट्री में 1500 लड़कियाँ और 1000 लड़के काम करते हैं। लड़कों का 6 महीने में ब्रेक कर ही देते हैं, लड़कियों में किसी-किसी का ही ब्रेक करते हैं — अधिकतर लड़कियाँ अविवाहित हैं। दसवीं किये और 18 से 22 वर्ष आयु वालों को ही रखते हैं। 23-24 वर्ष आयु वालों को भी ज्यादा आयु के बता कर भर्ती करने से मना कर देते हैं।

"मदरसन में मजदूरों की 6 से 2 , 2 से 10, 10 से 6 बजे की शिफ्ट हैं और सुबह 5½, दोपहर 1½, रात 9½ बजे फैक्ट्री के अन्दर प्रवेश करना पड़ता है। सुबह 6 बजे की शिफ्ट के लिये कम्पनी की बसें बदरपुर बॉर्डर, कापसहेड़ा बॉर्डर, पालम, उत्तम नगर, गुड़गाँव में पहले स्टॉप से सुबह 4-4½ बजे चलती हैं। सुबह की शिफ्ट के लिये कई मजदूरों को रात 3-3½ बजे उठना पड़ता है .... सर्दियों में तो बहुत-ही ज्यादा परेशानी होती है। अन्धेरा-सुनसान में घरवाले लड़कियों को बस स्टॉप तक छोड़ने आते हैं। बी-शिफ्ट रात 10 बजे खत्म होती है और बसें 10½ चलती हैं — रात 11½-12 बजे घरवालों को स्टॉप से लड़कियों को लाना पड़ता है। बसें खचाखच भरी रहती हैं — लड़के तो अक्सर खड़े ही रहते हैं। सी-शिफ्ट में सिर्फ लड़के हैं और कम्पनी पालम, उत्तम नगर तथा बदरपुर बॉर्डर से बसें नहीं चलाती — इन जगहों से मजदूरों को अपने पैसे खर्च कर फैक्ट्री पहुँचना पड़ता है। सी-शिफ्ट में कैन्टीन में भोजन नहीं — रात 12 बजे चाय-बिस्कुट और 3 बजे चाय। नजदीक के सरोल गाँव से काफी मजदूर पैदल तथा साइकिलों से फैक्ट्री पहुँचते हैं।

"शिफ्ट आरम्भ होने के समय से आधा घण्टा पहले फैक्ट्री में पहुँच कर कार्यरत मजदूरों के अगल-बगल में सफाई करनी पड़ती है और फिर 5-10 मिनट एरिया हैल्पिंग हैण्ड की मीटिंग. ... मदरसन कम्पनी में उत्पादन, ज्यादा उत्पादन का भारी दबाव है। अधिकतर मजदूरों को खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। उत्पादन हर घण्टे बताना पड़ता है। प्रति घण्टा के हिसाब से 8 घण्टे का उत्पादन कम्पनी निर्धारित करती है — आधा घण्टा भोजन का और दस-दस मिनट दो चाय ब्रेक का समय कम्पनी घटाती नहीं। खींच-खाँच कर, दबा-छिपा कर भोजन-चाय के समय की हम पूर्ति करते हैं — कुछ मजदूर तो उत्पादन पूरा करने के चक्कर में भोजन कर ही नहीं पाते। उत्पादन के लिये एरिया हैल्पिंग हैण्ड चिल्लाता-चिल्लाती है। निर्धारित से कम उत्पादन पर सुपरवाइजर डाँटते हैं। और, क्वालिटी वाले कहते हैं कि हमें ज्यादा उत्पादन से मतलब नहीं है, हमें अच्छी गुणवत्ता चाहिये — खराब क्वालिटी बिलकुल नहीं चलेगी ! हम मजदूर दोनों तरफ से दबाये जाते हैं।

"मदरसन फैक्ट्री में ओवर टाइम कम ही लगता है और इसका भुगतान दुगुनी दर से है। लड़कियों में ए-शिफ्ट वालियों का ही लगता है, लड़कों का तीनों शिफ्टों में। ओवर टाइम जब लगता है तब 8 घण्टे का लगता है और बहुत ज्यादा थका देता है। रविवार को शिफ्ट बदलती है — ए और सी शिफ्टों में तो नींद पूरी होती ही नहीं। काम करते समय झपकियाँ आती हैं और चोट लगती हैं। मशीनें लड़के ही चलाते हैं और टारगेट, क्वालिटी, नींद के फेर में उँगलियाँ कटती हैं। उँगली कटने पर कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती — कुछ दिन प्रायवेट में इलाज करवा कर निकाल देती है। तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। और, छुट्टी करने से मजदूरों को रोकने के लिये कम्पनी तीन महीने में एक भी छुट्टी नहीं करने पर 300 रुपये देती है....... .... 28 मई को ए-शिफ्ट में ड्युटी कर लौटते समय बस में एक लड़की के मुँह से खून आने लगा। ड्राइवर पर दबाव डाल कर मजदूर बस को अस्पताल ले गये और दो लड़के तथा दो लड़की अस्पताल में उस लड़की के साथ रुके....

"मदरसन फैक्ट्री की कैन्टीन में भोजन अच्छा है — 6 रुपये मजदूर और 12 रुपये कम्पनी देती है। शिफ्ट के दौरान कम्पनी दो चाय भी देती है। कैन्टीन के 15 मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और इन्हें सुबह 7 से रात 9 बजे तक काम करने पर महीने के 2500 रुपये देते हैं। कुछ वरकर रात 12 व 3 बजे चाय भी देते हैं। कैन्टीन वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।

"मदरसन कम्पनी 2400 मजदूरों को हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक (हैल्पर) के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन देती है — मशीनें चलाते मजदूरों को भी यही तनखा। हाँ, नौकरी छोड़ने/ब्रेक पर 700 रुपये प्रतिमाह के हिसाब से बोनस राशि दी जाती है। पी.एफ. राशि निकालने का फार्म कम्पनी भर देती है पर तीन महीने से कम समय में छोड़ने वालों के यह फार्म नहीं भरती — ऐसे मजदूरों का पी.एफ. का पैसा पता नहीं कहाँ जाता है।

"मदरसन फैक्ट्री में ग्रुप फोर के सेक्युरिटी गार्ड हैं। भोजन अवकाश के दौरान दो गार्ड कैन्टीन में भी रहते हैं। रात 10½ बजे

मजदूरों को छोड़ने जाती बसों में एक-एक गार्ड होता है। और इधर फरीदाबाद में प्लॉट 12 डी सैक्टर-38 में मदरसन कम्पनी की नई फैक्ट्री शुरू हो गई है।''

डेल्फी पैकार्ड इलेक्ट्रिक सिस्टम वरकर : ''42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर रोड़, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कारों का बिजली का ताना-बाना तैयार किया जाता है जिसे यहाँ मारुति, होण्डा, जनरल मोटर फैक्ट्रियों को दिया जाता है तथा अमरीका स्थित निसान की कार फैक्ट्री को निर्यात भी किया जाता है। डेल्फी की नोएडा में फैक्ट्री के संग 1995 में इस फैक्ट्री की स्थापना हुई। गुड़गाँव में उद्योग विहार में डेल्फी की एक छोटी फैक्ट्री और कार्यालय भी हैं। पुणे में नई फैक्ट्री की बातें....

''डेल्फी फैक्ट्री में उत्पादन कार्य के लिये युवा मजदूर भर्ती किये गये और स्थाई किये गये। सात वर्ष में, 2002 में फैक्ट्री में 750 स्थाई मजदूर काम करने लगे थे कि कम्पनी ने 15 महीने की तनखा ले कर इस्तीफा वाली वी आर एस लगाई। हम सब नौजवान थे पर फिर भी 50 मजदूरों ने भी नौकरी नहीं छोड़ी। ऐसे में माँग-पत्र पर यूनियन और कम्पनी में अखाड़ेबाजी हुई। यूनियन ने कहा कि कम्पनी दिवाली उपहार नहीं दे रही, मैनेजमेन्ट ने कहा कि उपहार दे रहे हैं। यूनियन ने कहा कि महिला मजदूरों के साथ मैनेजमेन्ट ने दुर्व्यवहार किया है और कम्पनी ने अनुशासनहीनता का आरोप लगा यूनियन प्रधान को निलम्बित कर दिया। बस उपलब्ध करवाई-बस उपलब्ध नहीं करवाई की जुगलबन्दी में 9 अक्टूबर 02 की रात मजदूर फैक्ट्री के अन्दर रहे। फिर 10 अक्टूबर को यूनियन ने कहा कि मैनेजमेन्ट समझौता वार्ता के लिये तैयार हो गई है इसलिये घर जाओ। हम 11 अक्टूबर को फैक्ट्री पहुँचे तो गेट पर तालाबन्दी का नोटिस पाया। तीन महीने की तालाबन्दी के जरिये मजदूरों को नरम कर कम्पनी ने फिर वही वी आर एस पेश की और यूनियन प्रधान ने पहल कर बड़ी सँख्या में मजदूरों से इस्तीफे लिखवाये। हम नादान थे, कईयों ने तो देखा-देखी में नौकरी छोड़ दी। फिर भी इतने मजदूर नहीं गये जितने कम्पनी चाहती थी। सन् 2003 में ही कम्पनी ने तीसरी बार वही वी आर एस लगाई। इस प्रकार स्थाई मजदूरों की सँख्या 750 से 250 कर दी गई और उत्पादन कार्य में कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने शुरू किये।

''2007 के आरम्भ में डेल्फी कम्पनी की इस फैक्ट्री में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या 2500 हो गई। स्थाई मजदूरों की 8-10 हजार रुपये तनखा की तुलना में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों का वेतन 2700 रुपये। फरवरी 07 के आरम्भ में एक दिन अचानक चार ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर फैक्ट्री में प्रवेश करने की बजाय फैक्ट्री के बाहर बैठ गये और तनखा बढाने को कहा। हम ढाई सौ स्थाई मजदूर यूनियन में हैं और हम फैक्ट्री में गये तथा हम ने काम किया। मजदूरों के दसवें हिस्से से, हम 250 स्थाई मजदूरों से उत्पादन क्या खाक होना था। ठेकेदारों के जरिये रखे ढाई हजार मजदूरों की चाणचक्क हड़ताल से कम्पनी हड़बड़ा गई। कम्पनी ने अन्य कम्पनियों से होड़, फैक्ट्री बन्द करने, फैक्ट्री अन्यत्र ले जाने की बातें की और यूनियन से हड़ताल फौरन खत्म करवाने को कहा। यूनियन लीडरों ने कहा कि हम ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के साथ भी हैं और कम्पनी के साथ भी। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर नये-नये लड़के हैं फिर भी दो दिन बाद मुश्किल से माने। दो दिन उत्पादन ठप्प रहने के बाद यूनियन उन सब को फैक्ट्री में लाई। इधर हम स्थाई मजदूरों में पुणे ट्रान्सफर की बातों ने छँटनी का डर फिर पैदा कर दिया है।''

(1978 में जनरल मोटर की अमरीका स्थित फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में 4 लाख 66 हजार स्थाई मजदूर थे। कहावत बन गई थी कि जनरल मोटर कम्पनी को छींक आती है तो अमरीका सरकार को जुकाम हो जाता है। इस सब में काफी कुछ बदला है। स्थाई नौकरी और बड़ी सँख्या के कारण जनरल मोटर के मजदूरों की तनखा औरों से कुछ अधिक थी, उन से अमरीका में पार्ट्स सप्लायर कम्पनियों के वरकरों की तनखा 1980 में 15% कम थी (सन् 2000 में यह 31% कम)। पार्ट्स के लिये जनरल मोटर ने अपने में से डेल्फी नाम से कम्पनी खड़ी की — 1999 तक डेल्फी जनरल मोटर कम्पनी का ही हिस्सा थी।

अमरीका में जनरल मोटर की फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में स्थाई मजदूरों की सँख्या 1993 में 2 लाख 33 हजार कर जून 06 में यह 70 हजार कर दी गई। डेल्फी कम्पनी ने अक्टूबर 05 में स्वयं को दिवालिया घोषित कर अमरीका स्थित अपनी फैक्ट्रियों में मजदूरों के वेतन आधे से भी कम किये, छुट्टियाँ कम की, स्वास्थ्य तथा सेवानिवृति की स्थितियाँ बदतर की। जनरल मोटर-डेल्फी ने अमरीका में यह सब करने के लिये यूनियन को एक औजार बनाया है।

अमरीका में दिवालिया के प्रावधान और यूनियन को इस्तेमाल करती डेल्फी कम्पनी की 2005 में दुनियाँ-भर में 160 फैक्ट्रियों में एक लाख 80 हजार मजदूर काम करते थे। डेल्फी की अमरीका में 33 फैक्ट्रियाँ, मेक्सिको में, मोरोक्को में, स्पेन में, भारत में, चीन में.... हर जगह कानून अनुसार शोषण के संग-संग कानून से परे शोषण भी — चीन में शंघाई नगर स्थित डेल्फी फैक्ट्री में मजदूर की तनखा 13 हजार रुपये, मोरोक्को में कानून सप्ताह में 44 घण्टे काम का और 4200 मजदूरों (3 हजार महिला मजदूर) वाली डेल्फी फैक्ट्री में हफ्ते में 72 घण्टे काम....)

मारुति कार मजदूर : '' संजय गाँधी की छोटी कार योजना

नहीं चली तो कम्पनी का सरकारीकरण कर सरकार ने सुजुकी कम्पनी को हिस्सेदार बनाया और दिसम्बर 83 में फैक्ट्री से पहली कार निकली। पाँच किलोमीटर घेरे में फैले क्षेत्र में अब मारुति के तीन प्लान्टों के संग सहायक इकाइयाँ हैं और इधर मानेसर में इससे भी बड़े क्षेत्र में मारुति की नई फैक्ट्री शुरू कर दी गई है। आज प्रतिदिन 2200 मारुति गाड़ियाँ बन रही हैं और इस सँख्या में नई फैक्ट्री भारी इजाफा करेगी।

'' मारुति उद्योग में 1983 में भारत सरकार का हिस्सा 76% और सुजुकी कम्पनी का 24% था। कार चल निकली तो 1987 में हिस्सेदारी 60 व 40 की गई और 1992 में आधी-आधी। सुजुकी कम्पनी का हिस्सा 54 प्रतिशत होने के साथ 1998 से उसका मारुति कम्पनी पर पूर्ण-सा नियन्त्रण हो गया।

'' संचालन के लिये 1983 में सरकार ने बी एच ई एल के एक बड़े साहब को मारुति उद्योग का चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया था। यह साहब अपने साथ प्रमुख अधिकारियों के संग इन्टक के एक यूनियन लीडर को भी लाया था। फैक्ट्री हरियाणा में स्थित है पर दिल्ली से 1983 में यूनियन का पंजीकरण करवाया गया और भर्ती-पत्र के साथ कम्पनी यूनियन की सदस्यता भी देती थी। यूनियन लीडर बड़े साहब के साथ अपने सीधे सम्बन्धों के कारण छोटे साहबों को भाव नहीं देता था, हड़का भी देता था। मैनेजरों ने विरोध में गुपचुप कुछ मजदूरों को नेताओं के तौर पर तैयार किया और 1986 में एच एम एस यूनियन के साथ 99 प्रतिशत मजदूर! चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बदला और नये बड़े साहब के नेतृत्व में मैनेजमेन्ट ने कुछ नये लीडरों को एच एम एस से इन्टक में कर यूनियन चुनाव करवाये। पहले वाले साहब से जुड़े इन्टक लीडर की जगह नये लोग लीडर चुने गये और उन्होंने फिर इन्टक से नाता तोड़ कर हरियाणा सरकार से एक स्वतन्त्र यूनियन का पंजीकरण करवाया। नई हरियाणा सरकार से जुड़ी एल एम एस यूनियन ने 1987 में मारुति कम्पनी में हाथ-पैर मारे पर चली नहीं....

'' मारुति कम्पनी ने 1983 में अनुभवी मजदूरों की स्थाई भर्ती आरम्भ की थी। शुरू में सब-कुछ सुजुकी कम्पनी की जापान में फैक्ट्रियों से आता था और गुड़गाँव में उन्हें सिर्फ जोड़ा जाता था। कार के हिस्सों का यहाँ उत्पादन बढा और 1992 में मारुति फैक्ट्री में 4500 स्थाई मजदूर तथा 2000 विभिन्न प्रकार के स्टाफ के लोग हो गये। उत्पादन बढता गया है, कार के अधिकतर हिस्से भारत में ही बनने लगे हैं पर 1992 के बाद मारुति फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की भर्ती बन्द-सी है। बाहर काम करवाना बढा। लेकिन मारुति फैक्ट्री में उत्पादन से सीधे जुड़े काम में 1997 तक स्थाई मजदूर ही थे, ठेकेदारों के जरिये रखे कोई वरकर नहीं थे।

'' मारुति फैक्ट्री में मजदूरों और साहबों की एक जैसी वर्दी, एक जैसा भोजन, बसों में साथ-साथ बैठना.... सब का 15 मिनट पहले पहुँचना और शिफ्ट शुरू होने से पहले 5 मिनट सब द्वारा व्यायाम. ... सुजुकी कम्पनी के प्रभाव वाली इस समानता ने आरम्भ में हम मजदूरों को बहुत प्रभावित किया और हम लोगों ने इसे स्वीकार किया। लेकिन शीघ्र ही अनुभवों ने हमें बताया कि यह समानता दिखावे की समानता है। कम्पनी की इस-उस बात का मजदूर विरोध करने लगे। आरम्भ में इन्टक-एच एम एस-स्वतन्त्र यूनियन के मैनेजमेन्ट वाले लीडरों के जरिये हम ने कम्पनी का विरोध किया। फिर 1994 में एक किस्म के मैनेजमेन्ट-विरोधी लोग यूनियन चुनाव जीते और आगे के चुनाव भी जीतते गये। कम्पनी के हित और मजदूरों के हित, दोनों के हित की बात करने वाले इन यूनियन नेताओं से एक कम्पनी चेयरमैन ने समझौता किया तो उसकी जगह चेयरमैन बने दूसरे साहब ने वह रद्द कर दिया। मारुति मैनेजमेन्ट ने 1997 में उत्पादन से सीधे जुड़े कार्यों में भी ठेकेदारों के जरिये वरकर रखना शुरू कर दिया। फिर उकसाने वाली एक के बाद दूसरी हरकत कर कम्पनी ने सन् 2000 में हड़ताल करवाई....

''मारुति फैक्ट्री में हड़ताल। स्थाई मजदूरों की हड़ताल और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों द्वारा फैक्ट्री में काम। दिल्ली में रात-दिन कई रोज स्थाई मजदूरों का परिवारों समेत जमघट। भाँति-भाँति के संगठनों का समर्थन। बड़ी-बड़ी यूनियनों के बड़े-बड़े लीडरों के भाषण। संसद सदस्यों के भाषण। पूर्व-प्रधान मन्त्री का भाषण। भारत सरकार द्वारा हस्तक्षेप और सरकारी रेडियो-टी वी पर समझौते की घोषणा। मारुति-सुजुकी कम्पनी द्वारा समझौते की बात से इनकार और भारत सरकार द्वारा असमर्थता व्यक्त। कितना कुछ नहीं देखा हम ने उस दौरान।

'' अक्टूबर-दिसम्बर 2000 में स्थाई मजदूरों से हड़ताल करवा कर तथा हड़ताल कुचल कर मारुति कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को नरम किया और फिर सन् 2001 में पहली वी आर एस लागू कर 1250 स्थाई मजदूरों की छँटनी की। इस स्वैच्छिक कही जाती योजना को जबरन मजदूरों पर थोपा गया। फैक्ट्री में जबरदस्ती के संग घर-घर जा कर भी इस्तीफे लिखवाये गये। घर में जबरन इस्तीफा लिखवाने की फिल्म तक सबूत के तौर पर मजदूरों ने न्यायालय में पेश की और न्यायालय 6 साल से विचार कर रहा है! सन् 2003 में फिर वी आर एस के जरिये मारुति फैक्ट्री से 1250 स्थाई मजदूरों की छँटनी की गई। ढाई हजार स्थाई मजदूरों को नौकरी से निकाल कर कम्पनी ने उत्पादन कार्य में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की सँख्या में भारी वृद्धि की है। आज मारुति कार की पहली फैक्ट्री में 1800 स्थाई मजदूर

और ठेकेदारों के जरिये रखे 4000 वरकर उत्पादन कार्य में हैं। स्थाई मजदूर की तनखा 25 हजार रुपये और वही काम करते ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को इसका पाँचवाँ-सातवाँ हिस्सा।'' *(वैसे, मारुति कार का अधिकतर काम बाहर करवाया जाता है, फरीदाबाद-गुड़गाँव-ओखला-नोएडा में हजारों जगह करवाया जाता है। बहुत जगहों पर वहाँ की सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। ऐसे मजदूरों की सँख्या भी कम नहीं है जिन्हें न्यूनतम वेतन का आधा भी नहीं दिया जाता, 800-1000 रुपये तनखा में मारुति कार का काम करवाया जा रहा है।)*

और फरीदाबाद में

लखानी रबड़ उद्योग मजदूर : ''प्लॉट 131 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अनेक प्रकार की और विभिन्न नाप की 70 हजार जोड़ी चप्पल प्रतिदिन बनती हैं। मोल्डिंग विभाग में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। डिब्बे बनाने वालों की 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है। हवाई चप्पल बनाती 16 लाइनों पर सुबह 8 से रात 10½-11 बजे तक की एक शिफ्ट है। स्थाई व कैजुअलों को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से — मार्च के ओवर टाइम के पैसे 25 मई को जा कर दिये, अप्रैल के आज 31 मई तक नहीं दिये हैं। कम्पनी 15 घण्टे में भी एक कप चाय तक नहीं देती।

'' लखानी रबड़ में कम्पनी ने 4 ठेकेदारों के जरिये 60 मजदूर रखे हैं। मोल्डिंग विभाग से लाइनों पर शीटें पहुँचाते 16 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 9 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं — हाजिरी नहीं लगती। चप्पलों से भरे बड़े डिब्बे बगल के प्लॉट स्थित गोदाम में पहुँचाते 20 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 10 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं — हाजिरी नहीं लगती। पाउडर, प्लास्टिक दाना, रबड़ की 5-6 बड़ी गाड़ी रोज फैक्ट्री में आती हैं और इन्हें खाली करते 13 मजदूरों की ड्युटी सुबह 8 से रात 8 बजे तक, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, कार्ड नहीं — हाजिरी नहीं लगती। सब को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। सिर्फ 10 सफाई कर्मियों की 8-8 घण्टे ड्युटी, ई.एस.आई., पी.एफ., कार्ड हैं — हाजिरी लगती है। डिब्बे वाले प्लान्ट में बिना किसी ठेकेदार के भी ठेकेदार के जरिये रखे वरकर हैं.... चप्पलों के फीते बाहर से कट कर आते हैं।

''लखानी रबड़ में 250 स्थाई और 250 कैजुअल वरकर हैं। स्थाई और कैजुअलों की तनखा में 200 रुपये का फर्क था — अप्रैल की तनखा में स्थाई मजदूरों के 200 रुपये और बढा दिये। कैजुअलों का 6 महीने में ब्रेक करते हैं पर ऐसे कैजुअल भी हैं जो महीने-भर के दिखाये ब्रेक के दौरान भी फैक्ट्री में काम करते रहते हैं (उन्हें उस दौरान की पूरी तनखा दी जाती है — ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि नहीं काटी जाती)।

''मोल्डिंग विभाग में तो पूरा काम ही गन्दा है — पाउडर उड़ता है, रबड़ पकती है। लाइनों पर चप्पल में सुराख करने वाला काम भी गन्दा है। गर्मियों में तो मोल्डिंग में बहुत ही बुरा हाल हो जाता है — साँस की तकलीफें और टी.बी. काफी लोगों को हैं। फैक्ट्री में हाथ कटते हैं — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भर कर ई.एस.आई. भेज देते हैं।

''लखानी रबड़ में 50 हजार रुपये से ज्यादा तनखा लेने वाले 3 बड़े लोग सुबह 7 से रात 10 बजे तक फैक्ट्री में रहते हैं। अधिकतर सुपरवाइजर-मैनेजर सुबह 8 से साँय 6 तक और परचेज वाले रात 8-9 बजे तक फैक्ट्री में रहते हैं। स्टाफ वालों में दफ्तर वाले 30 लागों की ही सुबह 9 से साँय 5 तक की ड्युटी है।''

ए बी बी मजदूर : ''32 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में बिजली की मोटरें बनाते 150 वरकरों में 35 स्थाई हैं और बाकी को 3 ठेकेदारों के जरिये रखा है। एक ठेकेदार के जरिये रखे 15 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, 8 घण्टे के 70 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दूसरे ठेकेदार के जरिये रखे 10 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई., पी.एफ., साप्ताहिक छुट्टी। तीसरे ठेकेदार के जरिये रखे 80 वरकरों को 8 घण्टे के 200 रुपये, ई.एस.आई., पी.एफ., साप्ताहिक छुट्टी, वर्दी-जूते, प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।''

प्रभा उद्योग वरकर : ''प्लॉट 43 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में अब लैट्रीन साफ रहती हैं — पहले इतनी गन्दी रहती थी कि फैक्ट्री के बाहर जाना पड़ता था। हम मजदूरों के प्रतिरोध ने इधर सुपरवाइजरों की गालियों को भी लगाम लगा दी है। मार्च तक हैल्पर की तनखा 1800 रुपये थी, अप्रैल से 2000 रुपये कर दी है — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में खारा पानी पीना पड़ता है। भर्ती के समय तनखा नहीं बताते, 2-3 दिन बाद बताते हैं और कम तनखा के कारण जो नौकरी छोड़ जाते हैं उन्हें 2-3 दिन किये काम के पैसे नहीं देते।''

पंजाब रोलिंग मिल वरकर : ''प्लॉट 149-50 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में प्रवेश का समय सुबह 8 बजे निश्चित है लेकिन फैक्ट्री से निकलने का कोई समय तय नहीं है। फैक्ट्री में बहुत गर्म काम है और जबरन रात 10-11 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट। फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में से 8-10 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाकी सब को 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2400-2500 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं — कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती और प्रायवेट में इलाज करवाती है।''

अम्बिका मजदूर : ''प्लॉट 30/3 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1900 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ड्युटी 12 घण्टे की — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बोर्ड पर तनखा 7 तारीख से पहले लिख रखा है पर देते 20 तारीख के बाद हैं। साप्ताहिक छुट्टी के दिन जबरन ड्युटी। पचास मजदूरों में 4 महिलायें और 5 बच्चे भी हैं। फैक्ट्री में लैट्रीन-बाथरूम नहीं हैं और जिस दिन टैंकर नहीं आता उस दिन पीने का पानी भी नहीं। फर्स्ट एड का सामान नहीं — चोट लगने पर बाहर इलाज। यहाँ व्हर्लपूल फ्रिज की ट्रे बनती हैं।''

ओरियन्ट फैन वरकर : ''प्लॉट 11 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 50-60 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे हम 150 मजदूर काम करते हैं। हम में 20 के ही जॉब कार्ड और ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं — 130 के जॉब कार्ड नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। हम में हैल्पर को 8 घण्टे के 80 रुपये। स्थाई व कैजुअल को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से पर हमें सिंगल रेट से। वेतन भी देरी से — हमें अप्रैल की तनखा 16 मई को दी।''

क्या फर्क है पड़ता ?

जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या फिर उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहे हम बाखुशी या बेदिली से
कर दें कुर्बान
अपनी जिन्दगी के
सबसे खूबसूरत साल
काम की वेदी पर
मैं पूछता हूँ अपने अर्थशास्त्री और
राजनीतिविज्ञान के दोस्तों से
क्या फर्क पड़ेगा
चाहे हम
ज्यादा करें पैदा और खर्च भी ज्यादा ?
कम करें पैदा और खर्च भी कम ?
चाहे हम ज्यादा कुशलता से उत्पादन
बढायें और आपस में बराबर बाँटें ?
या अक्षम हो कर उसे बाँटें असमान ?

जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहे हम बाखुशी या बेदिली से
चढायें अपनी जिन्दगी के
सबसे सुन्दर साल
काम की वेदी पर
मैं पूछता हूँ अपने समाजशास्त्री और
इतिहासकार दोस्तों से
क्या फर्क पड़ेगा
हमारे काम के पिरामिड
कम्पनियाँ, देश, परिवार या पहचानें
ज्यादा शान्तिपूर्वक और प्रेम से
आपस में मिलें-जुलें
या फिर खून की नदियों से हो कर

''समय बतायेगा सबकुछ !''
कहते हैं वे
माफ करना यार
समय कुछ नहीं बतायेगा
जब तक हम
गुलाम हैं या
बँधवा किसान
या उजरती मजदूरी के गुलाम
चाहे बाखुशी या बेदिली से
डूबे रहें अपने वजूद के
सबसे सक्रिय सालों के
बिकने की शर्तों की फिक्र में
मैं पूछता हूँ अपने साहित्यकार और
वैज्ञानिक दोस्तों से
क्या फर्क है पड़ता
चाहे हम अपनी अभी की जिन्दगी
को भविष्य के ऐतिहासिक उपन्यास के
रूप में जियें और देखें
या अतीत की
अपने सामने आकार लेती
वैज्ञानिक-फन्तासी के
रूप में।
— गंगादीन लोहार

दिल्ली–फरीदाबाद–गुड़गाँव–नोएडा– गाजियाबाद–सोनीपत–बहादुरगढ में फैक्ट्री में काम करते किसी भी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है कि वह मजदूर सरकार तथा कम्पनी के अनुसार फैक्ट्री में है ही नहीं।

कुछ बातें दिल्ली से

हौज रानी में कब्र में काम करता मजदूर: ''मालवीय नगर के पास हौज रानी में बेसमेन्ट में फैक्ट्रियाँ कुछ ज्यादा ही हैं। बाहर से फैक्ट्री दीखती ही नहीं — ऊपर किरायेदार रहते हैं। फैक्ट्रियों के नाम हैं ही नहीं, सिर्फ मकान सँख्या है। हम मजदूरों को हाजिरी कार्ड देते हैं पर कार्डों पर भी किसी कम्पनी का नाम नहीं होता। कपड़े की कटिंग, सिलाई, कढाई, फिनिशिंग, पैकिंग वाली इन फैक्ट्रियों में 50 से 150 मजदूर काम करते हैं। यह कोई छुपी हुई बातें नहीं हैं, इन्हें सब जानते हैं — सरकारी अधिकारी इन फैक्ट्रियों में कभी नहीं आते।

''बेसमेन्ट में तकलीफ ही तकलीफ हैं — हवा गर्म, कपड़ों की गर्द, रसायनों की बदबू, घुटन। इन फैक्ट्रियों में पीने के पानी की भारी समस्या रहती है, हमें अक्सर खरीद कर पानी पीना पड़ता है। फैक्ट्रियों में भोजन करने के लिये स्थान नहीं हैं और अन्यथा भी कई मजदूर ढाबों पर महीने में एक समय भोजन के 300 रुपये वाला खाना खाते हैं। हौज रानी में किराये बहुत ज्यादा हैं इसलिये अधिकतर पुरुष मजदूर फैक्ट्रियों में ही रहते हैं। बेसमेन्ट कब्र ही है........ हजारों मजदूर कब्रों में काम करते और रहते हैं।

'' हौज रानी की बेसमेन्ट फैक्ट्रियों में महिला मजदूरों की सँख्या भी काफी है। महिलाओं की शिफ्ट सुबह 9½ से साँय 6½ की है और पुरुषों की सुबह 9½ से रात 9½ की। लेकिन कारीगरों को पीस रेट पर रखते हैं इसलिये दो पैसे अधिक के फेर में रफ्तार तेज करने के संग समय भी अधिक लगाते हैं। धागा काटने वाले पुरुष हों चाहे महिला, यह मजदूर तनखा पर रखे जाते हैं और वेतन है 1200-1800 रुपये महीना। चैकर और प्रेसमैन की तनखा 2800-3000 रुपये। जिन्हें मास्टर कहते हैं वे यहीं के बहुत पुराने वरकर हैं और इन लाइनमैन, फिनिशिंग मैन, कटिंगमैन की तनखा 4200-7000 रुपये है। तनखा वालों को सिंगल रेट से ओवर टाइम के पैसे देते हैं। हौज रानी की कब्रों में काम करते किसी भी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं है, पी.एफ. नहीं है।

''इन बेसमेन्ट फैक्ट्रियों को फैब्रिकेशन युनिट कहते हैं। इनके डायरेक्टर लोग गुड़गाँव और ओखला की कम्पनियों से काम लाते हैं। डायरेक्टर साहबों और कारीगरों के बीच पीस रेट पर विवाद होते ही रहते हैं। कल, 30 जून को ही एक फैक्ट्री में कारीगरों ने पीस रेट को कम पा कर काम बन्द कर दिया। फैक्ट्री में 3-4 घण्टे उत्पादन बन्द रहा। डायरेक्टर ने रेट 4½ की जगह 6½ रुपये प्रति पीस किया तब काम शुरू हुआ — कारीगरों की माँग 7 रुपये की थी।''

नूतन प्रिन्टर्स वरकर : ''एफ-89/12 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मुख्यतः केन्द्र सरकार का काम होता है — एन.सी.ई.आर.टी. और ओपन स्कूल की किताबें छपती हैं। एक रंग की छपाई करने वाली 4 एच एम टी मशीनें हैं। बेसमेन्ट में डाई कटिंग तथा पेपर कटिंग मशीनों के संग चार रंग में छपाई करने वाली एक प्लान्टा मशीन तथा एक याक्यामा मशीन हैं। नियम अनुसार एक शिफ्ट के लिये 40 मजदूर होने चाहियें परन्तु यहाँ तो 25 मजदूरों से जबरदस्ती ढाई शिफ्ट काम करवाया जा रहा है.....

''नूतन प्रिन्टर्स में सोमवार को सुबह 9½ शिफ्ट आरम्भ होती है और रात 9 बजे छुट्टी होती है। मंगलवार को सुबह 9½ काम शुरू करते हैं और .... और बुधवार को रात 9 बजे जा कर छुट्टी होती है। वीरवार को सुबह 9½ बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और ... और शुक्रवार को रात 9 बजे छुट्टी। शनिवार सुबह 9½ काम शुरू करते हैं और.... और रविवार को रात 9 बजे जा कर छुट्टी होती है। बीमार होने पर भी जबरन 35½ घण्टे फैक्ट्री में रोकते हैं....

''नूतन प्रिन्टर्स में 35½ घण्टे ड्युटी के दौरान कम्पनी 35 रुपये भोजन के देती है। भोजन अवकाश दोपहर 1 बजे, फिर रात 9 से 10 और फिर रात को कोई ब्रेक नहीं होता, अगले दिन दोपहर 1 बजे भोजन अवकाश। कम्पनी 11½ घण्टे, 35½ घण्टे के दौरान एक कप चाय भी नहीं देती — मशीनें चलती रहती हैं और आपस में भाईचारे में हम बीच-बीच में चाय-नाश्ते के लिये जाते हैं......

''नूतन प्रिन्टर्स कम्पनी एच एम टी मशीनों पर 12 घण्टे में 30 हजार दाब के हिसाब से 35½ घण्टे में 90 हजार दाब माँगती है। प्लान्टा पर 50 हजार के हिसाब से डेढ लाख दाब और याक्यामा पर 12 घण्टे में 40 हजार के हिसाब से 35½ घण्टे में 1 लाख 20 हजार दाब कम्पनी माँगती है। इस प्रकार निर्धारित उत्पादन के पूरा नहीं होने की आड़ में कम्पनी 35½ घण्टे को 32 घण्टे करार देती है। मैनेजर फैक्ट्री के ऊपर रहता है, डरते हुये ही सही पर मजदूर रात को दो घण्टे सो ही लेते हैं।

''नूतन प्रिन्टर्स में यह सामान्य स्थिति है, साल के बारहों महीने ऐसा होता है। कभी एक मशीन पर काम नहीं होता तो दूसरी पर लगा देते हैं। कम्पनी 25 मजदूरों से 100 मजदूरों के लिये निर्धारित उत्पादन करवाती है। घण्टे काटने पर भी महीने में ओवर टाइम 200-250-270 घण्टे हो जाता है। ओवर टाइम का भुगतान डबल की बजाय सिंगल रेट से है पर फिर भी हर मजदूर की यह राशि तनखा के बराबर, तनखा से ज्यादा हो जाती है.....

'' नूतन प्रिन्टर्स कम्पनी दस्तावेजों में ओवर टाइम को नहीं दिखाती। ऊपर से कम्पनी रजिस्टर में छुट्टियाँ भरती रहती है, अनुपस्थितियाँ दर्ज करती रहती है। महीने में तीसों दिन काम, एक महीने में ढाई महीने शिफ्ट काम और रजिस्टर में 15-20 दिन की ही हाजिरी। इस प्रकार महीने में 15-20 दिन उपस्थिति दर्शा कर उसी पर कम्पनी भविष्य निधि कार्यालय में पी. एफ. राशि जमा करती है। जबकि पी.एफ. के पैसे हम मजदूरों की पूरे महीने की तनखा पर काटे जाते हैं.....

*'' **नूतन प्रिन्टर्स*** में कानूनी तौर पर मजदूर को ग्रेच्युटी राशि से वंचित करने के लिये 5 वर्ष पूरे होने से 3-4 महीने पहले हिसाब कर देते हैं। यानी, मजदूर फैक्ट्री में काम करता रहता है पर रजिस्टर में नाम काट देते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. बन्द कर देते हैं। चार-छह महीने बाद फिर रजिस्टर में नाम दर्ज कर ई.एस. आई. व पी.एफ. काटने लगते हैं। इस प्रकार तीन-तीन बार नाम कटे और फिर जुड़े वाले लोग भी फैक्ट्री में हैं।

''नूतन प्रिन्टर्स में हैल्पर की तनखा 2000 रुपये — जिन हैल्परों से मशीनें चलवाते हैं उनकी 2500 रुपये। प्लान्टा ऑपरेटर की तनखा 10,000 और एच एम टी ऑपरेटर की 4500 रुपये। असिस्टेन्ट ऑपरेटरों की तनखा 3500-4500 रुपये। वर्ष में 22 सवेतन छुट्टियों की जगह कम्पनी 15 ही देती है और कैजुअल छुट्टियाँ देती ही नहीं। चौकीदार-चपरासी-चाय बनाने वाले एक मजदूर को रोज 24 घण्टे की ड्युटी के बदले महीने में 4000 रुपये। फैक्ट्री में बिजली कर्मी नहीं है, पेपर कटिंग वाले से जबरन यह काम भी....''

एम.डी. ओवरसीज मजदूर : ''एफ-45 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों पर कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कढाई का काम होता है। फ्रेमर की तनखा 3000, ऑपरेटर की 2800 और हैल्पर की 1800 रुपये है। ओखला में कम्प्युटर इम्ब्राइडरी का काम 40 फैक्ट्रियों में होता है और इन में से 30 में ऑपरेटरों की तनखा 2800 रुपये ही है — ओरियन्ट फैशन, ओरियन्ट क्राफ्ट में तनखा 3200, 3300 रुपये पर कई शर्तें हैं। कढाई के लिये माल फरीदाबाद से आता है। फैक्ट्री में काम करते हम 20 मजदूरों में से किसी की भी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती। भोजन अवकाश का आधा घण्टा काट कर 3½ घण्टे का ओवर टाइम देते हैं — पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से।''

ई.एस.आई. अस्पताल, ओखला से सटा कर सरकार गन्दगी की पहाड़ी बना रही है। पुराने और रोज ट्रकों से गिराये जाते नये कचरे की बदबूदार हवा को कूलर वार्डों के अन्दर खींच कर बीमारों को नई बीमारियाँ देते हैं। कर्मचारियों-अधिकारियों की बदतमीजी, वार्डों में- बाथरूमों में गन्दगी, सरकार निर्मित कचरे की पहाड़ी में अब बरसात की करामात .... यह सब है ओखला ई.एस.आई. अस्पताल में। मजदूरों के उपचार-स्थल में तन के साथ मन को बीमार करने का प्रबन्ध है।

गुड़गाँव से –

ब्रेक्स इण्डिया मजदूर : ''प्लॉट 873-874 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 30 स्थाई और एरिस कोरपोरेट ठेकेदार के जरिये रखे 175 वरकर मारुति कारों के डिस्क ब्रेक, ड्रम ब्रेक, बूस्टर बनाते हैं। स्थाई मजदूर की तनखा 8-9 हजार रुपये, 1998 के बाद किसी को स्थाई नहीं किया है। ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों की तनखा 2648 रुपये है — पुराने 25 की 3248 रुपये। सामान कम्पनी की तमिल नाडु में मुख्य फैक्ट्री से आता है और यहाँ 4 लाइनों पर असेम्बली होती है। खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। कमर में-पैर में दर्द होता है। ज्यादातर लोग 2-4-6 महीने में नौकरी छोड़ जाते हैं।

''ब्रेक्स फैक्ट्री में तनखा से पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर 2-4-6 महीनों में नौकरी छोड़ने वालों के फण्ड निकालने के फार्म भरते ही नहीं। महीने में हम 50-80 घण्टे ओवर टाइम करते हैं जिसके पैसे सिंगल रेट से देते हैं।

'' शिफ्टें आरम्भ होने से दस मिनट पहले ब्रेक्स फैक्ट्री में बेसमेन्ट में सब का 5 मिनट व्यायाम होता है। फिर रोज किसी मजदूर को वहाँ टाँग रखी गुणवत्ता नीति पढने को बुलाते हैं — बाकी उसके पीछे दोहराते हैं। क्वालिटी के बारे में सुपरवाइजर-मैनेजर समझाते हैं। मजदूरों को काम पर भेज कर साहबों की फिर अलग सभा होती है।

''ब्रेक्स फैक्ट्री में चाय कम्पनी देती है, गर्मियों में 2½ बजे लस्सी भी। भोजन अच्छा रहता है — 4 रुपये मजदूर के तथा 38 रुपये कम्पनी के मिला कर बाहर से मँगाया जाता है। इधर कम्पनी ने अपनी मर्जी का नियम बना कर हमें बोनस देना बन्द कर दिया है।''

डेल्फी वरकर : '' 42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के सम्मुख समस्या ही समस्या हैं। हमें सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते — तनखा ही 2428 रुपये बताते हैं और एक दिन की छुट्टी करने पर इन में से 300 रुपये उपस्थिति भत्ते के हैं कह कर काट लेते हैं। हमारे ओवर टाइम के घण्टों में से 30-40 घण्टे हर महीने गायब कर देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से, 12½/13½ रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से।

उत्पादन कार्य में मजदूर 4 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं, सेक्युरिटी गार्ड भी ठेकेदार के जरिये रखे हैं। ह्युमन रिसोर्स एजेन्सी के जरिये रखे 700 मजदूरों के पी.एफ. के पैसे भी खा जाते हैं — छोड़ने/निकालने पर फार्म नहीं भरते, गाजियाबाद का ऊपर से झमेला।

''डेल्फी में सुबह 8 वाली शिफ्ट के लिये हमें 6½ चलना पड़ता है — कैन्टीन में हमारे लिये चाय 7¼ तक, उसके बाद स्थाई मजदूरों को ही। और फिर, आठ बजे की शिफ्ट में हमें पौने आठ काम शुरू करना पड़ता है। कम्पनी बसें सिर्फ स्थाई के लिये हैं।

'' डेल्फी फैक्ट्री में काम का भारी बोझ है और खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। लाइन बन्द होने पर ही हट सकते हैं। लाइन बहुत तेज चलाते हैं। पानी-पेशाब के लिये अनुमति-पत्र की आवश्यकता दो महीने से खत्म है पर फिर भी पानी-पेशाब की दिक्कत बनी हुई है। बीमार होने पर बदले में बन्दा माँगते हैं, बाहर नहीं जाने देते, आधे दिन की छुट्टी नहीं देते। फैक्ट्री के अन्दर दवाई के लिये भी पहले सुपरवाइजर-टीम लीडर से पर्ची लाने को कहते हैं। सुपरवाइजर गाली देते हैं।

''डेल्फी फैक्ट्री में शिफ्ट महीने में बदलती है। रात में लगातार काम करने से हम बीमार पड़ जाते हैं। तनखा में से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर .... टरमिनेशन मशीनों पर अँगूठा-उँगली कट जाते हैं — ई.एस.आई. नहीं ले जाते, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते, मजदूर को कोई क्षतिपूर्ति नहीं। शिकायत पर कम्पनी कहती है कि ठेकेदार से बात करो। धमकी मिलती हैं। पिछले वर्ष के आरम्भ तथा अन्त में फैक्ट्री से छूट कर कमरे लौटते दो मजदूर सड़क पर घायल हुये। उन्हें ई.एस.आई. नहीं ले गये, ठेकेदार प्रायवेट अस्पताल ले गये। रक्त हम मजदूरों ने दिया पर वे नहीं बचे। ई.एस.आई. से उनके परिवार की पेन्शन नहीं हुई और डेल्फी कम्पनी ने मृत मजदूरों के परिजनों को कुछ नहीं दिया।''

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर मजदूर : ''प्लॉट 1 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों और ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों की भरमार है — उत्पादन कार्य में दो ठेकेदारों के जरिये तीन हजार मजदूर, सफाई कार्य के लिये 200 वरकर, दो कैन्टीनों में 100 लोग, 50 से ज्यादा सेक्युरिटी गार्ड (ग्रुप फोर), साहबों के लिये ठेकेदार के जरिये 40 से ज्यादा ड्राइवर तथा कारें, मजदूरों को लाने-ले जाने के लिये 150 ड्राइवर व बसें आदि-आदि। होण्डा कम्पनी अब ट्रेनी रखती ही नहीं और स्थाई मजदूर मुख्य-मुख्य कार्य करते हैं। फैक्ट्री में उत्पादन का ज्यादातर काम ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकर करते हैं। हम आई टी आई किये होते हैं पर हमारी ट्रेड का काम फैक्ट्री में हमें नहीं देते। छह महीने बाद 8 महीने का ब्रेक तो करते ही हैं। ऐसे में यहाँ नौकरी करना हमें कहीं का नहीं छोड़ता पर मजबूरी में फिर भी करते हैं। इधर पिछले महीने से ठेकेदार ने हम पर निगाह रखने के लिये लोग छोड़ रखे हैं, स्कूटर प्लान्ट में ही दस हैं। बैठा दिखते ही पहचान-पत्र खोस लेते हैं, बाहर कर दिया जाता है। इससे हर समय दहशत रहती है।

''होण्डा फैक्ट्री में हमारी तनखा 3249 रुपये है, इसमें 1000 रुपये किसी खाते से तथा 775 रुपये पूर्ण उपस्थिति भत्ता के तौर पर जोड़ते हैं। फैक्ट्री में काम का बहुत ज्यादा दबाव रहता है पर इस 775 रुपये के लालच में हम बहुत कुछ छोड़ कर भी ड्युटी करते हैं। एम एस विभाग में पूरे दिन धूप में काम करना पड़ता है। और फिर पेन्ट शॉप, मशीन शॉप, वैल्ड शॉप में महीने में 70-100 घण्टे ओवर टाइम — भुगतान दुगुनी दर से है इसलिये भारी परेशानी के संग 'चाहत' भी रहती है।

'' होण्डा फैक्ट्री में हमारी तनखा से 390-400 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं। हम में से किसी की पे-स्लिप पर पी.एफ. नम्बर होता है तो किसी की पर नहीं होता। पी.एफ. में भारी गड़बड़ है — बड़े ठेकेदार ने तो दिल्ली में एक स्कूल को प्रमुखता दे कर ऐसा जाल रचा है कि होण्डा में काम कर चुके 95 प्रतिशत मजदूरों को ब्रेक पर उनका पी.एफ. का पैसा नहीं मिला।''

कुमार प्रिन्टर्स वरकर : '' प्लॉट 24 सैक्टर-5 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 175 स्थाई तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर रोज 12-16 घण्टे ड्युटी करते हैं। फैक्ट्री 24 घण्टे चलती है, रविवार सुबह 8 से साँय 4.40 तक ही। स्थाई को ओवर टाइम का भुगतान डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से। महीने में ओवर टाइम के 135-225 घण्टे हो जाते हैं। फैक्ट्री में कम्प्युट्रीकृत मशीनों से कॉलगेट, ओडोमास, मोबाइल फोन आदि-आदि की पैकिंग वाले गत्ते-कागज की छपाई होती है। छपाई की कई मशीनों पर कई काम के संग कटिंग, डाई नोचिंग, वार्निश, पैकिंग, सफाई के काम होते हैं। एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते — एक मजदूर का अँगूठा कटा तो ई.एस.आई. ले जाने की बजाय प्रायवेट में इलाज करवा कर उसे निकाल दिया। इलाके में लूटपाट को देखते हुये रात 12-2 बजे फैक्ट्री से छूटते मजदूर 4 से कम होते हैं तो कम्पनी उन्हें गाड़ी में भेजती है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा में से पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर दो साल बाद छोड़ते हैं तब भी फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते। आई एम टी मानेसर स्थित नब्बे प्रतिशत फैक्ट्रियों में मजदूरों की पी.एफ. राशि बड़े पैमाने पर हड़पी जा रही है।''

फरीदाबाद में

शिवालिक ओवरसीज मजदूर : ''प्लॉट 31 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में एक शिफ्ट है और मई में पूरे महीने हमें सुबह 9 से रात 2 बजे तक ड्युटी करनी पड़ी। अब काम कम है इसलिये सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है। रात 2 बजे तक रोकते हैं तब 17 रुपये भोजन के देते हैं पर तीन महीने बाद। महीने के तीसों दिन ड्युटी करनी पड़ती है। फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 1600 रुपये तथा ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और कारीगर पीस रेट पर। फैक्ट्री में कोई भी मजदूर स्थाई नहीं है — 500 कैजुअल वरकर हैं जिनमें हैल्परों की तनखा 2484 रुपये है। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. कम्पनी की अंक विद्या अनुसार। कैजुअल वरकर का नम्बर हर महीने बदला जाता है और यह अंक 100 से कम हो जाता है तब कम्पनी ई.एस.आई. व पी.एफ. काटना शुरू करती है। छह महीने तक तनखा से यह पैसे काट कर कम्पनी फिर इन्हें काटना बन्द कर देती है — मजदूर लगातार फैक्ट्री में काम जारी रखता-रखती है। तीन-चार महीने बाद वरकर का अंक फिर 100 से कम हो जाता है तब फिर कम्पनी तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटना शुरू कर देती है।''

ए क्यू टैक्नो इन्डस्ट्रीज वरकर : ''प्लॉट 209 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में से 25 की ही ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। अप्रैल माह की तनखा हमें आज 14 जून तक नहीं दी है पर मई का वेतन 11 जून को दे कर कम्पनी अप्रैल की तनखा किस्तों में देने की कह रही है। हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये और ऑपरेटरों की 2400-2600 रुपये। फैक्ट्री में पीने के पानी की भारी समस्या है — कम्पनी तीन दिन में एक बार पानी मँगाती है। हमें फैक्ट्री के बाहर जा कर पानी ढूँढना पड़ता है। फैक्ट्री में भारी प्रदूषण है पर एग्जास्ट फैन एक भी नहीं लगाया है।''

कृष्णा इन्टरप्राइजेज-मैग्नेट इंजिनियरिंग मजदूर : ''संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल इस्टेट में प्लॉट 25 तथा 8 स्थित फैक्ट्रियों में हैल्परों की तनखा 2000 रुपये तथा ऑपरेटरों की 2600-3000 रुपये। दोनों की मैनेजमेन्ट एक है और इन में काम करते 50 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। बरसों से काम कर रहे मजदूर मैग्नेट इंजिनियरिंग से नौकरी छोड़ते हैं तो उन्हें प्रति वर्ष 15 दिन का हिसाब भी नहीं देते और कहते हैं कि यह फैक्ट्री तो बन्द कर दी है जबकि आँखों के सामने वह चल रही है।''

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर : ''प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी जिन्हें स्वयं रखती है उन्हें 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के तीन हजार रुपये देती है। महीने के तीसों दिन काम करना पड़ता है — 4 दिन को कम्पनी ओवर टाइम कहती है, भुगतान सिंगल रेट से। भोजन अवकाश में बाहर नहीं जाने देते और कैन्टीन में भीड़ बहुत होती है — खड़े हो कर भोजन करना पड़ता है। मई माह की तनखा हमें आज 15 जून तक नहीं दी है — 6 ठेकेदारों के जरिये रखे 700 वरकरों को तो वेतन और भी देरी से देते हैं।''

हरियाणा ग्लोबल मजदूर : ''20/3 मथुरा रोड़ पर नोर्दन कम्पलैक्स में कम्पनी के दो प्लान्टों में 450-500 मजदूर काम करते हैं। भर्ती कम्पनी करती है, तनखा कम्पनी देती है, उत्पादन तय कर रखा है, काम 4 फोरमैन करवाते हैं और इन फोरमैनों को ही ठेकेदार कह कर कम्पनी 20-30 को छोड़ कर बाकी सब को ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर कहती है। फोरमैन उर्फ ठेकेदार उत्पादन के लिये हर समय हम मजदूरों के सीने पर सवार रहते हैं। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, पावर प्रेसों पर हाथ कटते हैं। घायल मजदूरों द्वारा जगह-जगह शिकायतों से दिक्कतें बढने पर कम्पनी ने जनवरी से सब मजदूरों पर ई.एस.आई. व पी.एफ. के प्रावधान लागू किये हैं। सुबह 8½ से रात 8 तथा रात 8½ से अगले रोज सुबह 8 बजे तक जबरन रोकते थे और सुबह वालों को रात 11½ तक रोकने पर 15 रुपये रोटी के देते थे। फरवरी में सुबह 7 से साँय 3½ तथा साँय 3 से रात 11 तक की शिफ्टें की लेकिन मार्च में सुबह 7 वालों को रात 11 बजे तक रोकने लगे हैं। कम्पनी 15 घण्टे रोकती थी तब रोटी के लिये 15 रुपये देती थी परन्तु अब 16 घण्टे रोकती है तब हमारी रोटी के पैसे खा गई है। रविवार को सुबह 7 से साँय 5 बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 1800 से बढा कर 2100-2200 रुपये कर दी है पर हर महीने कुछ मजदूरों के पैसों में 100-200 रुपये की गड़बड़ी की जाती है। पूरे उत्पादन का निर्यात होता है।''

एवन पाइप वरकर : ''प्लॉट 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 16 स्थाई मजदूर, 30 कैजुअल वरकर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 100 वरकर काम करते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे सब मजदूरों की तनखा से काटते हैं लेकिन 5-6 महीने वालों के पैसे ठेकेदार जमा ही नहीं करता — निकालने अथवा छोड़ने पर पी.एफ. राशि निकालने का फार्म ठेकेदार भर कर ही नहीं देता।''

सेक्युरिटी गार्ड : '' जवाहर कॉलोनी में कार्यालय वाली शिवम् सेक्युरिटी कम्पनी गार्डों को 12 घण्टे रोज और महीने के तीसों दिन ड्युटी के बदले में 2200-2400 रुपये देती है। हम गार्डों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

नूकेम केमिकल वरकर : '' 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में अप्रैल माह की तनखा हम मजदूरों को 7 जून को जा कर दी। मई का वेतन आज 13 जून तक नहीं दिया है। स्टाफ को तो कम्पनी ने अभी तक मार्च की तनखा भी नहीं दी है।''

गैलेक्सी इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : '' प्लॉट 2 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है, बाहर जा कर पीना पड़ता है। साहब गाली देते हैं।''

जे बी एम इन्डस्ट्रीज वरकर : '' प्लॉट 269 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 800 मजदूर काम करते हैं और 6 माह से तनखा देरी से दी जा रही है — 12 तारीख के बाद। अप्रैल माह में स्थाई मजदूरों के संग कैजुअल वरकरों को भी वार्षिक वेतन वृद्धि दी जाती थी। इस वर्ष स्थाई को तो यह दे दी पर कैजुअलों को नहीं। कम्पनी हैल्परों को 2000 रुपये तनखा देती थी — इस तथ्य के उजागर होने और फैलने पर दो माह से इसे बढा कर 2560 रुपये कर दिया है।''

प्रीमियर प्लास्टिक मजदूर : '' प्लॉट 41 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में काम करते 100 से ज्यादा वरकरों में 8-10 ही स्थाई हैं। हैल्परों की तनखा 2000-2100 रुपये।''

घायल होने पर

जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में घायल हुये मजदूर की माँ : ''पति की 13-14 साल पहले हुई मृत्यु के बाद मैं बच्चों को पालने रिश्तेदारों के पास फरीदाबाद आई। मेरी मदद के लिये बड़े बेटे राहुल ने चावला कॉलोनी में कपड़े की दुकान पर काम किया, छोटा बेटा मोनू जूते की दुकान पर काम कर रहा है। इस साल पहली जनवरी से राहुल प्लॉट 116-117 सैक्टर-25 स्थित जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में लगा। बड़ी फैक्ट्री है, 500 से ज्यादा मजदूर हैं, डाई कास्टिंग का काम होता है। कभी दिन में तो कभी रात को पर रोज 12 घण्टे काम और कभी-कभी तो बेटे को फैक्ट्री में 36 घण्टे भी काम करना पड़ता था। राहुल 17 फरवरी को सुबह ड्युटी पर गया था और रात को नहीं लौटा तो मैंने सोचा कि कम्पनी ने रोक लिया होगा। राहुल 18 की रात भी नहीं आया... सैक्टर-25 में ही एक अन्य फैक्ट्री में काम कर रहे मेरे जेठ के बेटे ने 19 फरवरी को आ कर बताया कि राहुल अस्पताल में भर्ती है, जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज में काम कर चुके एक मजदूर ने यह बताया था.....

''17 फरवरी को फैक्ट्री में काम करते समय 20 वर्षीय राहुल लिफ्ट की चपेट में आ गया था — पेट कट गया, ऑतें कटी, कमर का माँस निकला। मृत्यु के कगार पर राहुल फैक्ट्री में बेहोश पड़ा था और कम्पनी 'लाश' को ठिकाने लगाने की फिराक में थी। जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज के मजदूरों ने मशीनें बन्द कर दी तब कम्पनी राहुल को अस्पताल ले गई.....

''ई.एस.आई. अस्पताल ले जाने की बजाय कम्पनी राहुल को फैक्ट्री से काफी दूर पुरानी डबुआ सब्जी मण्डी के निकट तान्या नर्सिंग होम ले गई। दोहरा ऑपरेशन हुआ — आँतों की सिलाई की गई और फिर पेट में 17 टाँके लगे। कमर की और भी गम्भीर चोट को अनदेखा किया गया। जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज के मजदूरों ने राहुल के लिये रक्त दिया.....

'' 19 फरवरी को हम परिवार के लोग तान्या नर्सिंग होम पहुँचे तो वहाँ कम्पनी की तरफ से रखे लोग चलते बने — मृत्यु पर लाश गायब कर देते। डॉक्टर कम्पनी का आदमी लगता है — हमें कोई कागजात नहीं दिये। राहुल की स्थिति में सुधार हुआ। डॉक्टर उसे घर ले जाने की कहने लगा तो हम ने टाँके तो कटने देने की बात कही। कम्पनी ने तान्या नर्सिंग होम में बिस्तर पर लेटे राहुल की फोटो ली। टाँके 25 फरवरी को कटे और उसी दिन घर भेज दिया। कन्हैया ठेकेदार 26 फरवरी को चावला कॉलोनी, बल्लभगढ में हमारे किराये के कमरे पर आया और ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड दे कर सैक्टर-7 ई.एस.आई. डिस्पैन्सरी से इलाज करवाने की कह गया.....

'' तान्या नर्सिंग होम में खींची राहुल की फोटो से राहुल का मुँह ले कर उसे ई.एस.आई. कच्चा कार्ड वाली फोटो में कोट-टाई लगाई गई थी। राहुल पहली जनवरी को फैक्ट्री में लगा था पर उसकी भर्ती 12 फरवरी की दिखाई गई — घायल होने से 5 दिन पहले की। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट में जगह तो जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज ही दर्शाई पर राहुल को कुशवाह एण्ड कम्पनी का वरकर दिखाया। कुशवाह एण्ड कम्पनी ठेकेदार का पता जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज वाला ही....

'' दिखने में बड़े घाव पेट के थे पर उन से भी गम्भीर चोट कमर की, रीढ की हड्डी की थी। राहुल खड़े होने की स्थिति में नहीं था। कमरे में हम उसे हाथों में उठा कर नित्यकर्म करवाते और ई.एस.आई. भी ले जाते। थोड़ा ठीक होने पर ई.एस.आई. डॉक्टर ने 8 मई को राहुल को फिटनेस सर्टिफिकेट दे दिया..... मैं राहुल को ले कर फैक्ट्री गई तो जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज और कुशवाह एण्ड कम्पनी, दोनों ने राहुल को ड्युटी पर लेने से साफ मना कर दिया....

''बेटे को खड़ा होने और खड़ा रहने में दिक्कतों को देख मैंने ई.एस.आई. डॉक्टरों-अधिकारियों के पास भागदौड़ की। मुझे पता चला कि राहुल की रीढ की चोट गम्भीर है..... राहुल को अधिक इलाज और आराम की आवश्यकता है। ई.एस.आई. अधिकारियों को इस बारे में आवेदन दिये हैं..... बेटे को ले कर इधर-उधर जाती हूँ, लोग सहायता भी कर रहे हैं पर भागदौड़ तो मुझे ही करनी है।''

पहचान और पहचान की जटिलतायें

"मैं" का उदय – "मैं कौन हूँ ?" – एक "मैं" में कई "मैं"– और "मैं" के पार

✶इकाई और समूह-समुदाय के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध समस्त जीव योनियों में हैं। मानव योनि में भी दीर्घकाल तक ऐसा ही था। चन्द हजार वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों में मानवों के बीच "मैं" का उदय हुआ। मनुष्यों के प्रयासों के बावजूद अन्य जीव योनियों के समूह-समुदाय में इकाई ने "मैं" के पथ पर प्रगति नहीं की है।

✶एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय की इकाईयों में तालमेल सामान्य हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय के उस योनि के अन्य समूह-समुदायों के संग आमतौर पर सम्बन्ध मेल-मिलाप के होते हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। आपस की खटपटें घातक नहीं हों यह किसी भी योनि के अस्तित्व के आधारों में है। इसलिये प्रत्येक जीव योनि में यह रचा-बसा है। एक जीव योनि के अन्दर की लड़ाई में किसी की मृत्यु अपवाद है। मानव योनि के अस्तित्व के 95 प्रतिशत काल में ऐसा ही रहा है। इधर मनुष्य द्वारा मनुष्य की हत्या, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की हत्यायें मानव योनि को समस्त जीव योनियों से अलग करती हैं।

✶अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करना जीव योनियों में सामान्य क्रियायें हैं। बने रहने, विस्तार, बेहतर जीवन के लिये ऐसे संचय जीवों में व्यापक स्तर पर दिखते हैं। प्रत्येक जीव योनि में पीढी में, पीढियों के बीच सम्बन्ध इन से सुगन्धित होते हैं। मानव योनि में भी चन्द हजार वर्ष पूर्व तक ऐसा ही था। इधर विनाश के लिये, कटुता के लिये, बदतर जीवन के लिये भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचय के पहाड़ विकसित करती मानव योनि स्वयं को समस्त जीव योनियों से अलग करती है।

कीड़ा-पशु-जंगली-असभ्य बनाम सभ्य को नये सिरे से जाँचने की आवश्यकता है।

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सद्इच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिर-माथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

● मानव योनि में बना-बनाया "मैं" अचानक कहीं से नहीं टपका। यह एक सामाजिक प्रक्रिया की उपज है और बदलाव जारी है।

अन्य योनि के शिशु को पालना, मित्र बनाना दीर्घकाल तक मानव जीवन को एक सुखद विस्तार देता रहा था। परन्तु..... परन्तु जीवन-बेहतर जीवन के लिये अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करती मानव योनि के नदियों किनारे निवास करते चन्द समूहों-समुदायों में दोहन-शोषण के लिये पशुओं को पालतू बनाना उल्लेखनीय बना। गाय को प्रतिनिधि उदाहरण ले सकते हैं।

दोहन-शोषण के लिये पशुओं को पालतू बनाना निर्णायक मोड़ साबित हुआ। पालतू बनाने के लिये दमन-धोखे और पालतू पशुओं का दोहन-शोषण मानव द्वारा मानव के दमन-शोषण की प्रक्रिया का प्रस्थान-बिन्दु बना।

● जहाँ पशुपालन उल्लेखनीय बना वहाँ मानव योनि के समूह-समुदायों में मेल-मिलाप के स्थान पर टकराव बढे। गायों के लिये युद्ध। अच्छे "हम" और दुष्ट "वे-अन्य" की रचना की अगली कड़ी " अन्यों" को दास बनाने की बनी।

आरम्भ में पूरा समूह-समुदाय पालतू पशुओं का स्वामी था। दासों का स्वामी भी आरम्भ में पूरा समूह-समुदाय होता था। स्वामी गण। आज जिन गणतन्त्रों और उनके नागरिकों की महिमा गाई जाती है उन में दास नागरिक ही नहीं थे। स्वामी और दास बनने-बनाने के साथ मानवों के बीच सतत हिंसा का, अहिंसा के प्रवचनों के संग बढती हिंसा का दौर आरम्भ हुआ।

● हालांकि "हम" और "अन्य" अनेकानेक रूपों में आज भी हैं, स्वामी गण के दौर में ही "गण-हम" का स्थान "मैं" ने ले लिया था। सैंकड़ों दासों और हजारों गायों वाले इस-उस स्वामी के किस्से।

स्वामी और दास बनने-बनाने ने मानव योनि में पीड़ा के पहाड़ बनाने आरम्भ किये। "मैं" के उदय ने पीड़ा को असहनीय बना दिया..... जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता "मैं" की पीड़ा को असहनीय बनाना सुनिश्चित करती है। दर्द का बँटवारा "हम" में भी कुछ हद तक होता है पर "मैं" में पीड़ा सिमट-सिकुड़ कर घनी

होती है। और फिर, मानव योनि में समुदायों का मिटना-विकृत होना उल्लास का, खुशी का मिटना-विकृत होना लिये है। आज परपीड़ाआनन्द का, दूसरे के दर्द से खुशी का बोलबाला है।

उल्लास के अकाल और असहय पीड़ा ''मैं-हम'' को अतियों में धकेलते हैं। एक तरफ जीवन को शाप मानने की धारणायें जीवन से मुक्ति-मोक्ष के लिये त्याग-तपस्या-भिक्षु बनने के सपने देखती-दिखाती हैं। दूसरी तरफ लूट-खसूट, दमन-शोषण के विस्तार द्वारा पीड़ा का विस्तार कर ''अपनी'' पीड़ा से मुक्ति के सपने देखे-बेचे जाते हैं।

● नर-मादा की आनन्ददायक क्रियायें जीव योनियों की निरन्तरता बनाये रखती हैं। परन्तु मानवों में ''जीवन ही पीड़ा'' बनने ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को पाप और नारी को पाप की मूर्ति करार दिया। ब्रह्मचर्य और सन्यास को आदर्श घोषित किया गया — मानव योनि की समाप्ति ही मानव योनि की मुक्ति! फिर भी, ''मैं'' रहूँ.... स्त्री ''मेरी-ही''..... पुरुष के वंश के लिये लड़के-लड़के-लड़के पैदा करने की मशीन के तौर पर नारी की व्यापक उपस्थिति बनी रही। यह बातें पृथ्वी के कुछ क्षेत्रों, सभ्य क्षेत्रों की ही हैं। आज सम्पूर्ण पृथ्वी पर, समस्त मानवों पर लदी हिमालयी आकार ले चुकी पीड़ा ने पाप को पुण्य घोषित कर दिया है पर .. .. पर बच्चे नहीं!!

''मैं'' के उदय के साथ मानव योनि में स्थापित हुई पुरुषसत्ता और नर-नारी को समेटते ''मैं कौन हूँ?'' के प्रश्न पर चर्चा अगले अंकों में। (जारी)

गुड़गाँव से –

अनु इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''प्लॉट 102-103 सैक्टर-18, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह पौने नौ और रात सवा नौ बजे सब मजदूरों को एकत्र कर कम्पनी प्रार्थना करवाती है। फिर मैडम प्रोडक्श्न मैनेजर उत्पादन के बारे में बोलती हैं। एक पूरी खेप लौट आई तो मैडम बोली कि काम करना है तो करो, कोई जबरदस्ती नहीं है, माल खराब मत करो। एक मजदूर की 15 दिन की तनखा काटी और प्रार्थना के बाद सब के सामने बुला कर अपमानित किया।

''फैक्ट्री में काम करती 400 लड़कियों और 250 लड़कों को 3 ठेकेदारों के जरिये रखा है। तीस स्थाई लोगों में अधिकतर सुपरवाइजर हैं, स्थाई मजदूर 2-4 ही हैं। लड़कियों की सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है, कुछ को 1-1½ घण्टे फिर रोकते हैं। लड़कों की सुबह 9 से रात 9½ तथा रात 9 से अगली सुबह 9 बजे तक की दो पाली हैं। ओवर टाइम का भुगतान नये को (6 महीने से पहले वाले को) 8 रुपये प्रतिघण्टा और बाद वालों को 10 रुपये प्रतिघण्टा के हिसाब से।

'' काम करते 6 महीने हो जाते हैं तब तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटने शुरू करते हैं। पी.एफ. के पैसे आरम्भ से ही काटते हैं पर 6 महीने होने से पहले नौकरी छोड़ने वालों को यह पैसा मिलता नहीं है। एक मजदूर ने 110 घण्टे काम करने के बाद नौकरी छोड़ दी तो ठेकेदार ने उसे मात्र 400 रुपये दिये और कहा कि बाकी पैसे ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटे हैं।

''अनु इन्डस्ट्रीज में सोल्डरिंग का काम ज्यादा है और फैक्ट्री में हीरो होण्डा लाइन, होण्डा लाइन, बजाज लाइन, सोल्डरिंग लाइन तथा रिजेक्शन लाइन हैं। खड़े-खड़े काम करने से पैर व कमर दर्द करने लगते हैं। रफ्तार बहुत रखनी पड़ती है — साँय 6 बजे मैडम को बताने के लिये प्रोडक्शन पूछते हैं। उत्पादन का टारगेट पूरा न हो और मैडम को मशीन खराब आदि कारण बताये बिना चले जाओ तो उस दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं।

''फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। भोजन के लिये स्थान नहीं है, इधर-उधर खाते हैं। भोजन अवकाश के दौरान भी फैक्ट्री से निकलने नहीं देते — किसी कारण रोटी साथ नहीं ले जा पाये तो भूखे रहो। हाँ, चाय कम्पनी देती है।''

लुमैक्स वरकर : ''प्लॉट 46 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में 30 स्थाई हैं और बाकी सब को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। कई शिफ्ट हैं : मोल्डिंग में सुबह 6 से साँय 6½ और साँय 6½ से अगली सुबह 6 बजे तक ; असेम्बली, फिनिशिंग व मेन्टेनैन्स में सुबह 9 से रात 9 ; क्वालिटी विभाग में सुबह 8 से रात 9½; डिस्पैच में सुबह 7 से रात 11½-12 बजे तक की एक शिफ्ट ; और फिल्टर विभाग में सुबह 9 से रात 9 की एक पाली है पर महीने में 15 दिन सुबह 9 से अगली सुबह 9 तक की 24 घण्टे की एक शिफ्ट। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, 12 रुपये प्रतिघण्टा के हिसाब से। तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे सब के काटते हैं पर छोड़ने/निकालने पर पी.एफ. की राशि मिलने की बात कम ही है। काम का भारी बोझ है — रोज 6 गाड़ी माल होण्डा स्कूटर फैक्ट्री को और एक गाड़ी तथा दो टैम्पो माल मारुति कार फैक्ट्री को जाता है। उत्पादन के फेर में मजदूरों को जगह से हिलने नहीं देते। वाहनों के फिल्टर, इंजन पार्ट्स, बत्ती बनाती लुमैक्स की मानेसर सैक्टर-5 में दूसरी फैक्ट्री के संग गुड़गाँव सैक्टर-18, धारुहेड़ा और फरीदाबाद में फैक्ट्रियाँ हैं।''

डेल्फी मजदूर : ''42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 2558 वाली कम से कम तनखा नहीं देते थे और अब 3510 रुपये वाला न्यूनतम वेतन भी नहीं। चार ठेकेदारों के जरिये रखे हम 2500 वरकर फैक्ट्री में काम करते कुल मजदूरों का 90 प्रतिशत हैं। हमें छुट्टी करने से रोकने के लिये 2428

रुपये तनखा में उपस्थिति भत्ता 300 रुपये था — महीने में एक छुट्टी करने पर उस दिन की दिहाड़ी के संग 300 रुपये और काट लेते। अब तनखा बढाने के संग महीने की 1 से 10 तारीख के बीच छुट्टी करने पर दिहाड़ी के साथ 400 रुपये उपस्थिति भत्ता के काटेंगे, 10 से 20 तारीख के दौरान छुट्टी करने पर दिहाड़ी के संग 200 रुपये काटगें, 20 से 30 तारीख के बीच छुट्टी करने पर दिहाड़ी के साथ 200 रुपये काटेंगे। एक और घालमेल महीने को 22 से 22 बताना शुरू कर 20 से 20 तारीख का बताने लगे हैं. ..... तनखा पहले की ही तरह 7-8 तारीख को।

''ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, महीने में 200 घण्टे से ज्यादा भी हो जाता था जिनमें से 30-40 घण्टे खा जाते थे..... अब 20 जुलाई से ओवर टाइम बन्द कर दिया है। शिफ्टें अब भी तीन हैं पर 12-12 घण्टे की बजाय 8-8 घण्टे की। और, 12 घण्टे में बनती 108 हारनेस को 8 घण्टे में बनाने के लिये जबरदस्ती करते हैं।

''डेल्फी कम्पनी में हेराफेरी का बोलबाला है। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे हम सब की तनखा से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। पी.एफ. का नम्बर 6 महीने बाद बताने की कहते हैं पर साल से ज्यादा हो जाने वालों को भी नहीं बताते। एपरन खो जाने पर 200-300-500 रुपये मुँह देख कर काटते हैं — फैक्ट्री में लॉकर नहीं देते इसलिये एपरन हमारे साथ कमरे और फैक्ट्री की यात्रा करता है। पहचान-पत्र खो जाने पर भी 200-300-500 रुपये..... और डोरी खोने पर 50 रुपये दो! हमें जो पे-स्लिप दी हैं वो फर्जी हैं — ठेकेदार ने कम्प्युटर से निकाली इन पे-स्लिपों पर महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम और उसका सिंगल रेट से भुगतान दर्ज किया है (कानून तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं का है, भुगतान दुगुनी दर से)।

''कैन्टीन में ठण्डी-कच्ची-जली रोटी ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के लिये हैं। स्थाई मजदूर ताजा ठीक रोटी कैन्टीन के अन्दर जा कर ले आते हैं पर हमें भीतर नहीं बड़ने देते।''

ओमैक्स वरकर : '' सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 200 स्थाई और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर काम करते हैं। अधिकतर स्थाई मजदूर टूल रूम में डाई बनाते हैं और उनकी 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 12 घण्टे खड़े-खड़े काम करने का गन्दा नियम है। भारी काम है — हीरो होण्डा मोटरसाइकिलों के 20 तथा 30 किलो के बॉडी फ्रेम बनते हैं। उठा कर उल्टा-पुल्टा कर 12 घण्टे लगातार वैल्डिंग करने में पेट की ऐसी-तैसी हो जाती है। ऊपर से कम्पनी निर्धारित उत्पादन बढाती रहती है और छुट्टी टारगेट पूरा करने पर ही — फैक्ट्री में पानी-पेशाब भी मुश्किल हो जाता है और 12 घण्टे बाद भी एक-दो घण्टे रोक लेते हैं।''

गुड़गाँव में तीन भाई : '' बड़े भाई रात 9½ बजे फैक्ट्री से लौटते हैं और हाथ-मुँह धो कर सुबह के जूठे बर्तन साफ करते हैं। मैं 10-10½ कमरे पर पहुँचता हूँ और थोड़ा ताजा हो कर दाल-चावल बनाता हूँ। उस समय बड़े भाई सुबह के लिये सब्जी लाने मण्डी जाते हैं। मझला भाई 11 बजे बाद लौटता है। भोजन 11½ तक तैयार होता है, 12½-1 बजे सोना। अगल-बगल के 6 कमरों के बीच एक लैट्रीन व एक बाथरूम और सब में ड्युटी वाले हैं तथा कुछ के बच्चे स्कूल जाते हैं इसलिये हमें सुबह 6 बजे उठना पड़ता है..... नींद पूरी नहीं होती, कार्यस्थल पर झपकी आती हैं, भूख मर जाती है। ताजा हो कर मैं रात के जूठे बर्तन धोता हूँ और हम रोटी-सब्जी बनाते हैं। आठ बजे तक सब तैयार कर ही लेना। नहाना और नाश्ते में सब्जी-रोटी खाना। भोजन डिब्बों में रख कर हम तीनों 8½ बजे ड्युटी के लिये निकल पड़ते हैं। पैदल जाते हैं और कार्यस्थलों पर पहुँचने में 10, 30 तथा 40 मिनट लगते हैं। निर्यात के लिये वस्त्र तैयार करती फैक्ट्री में बड़े भाई की रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। मझले भाई ग्रुप फोर में सेक्युरिटी गार्ड हैं और इस समय प्रतिदिन 14 घण्टे ड्युटी करते हैं — उनकी महीने के तीसों दिन 12 घण्टे की ड्युटी तो रहती ही है। गाँव से लौटने पर कुछ दिन खाली रहने के बाद मैं वाहन उद्योग से जुड़ी एक फैक्ट्री में 12½ घण्टे रोज की ड्युटी कर रहा हूँ। यहाँ दो भाई थे तब कमरे का किराया 1300 रुपये था, मेरे आने पर मकान मालिक ने इसे 1500 कर दिया। अब बिजली का अलग मीटर लगा दिया है, 100-150 रुपये महीने के और लगेंगे। कूड़े के 50 रुपये..... कोई मजदूर अपने साथ परिवार को यहाँ कैसे रख सकता है? घर पैसा भेजना जरूरी है — माँ और भाभी गाँव में खेती करती हैं, छोटा भाई पढता है।''

फरीदाबाद में

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर : '' 38 किलो मीटर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 3 जुलाई को कम्पनी ने मिठाई बाँटी — जनवरी से जून के 6 महीनों में रिकार्ड 10 लाख कम्प्रेसर के उत्पादन व बिक्री की खुशी में। और..... और जून की तनखा 7 जुलाई को बैंक खातों में भेजी तो निर्धारित से कम उत्पादन हुआ है कह कर प्रत्येक स्थाई मजदूर की तनखा में से 1400 रुपये काट लिये। फिर 10 जुलाई को कम्पनी ने सूचना टाँगी कि आप मजदूरों की लगन व मेहनत को देखते हुये जून की तनखा से काटे 1400 रुपये देने का निर्णय लिया है हालांकि यह बनता नहीं है। वैसे 4 साल पहले 10 महीने में 10 लाख कम्प्रेसर के रिकार्ड पर स्थाई मजदूरों को कम्पनी ने टी-शर्ट उपहार में दी थी। चार साल पहले 900 स्थाई मजदूर थे

और सीजन में 1000 कैजुअल वरकर कम्पनी रख लेती थी। जबकि, आज स्थाई मजदूर 615 हैं और सीजन में कम्पनी 7-800 कैजुअल वरकर रखती है। चार साल पहले प्रतिदिन के लिये निर्धारित उत्पादन 4000 कम्प्रेसर था, आज 6400 है। स्थाई मजदूर की तनखा 15 हजार रुपये और कैजुअल वरकर की 2558 रुपये। फैक्ट्री में फ्रिज के कम्प्रेसर यहाँ व्हर्लपूल, विडियोकॉन, सैमसंग के लिये तथा तुर्की, ब्राजील, आस्ट्रेलिया आदि को निर्यात के वास्ते। उत्पादन का 15 प्रतिशत व्यवसायिक डीप फ्रीज आदि के लिये कम्प्रेसर हैं।''

चन्दा इन्टरप्राइजेज वरकर : ''प्लॉट 1 तालाब रोड़, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में काम कर रहे मजदूरों की हाजिरी प्लॉट 322-323 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में लगती है। दरअसल प्रदूषण आदि के नाम पर मुजेसर फैक्ट्री से सैक्टर-58 तथा प्लॉट 62 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्रियों में भेजने के दौरान कम्पनी ने छँटनी की। स्थाई मजदूर 125 से घटा कर 53 कर दिये। कम्पनी की औरंगाबाद (महाराष्ट्र) तथा बद्दी (हिमाचल) में भी फैक्ट्रियाँ हैं और नामों के फेर भी हैं : चन्दा इन्टरप्राइजेज, एस.आर. इन्टरप्राजेज, ए.सी. व्हील्स, फरीदाबाद मैटेलिक्स। इधर कम्पनी ने 'काम नहीं है' कह कर फिर छँटनी करने का यूनियन से समझौता किया है और 18 स्थाई मजदूरों की सूची टाँग दी है। काम नहीं है.... मुजेसर और सैक्टर-58 में एक-एक सफाई कर्मी है, यह दोनों स्थाई हैं और इन दो के नाम भी छँटनी सूची में!! माहौल बनाने के लिये कुछ समय से स्थाई मजदूरों को तनखा देरी से — जून का वेतन 17 जुलाई को दिया। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को दस्तावेजों में कम्पनी दिखाती ही नहीं है। इस समय भी फ्रैबिकेशन तथा बफिंग-पोलिशिंग में 5-6 ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं और जून माह की तनखा 3 अगस्त को जा कर दी। चन्दा इन्टरप्राइजेज-ए.सी व्हील्स में फैब्रिकेशन, पोलिश, इलेक्ट्रोप्लेटिंग के बाद वाहनों के पुर्जे यामाहा, मुंजाल शोवा, बजाज, मारुति फैक्ट्रियों को भेजे जाते हैं।''

वी एन जी ऑटोमोटिव मजदूर : ''प्लॉट 4 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 2-3 कैजुअल वरकर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर काम करते हैं — स्थाई मजदूर एक भी नहीं है। प्रेस शॉप, फोस्फेटिंग, मोल्डिंग, डाइकास्टिंग और फैटेलिंग विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से.

एटम बमों जैसी,
एटम बमों से ज्यादा खतरनाक हैं
परमाणु बिजलीघर।

बिना टिप्पणी के

पुलिस–खुफिया पुलिस

फरीदाबाद**.....** विभागीय सूत्रों का कहना है कि सीआईए दल अपने विभाग के आला अधिकारियों के लिये कमाऊ पूत हैं। लोगों को झूठे मामलों में फँसाने का भय दिखा, यह दल आजकल मोटी कमाई कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व सीआईए के दो दलों से त्रस्त हो कर खेड़ी गाँव में पंचायत आयोजित की गई थी। इस पंचायत में आरोप लगाया गया था कि गाँव के चार दर्जन के करीब युवकों के बारे में सीआईए का कहना था कि उनके पास अवैध इंग्लिश हथियार हैं और वह अपराधों को अँजाम देते हैं। ग्रामीणों का आरोप था कि सीआईए वाले गाँव के युवकों को अकारण जबरन उठा कर ले जाते हैं और पैसे ले कर छोड़ देते हैं।

सोमवार (30 जुलाई) को प्रेम नगर झुग्गी निवासी करीब 22 वर्षीय अनीस को सीआईए का एक दल धर दबोचने के लिये उसके घर पर पहुँचा। सीआईए दल के लोगों को देख वह उन से बचने के लिये घर के पास बह रही नहर में कूद गया। मंगलवार को उसकी लाश सैक्टर तीन पुल के पास से नहर में बरामद हुई। अनीस की माँ बदनू का आरोप था कि सीआईए वाले हर पन्द्रह दिन बाद उसके बेटे के उठा ले जाते थे और उस से किसी भी कबाड़ी का झूठा नाम लेने के लिये कहते थे कि उसने चोरी का माल उसे बेचा है। इसके बाद वह उस कबाड़ी को मामले में फँसाने की धमकी दे पैसे ऐंठ उसके बेटे को छोड़ देते थे।

कुछ माह पूर्व सीआईए का एक दल हथियारों की नोंक पर मुजेसर निवासी एक युवक को उसके घर से सोते हुए ऐसे उठा ले गया जैसे अपराधी अपहरण की वारदात को अँजाम देते हैं। उसके पिता की तीन दिन की मेहनत के बाद उसे पता चला कि उसके बेटे का अपहरण नहीं हुआ है, बल्कि उसे सीआईए उठा कर ले गई है।

इस बारे में एसएसपी आलोक मित्तल ने बताया कि सीआईए की कार्यप्रणाली को न समझने के कारण लोगों को गलतफहमियाँ हो जाती हैं।...

+.... मंगलवार.... युवक की लाश मिलने..... मौके पर कोई हँगामा न हो इसको ले कर पुलिस दल भी मौके पर पहुँच गया। दूसरी तरफ प्रेम नगर झुग्गी के लोग बाइपास रोड़ को जाम न कर दें, इसको ले कर खेड़ी पुल पुलिस चौकी पर कई थानों से फोर्स तैनात कर दी गई थी।..... सोमवार शाम को लोगों ने बाइपास रोड़ को जाम कर दिया था।..... (1.8.07 के 'हिन्दुस्तान' में श्री पवन जाखड़ का संवाद)

पहचान और पहचान की जटिलतायें (2)

"मैं" का उदय – "मैं कौन हूँ ?" – एक "मैं" में कई "मैं"– और "मैं" के पार

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सद्इच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिर-माथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

● हमारी भाषा-सम्बन्धी अक्षमता-अयोग्यता को क्षमा कीजियेगा। जीवों-निर्जीवों से रची पृथ्वी पर लाखों-करोड़ों वर्ष से चले आ रहे अनेकानेक प्रकार के सम्बन्धों के बोलबाले में चन्द हजार वर्ष पूर्व एक महीन दरार पड़ी थी जो कि आज सब-कुछ को विनाश की देहली पर ले आई है।

अनेकानेक प्रकार के सम्बन्धों को मात्र दोहन-शोषण के रिश्तों में समेटती-सिकोड़ती प्रवृति के मानवों के चन्द समूहों में उभरने को सभ्यता का जन्म कह सकते हैं। पौराणिक कथा के सुरसा के मुँह की तरह फैलती आई सभ्यता ने पृथ्वी के पार जा कर अब अन्तरिक्ष का भी दोहन-शोषण शुरू कर दिया है।

सभ्यता की प्रगति के संग पत्थर पर प्यार की थपकी से परे होते मनुष्य प्रेम करने से ही वंचित होते आये हैं। सभ्य मानवों में प्रेम की योग्यता-क्षमता ही नहीं रहती.........

1900-1920 के दौरान भी सभ्यता से परे प्रशान्त महासागर के कुछ द्विपों में निवास करते मानव समुदायों के अनुसार घड़ी ने गोरों को प्रेम करने के अयोग्य बना दिया था। आज पृथ्वी पर शायद ही कोई हों जो "गोरे" नहीं हैं.......

प्रेम का यह अकाल प्रेम-गीतों को लोकप्रियता प्रदान करता है, विकृत प्रेम को आधार प्रदान करता है। विगत के प्रेम के किस्से भी उस प्रेम की महिमा गाते हैं जो जीवन को विस्तार देने के उलट मनोरोगी सिकोड़ना, संकीर्ण बनाना लिये है। और आज मण्डी में प्रेम के भाव-तोल होते हैं, मण्डी में प्रेम-गीत बिकते हैं।

● जो मिले-जुले हैं, जो घनिष्ठ सम्बन्ध लिये हैं उन्हें अपने से अलग देखना, अपने से अलग करना, "अन्य" बनाना दोहन-शोषण के लिये प्रस्थान-बिन्दू बनता है। और, स्वयं को अपने से अलग देखना, खुद को अपने से अलग करना, स्वयं को हाँकना, खुद के तन का, मस्तिष्क का, मन का दोहन-शोषण "अन्य" से आरम्भ हुये दोहन-शोषण की परिणति है।

धरती को अपने से अलग मान कर धरती का दोहन, पेड़-पौधों को अपने से अलग कर उनका दोहन, पशु-पक्षियों व अन्य जीवों को अपने से अलग कर उनका दोहन-शोषण, एक मानव समुदाय द्वारा दूसरे मानव समुदायों को अपने से अलग मान कर, "वे-अन्य" बना कर उनका शोषण, एक मानव समुदाय में ही "मैं" और "वह" की रचना द्वारा एक-दूसरे के शोषण के आधार की स्थापना, और फिर "मैं" में विभाजन-कई विभाजन.......

किसी स्वामी-मालिक के "मैं" की ही बात करें तो उस "मैं" के अन्दर इस कदर द्वन्द्व हैं कि उसे स्वामी-मालिक बनाये रखने के लिये अनेक भोगों के संग योग की आवश्यकता पड़ती है.... टूटे को जोड़ना लक्षणों का उपचार करना है, बीमारी को छिपाना है। और, संकीर्ण अर्थ में स्वास्थ्य की ही बात करें तो भी प्रश्न है : स्वास्थ्य किस लिये ? स्वास्थ्य से खिलवाड़ करती सामाजिक प्रक्रिया शोषण के लिये स्वास्थ्य के महत्व को बखूबी जानती है.......

● मानव समुदायों में से जो समुदाय स्वामी गण बने थे वे स्वाभाविक तौर पर समुदायों की गहरी छाप लिये थे। इसने सभ्यता के बारे में अनेक भ्रान्तियों को भी जन्म दिया है। स्वामी गण के दौर को सतयुग कहने वालों के लिये यह बात पर्याप्त होनी चाहिये कि दास-दासी गण के सदस्य नहीं थे, दास-दासियों का शोषण स्वामी गणतन्त्रों की चमक-दमक का आधार था।

स्वामी गण के "हम" में से "मैं" के उदय को पतन के तौर पर देखने की परिपाटी के लिये भी उपरोक्त पर्याप्त होना चाहिये। "हम" और "वे-अन्य" का अगला कदम "हम-मैं", "मैं-हम", "मैं" है......

"मैं" के संग "मेरा-मेरी" हैं। यहाँ हम स्वामियों-मालिकों के आचार-विचार की ही चर्चा कर रहे हैं क्योंकि दास-दासियों के "मैं" और "मेरा-मेरी" के लिये कोई स्थान ही नहीं था। लेकिन बँटे हुये समाज में सिर-माथों पर बैठों का प्रभाव नीचे वालों पर पड़ता-डाला जाता है। कहा है कि किसी दौर की हावी सोच उस दौर के शासक वर्ग की सोच होती है.....

माँ शक्ति, देवी के गले में नर-मुण्डों की माला, पिता के आदेश पर माँ का सिर काटना वाली पौराणिक कथायें नर-नारी सम्बन्धों में हुये उलटफेर दर्शाती लगती हैं। यह न भूलते हुये कि स्वामी-मालिक की पत्नी-बेटी दास-दासियों के लिये स्वामी ही थी,

बात आगे बढाते हैं।

''मैं'' और ''मेरा-मेरी'' का विस्तार नारी की-बच्चों की दुर्गत तो लिये ही है, यह पुरुषों का भी कचूमर निकालता है। ''मैं'' और ''मेरा-मेरी'' के लिये सुरक्षा का प्रश्न अपने संग सरकार और उसका बढता बोझ लिये है। ''मेरा-मेरी'' की सुरक्षा तथा इनके विस्तार की इच्छायें पहचान की राजनीति की खुराक तो बनती ही हैं।

सम्पत्ति और परिवार के रूप में ''मेरा-मेरी'' किसानी-दस्तकारी-दुकानदारी के विस्तार के दौरान महामारी का रूप ले लेती है। लेकिन इधर सम्पत्ति द्वारा संस्थागत रूप धारण करते जाना और बढती सँख्या में स्त्रियों का मजदूर बनना सभ्यता के विलोप तथा नये समुदायों की आवश्यकता की दस्तक लगती है....

संस्थाओं-कम्पनियों के बड़े घपलों-घोटालों के संग एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या से रूबरू दस्तकारों-किसानों-दुकानदारों की ''मेरा-मेरी'' की बदहवासी फुटकर भ्रष्टाचार की बाढ लाई है। और यूरोप-उत्तरी अमरीका में संस्थाओं ने ''मेरा-मेरी'' वाले आवरणों को हड़प कर ''मैं'' को पूरी वीभत्सता के साथ सामने ला दिया है।

प्रकृति में स्त्री की यौन-सम्बन्धी क्षमता कई पुरुषों के बराबर है। एक पुरुष एक स्त्री की भी यौन सन्तुष्टि नहीं कर सकता..... .. ऐसे में एक पुरुष द्वारा कई स्त्रियाँ-पत्नियाँ रखना ''मैं'' की पीड़ा का ही कमाल रहा है। ''मैं'' के उदय के संग स्त्री-पुरुष में आरम्भ हुये सतत द्वन्द्व की चर्चा आगे करेंगे। (जारी)

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

प्रणव विकास मजदूर : ''45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा हैल्परों को 3510 रुपये दी है। फैक्ट्री की पेन्ट शॉप में हालात बहुत खराब हैं — 17 अगस्त को एक मजदूर को इतनी खाँसी आई कि बेहोश हो कर गिर गया। साहबों को पेन्ट साफ करवाने, एग्जास्ट ठीक करवाने, ढँग के मास्क, टॉनिक के लिये कहते हैं तो वे 'करना है तो करो नहीं तो जाओ' बोलते हैं।''

पैरामाउन्ट पोलीमर्स वरकर : '' सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू रोड़ स्थित फैक्ट्री में 11 अगस्त को परसनल वाले ने गेट पर जुलाई तनखा के 3510 तथा 3640 रुपये पर हस्ताक्षर करवाये और कहा कि तनखा ले आओ। अन्दर हमें 2000-2500-3000 रुपये दिये। इस पर हम चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर कुलभूषण खुराणा से मिले तो उन्होंने सोमवार, 13 अगस्त को मिलने को कहा। सोमवार को वे बोले कि मैं इस्तीफा दे चुका हूँ, टैक्नीकल हैड सुरेन्द्र शर्मा से बात करो......

''श्री कुलभूषण खुराणा वृद्ध हैं, रोज फैक्ट्री आते हैं और 10-12 घण्टे रहते हैं। उत्पादन बढवाने के लिये हमारे सिर पर खड़े रहते हैं, पानी-पेशाब के लिये गये मजदूर की जगह खुद दाब खोल देते हैं। आधी मिनट तक का समय देखते हैं — एक डाई में एक सैकेन्ड बचा है इसलिये 12 घण्टे में इतने मिनट हुये इसलिये इतनी डाई बढाओ...... वाले इन बड़े साहब के पास हम पैसे बढाने, साबुन, वेतन में देरी के बारे में जाते हैं तो कहते हैं कि मैंने इस्तीफा दे दिया है, 3-4 साल से यह बातें। और, टैक्नीकल हैड सब को, सुपरवाइजर-वरकर को गाली देता है।

''पैरामाउन्ट पोलीमर्स फैक्ट्री में एल जी, सैमसंग, व्हर्लपूल फ्रिज के रबड़ के पुर्जे बनते हैं। इस समय 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं पर दिवाली से मई माह तक 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती हैं और जबरन 36 घण्टे भी रोकते हैं। ओवर टाइम के महीने में 150-200 घण्टे .....सर्दियों में तो 275-300 घण्टे प्रतिमाह हो जाते हैं। स्थाई मजदूरों की पे -स्लिप में ओवर टाइम दिखाते ही नहीं। ओवर टाइम के पैसे दूसरे कागज पर देते हैं, उसमें भुगतान दुगुनी दर से लिखा होता है पर देते सिंगल रेट से हैं। स्थाई मजदूरों और कैजुअल वरकरों की तनखायें बराबर हैं पर कैजुअलों की 6 महीने ई.एस.आई. व पी.एफ. काटते हैं, फिर 6 महीने बन्द कर देते हैं... .. इस प्रकार 5-6 साल से लगातार फैक्ट्री में काम कर रहे कैजुअल हैं। इधर डेढ़ साल से पुराने कैजुअलों को निकालना शुरू कर रखा है। फैक्ट्री में सबसे ज्यादा शिकायत टी.बी. की है।''

वी जी इन्डस्ट्रीयल इन्टरप्राइजेज वरकर: ''31 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मारुति सुजुकी वाहनों के पुर्जे बनते हैं और इन्हें गुड़गाँव फैक्ट्री में पहुँचाने के लिये हर समय गाड़ियों का आना-जाना लगा रहता है। बहुत ज्यादा माल चाहिये और हर हाल में समय पर चाहिये — हम मजदूरों पर उत्पादन का भारी दबाव रहता है। पानी-पेशाब में भी दिक्कत — सुपरवाइजर पीछे-पीछे आ जाते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ड्युटी मे 12 घण्टे पैक — शरीर के सब अंग ढीले हो जाते हैं। रात को 12 घण्टे काम के बाद सुबह छूटने वाले अध्धा पी कर निकले लगते हैं। एक्सीडेन्ट....

''पावर प्रेस विभाग सड़क से दिखाई देता है — बड़ी 15 और छोटी 20 हाइड्रोलिक प्रेस यहाँ हैं, बहुत छोटी 20 पावर प्रेस डिलाइट बैंक्वेट के पीछे हैं। प्रेसों पर उत्पादन मीटर लगा रखे हैं — जहाँ 2 ऑपरेटर हैं वहाँ 12 घण्टे में कम से कम 3600 माल चाहिये, नहीं तो बाहर। इसलिये ऑपरेटर अपनी नौकरी बचाने के लिये हर समय हैल्परों के सिर पर सवार रहते हैं। ऑपरेटर माल लगाता और स्ट्रोक मारता है, हैल्पर माल निकालता है। ऐसे में हाथ तो रोज चिरते ही हैं, मुँह में चोट लगना सामान्य है। महीने में पावर प्रेसों पर एक हाथ तो कट ही जाता है, ज्यादा हाथ पहुँचे

से कटते हैं, हाथ ज्यादा हैल्परों के कटते हैं। हाथ कटने पर ई.एस.आई. अस्पताल भेज देते हैं और फिर निकाल देते हैं। एक्सीडेन्ट होने के बाद आधा घण्टा भोजन अवकाश में सुपरवाइजर काख में भोंपू टाँग कर सुरक्षा पर भाषण देते हैं, बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और हमारे भोजन के आधे घण्टे में से 15-20 मिनट खा जाते हैं।

''तीन महीने हुये एक दिन ड्युटी पर पहुँचा तो ऑपरेटर के हृदय में तकलीफ देखी और मेरे बताने पर अस्पताल ले गये। फिर सुपरवाइजर मुझे बोला कि मशीन चलाओ। डाई खून से लथपथ थी। बाथरूम के पास कपड़े से ढका कटा हाथ देखा। सुपरवाइजर बोला कि खून साफ कर मशीन चलाओ। मैंने मना कर दिया। हैल्पर हूँ, डर गया हूँ, मेरा दिल घबरा गया है..

''वी जी इन्डस्ट्रीयल में मजदूर लगते-निकलते रहते हैं। लगने के बाद महीना पूरा होने का इन्तजार करते हैं। पहले 4 तारीख को तनखा देते थे, अब 9 को देते हैं — 10 दिन के पैसे फँसा कर रखते हैं ताकि मजदूर नौकरी छोड़ नहीं सकें, छोड़ने पर हिसाब बहुत मुश्किल से देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 1000 मजदूरों में स्थाई 200 से कम हैं और बाकी सब को दो ठेकेदारों के जरिये रखते हैं।''

दरारें और कोशिशें

डेल्फी मजदूर : ''42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में ***चार ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों ने 3 अगस्त को दोपहर बाद 3½ बजे चाणचक्क काम बन्द कर दिया।*** हम 2500 हैं और फैक्ट्री में काम करते मजदूरों का हम नब्बे प्रतिशत हैं। इस वर्ष जनवरी में हम ने चाणचक्क काम बन्द किया तब 250 स्थाई मजदूरों ने काम जारी रखा था पर फिर भी फैक्ट्री में दो दिन उत्पादन ठप्प रहा था। इस बार, 3 अगस्त को हमारे द्वारा चाणचक्क काम बन्द करने पर मैनेजमेन्ट ने बहुत तेजी से कार्रवाई की। कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ने साँय 5 बजे फैक्ट्री में ए और बी शिफ्ट के सब मजदूरों की सभा की। बड़े साहब ने अनुशासन तोड़ना बरदाश्त नहीं करने, फैक्ट्री को ताला लगाने, फैक्ट्री पुणे ले जाने वाली धमकियाँ दी पर इनका ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों पर कोई प्रभाव पड़ ही नहीं सकता। साहबों की यह बातें तो स्थाई मजदूरों को ही डरा सकती हैं और उन्होंने तो काम बन्द नहीं किया था, काम बन्द तो हम ने किया था। डेल्फी फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के सम्मुख समस्या ही समस्या हैं..... मैनेजिंग डायरेक्टर को हमारी बातें सुननी पड़ी। और फिर, 6 अगस्त को हमें जुलाई की तनखा दी गई तो 3510 की बजाय प्रत्येक की तनखा 3640 रुपये लगाई गई तथा इनमें 800 रुपये उपस्थिति भत्ता, 3 महीने से काम कर रहों को 300 रुपये अतिरिक्त, 6 महीने वालों को 200 रुपये और, प्रतिवर्ष पर 100 रुपये जोड़े गये। ***जिस फैक्ट्री में 2554 रुपये वाला न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जा रहा था वहाँ जुलाई की तनखा पाँच हजार रुपये! लेकिन कोई चमत्कार नहीं है यह।***

'' गुड़गाँव में डेल्फी फैक्ट्री 1995 से है। आरम्भ में भर्ती कियों को स्थाई किया, स्थाई मजदूर 750 हो गये तब मैनेजमेन्ट-यूनियन की माँगपत्र-तालाबन्दी वाली जुगलबन्दी के जरिये 2002-03 में 500 स्थाई मजदूरों की छँटनी की गई और ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे जाने लगे। स्थाई मजदूर की 8-10 हजार रुपये की तुलना में 2428 रुपये तनखा जिसमें 300 रुपये उपस्थिति भत्ता. ... चार ठेकेदारों के जरिये रखे जाते हम सब नई उम्र के हैं और आपस में तालमेल कर लेते हैं। इस वर्ष जनवरी में तनखा बढवाने के लिये एक दिन हम सब फैक्ट्री के अन्दर जाने की बजाय गेट पर बैठ गये। हमारे द्वारा चाणचक्क यह करने से कम्पनी हड़बड़ा गई थी। ढाई सौ स्थाई मजदूर फैक्ट्री में काम करते रहे थे पर उत्पादन ठप्प-सा रहा था। स्थाई मजदूर ही यूनियन में हैं और दो दिन बाद यूनियन नेता आश्वासन दे कर हमें फैक्ट्री में ले गये थे। फिर मैनेजमेन्ट ने हम में से 'भड़काने वाले' छाँटने की कोशिशें की, हम में से कईयों को निकाला और नये भर्ती किये। लेकिन बात तो किन्हीं 'भड़काने वालों' की थी नहीं, है नहीं। फैक्ट्री में काम ही कोढ है और फिर जबरन ओवर टाइम, घण्टों में हेराफेरी, प्रोविडेन्ट फण्ड में गबन, उपस्थिति भत्ते की आड़ में न्यूनतम वेतन भी नहीं आदि-आदि वाली खाज जारी थी कि 3510 वाला न्यूनतम वेतन नये सिरे से हेराफेरियों का सिलसिला लाया। हम ने हरियाणा सरकार के श्रम आयुक्त, श्रम मन्त्री, मुख्य मन्त्री को पत्र लिखे। हम ने आपस के तालमेल बढाये और 3 अगस्त को चाणचक्क काम बन्द किया...... तब ऊपर बताया 'चमत्कार' हुआ।'' *(वाहनों के पुर्जे बनाती डेल्फी कम्पनी की संसार में 160 फैक्ट्रियों में एक लाख अस्सी हजार मजदूर काम करते हैं।)*

फरीदाबाद में :

महारानी पेन्ट्स मजदूर : ''प्लॉट 242 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को जुलाई की तनखा देते समय हस्ताक्षर 3510 तथा 2554, दोनों पर करवा रहे थे और दे 2554 रुपये थे। एक-दो ने पैसे ले भी लिये थे पर फिर हम सब काम बन्द कर बैठ गये। एक घण्टे बाद जनरल मैनेजर आया और बोला कि तनखा 3510 रुपये देंगे.... 9 अगस्त को हम ने 3510 रुपये लिये।''

सेन्डेन विकास वरकर : '' प्लॉट 65 सैक्टर-27ए स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को एक ठेकेदार 3510 पर हस्ताक्षर करवा कर 2554 रुपये देने लगा तो मजदूरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। फिर 9-10 अगस्त को ठेकेदारों ने जुलाई की तनखा 3510 रुपये

दी। महीने में वाहनों के 25 हजार एयरकन्डीशनर किट तैयार करती फैक्ट्री में 70 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 250 वरकर काम करते हैं। स्थाई का ओवर टाइम कम ही लगता है पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर प्रतिमाह 150-200 घण्टे ओवर टाइम करते हैं जिनका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से किया जाता है। स्थाई मजदूर की तनखा 8000-18000 रुपये (15 वर्ष से किसी वरकर को स्थाई नहीं किया है) और जून 07 तक ठेकेदारों के जरिये रखों की 2554 रुपये.... कैन्टीन में स्थाई को भोजन 5 रुपये में और ठेकेदारों के जरिये रखों को 15 रुपये में। सेन्डेन विकास का मैनेजिंग डायरेक्टर भारत सरकार का नागरिक है और संयुक्त प्रबन्ध निदेशक जापान सरकार का नागरिक। फैक्ट्री में होज एण्ड पाइप विभाग तो बीमारियों का घर है — धूल रहित रखने के फेर में तीसरी मंजिल पर स्थित इस विभाग में न दरवाजा है, न खिड़की है..... सिर्फ एक जीना है। ऑक्सीजन की कमी के कारण हर मजदूर बीमार है — मैनेजमेन्ट से खिड़कियों के लिये कई बार कहा है और मात्र आश्वासन मिला है। आधे मजदूर होज एण्ड पाइप में काम करते हैं और ज्यादा ओवर टाइम भी इसी विभाग में होता है।''

पुनीत उद्योग मजदूर : ''प्लॉट 37 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ***पाँच भाई साबुन*** बनाते हम हैल्परों ने जुलाई की तनखा आज 22 अगस्त तक नहीं ली है क्योंकि कम्पनी 3510 की बजाय 2554 रुपये दे रही है।''

पेप्सी ड्राइवर : ''प्लॉट 27 सैक्टर-24 में पेप्सी कम्पनी ने एक ठेकेदार के जरिये हम 54 ड्राइवर व हैल्पर रखे हैं। जुलाई की तनखा देते समय हम सब से हस्ताक्षर 3510 पर करवाये लेकिन दिये 2500 रुपये। इसके विरोध में आज 22 अगस्त को हम सब ने छुट्टी करने का तय किया है।''

श्याम एलॉयज वरकर : ''प्लॉट 40 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 9 अगस्त को जुलाई की तनखा 2450 रुपये देने लगे तो 50 कैजुअल वरकरों ने सकते' पर 'काम नहीं करेंगे' कह कर कैजुअल वरकर 3 बजे तनखा बँटने के समय काम बन्द कर बैठ गये। 'हिसाब दे दो' के उत्तर में 'हिसाब नहीं लेंगे' कह कर वरकर साँय 5 बजे शिफ्ट समाप्ति तक फैक्ट्री में बैठे रहे। दस अगस्त को सुबह 8½ बजे फैक्ट्री में जाने से रोका तो कैजुअल वरकर गेट पर बैठ गये.... श्याम एलॉयज में 40 स्थाई, 50 कैजुअल, पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 100, तथा 100 पीस रेट वाले मजदूर काम करते हैं। ठेकेदार बराये नाम के हैं और इन में 3 तो स्थाई मजदूर हैं जिनमें एक यूनियन नेता भी है। बहलाने-फुसलाने-तोड़ने वालों ने 15 कैजुअल वरकरों को हिसाब के लिये मना लिया और 15 को 100-200 रुपये अलग से देने की कह कर फैक्ट्री में ले गये। फिर भी 20 कैजुअल वरकर शाम तक फैक्ट्री गेट पर थे और 11 अगस्त को डी.सी. कार्यालय जाने की कह रहे थे।''

महारानी पेन्ट्स वरकर : ''प्लॉट 343-344 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को जुलाई की तनखा 2554 रुपये के हिसाब से देने लगे तो 2-3 ने ले ली पर फिर ठेकेदार के जरिये रखे हम सब वरकरों ने पैसे लेने से मना कर काम बन्द कर दिया। प्लॉट 242 मजदूरों के कदम का हमें पता चल गया था। हमारे द्वारा काम बन्द करने से फैक्ट्री में उत्पादन बन्द हो गया। स्थाई मजदूर यूनियन में हैं और उनके नेता जनरल मैनेजर के पास गये तो साहब ने चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर बलदेव राज भाटिया से बात की। बड़े साहब द्वारा 3510 देने की कहने पर नये सिरे से कागज तैयार कर 9 अगस्त को हमें 3510 रुपये तनखा दी। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं — जुलाई के लिये यह 3510 के हिसाब से दिये।''

टालब्रोस मजदूर : '' प्लॉट 75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10 अगस्त को जुलाई की तनखा 2000 रुपये के हिसाब से देने लगे तो हैल्परों ने काम बन्द कर दिया और 3510 माँगे। हैल्परों ने 10 से 22 अगस्त तक काम बन्द रखा..... 16-17 अगस्त को पुलिस फैक्ट्री में आई और साहबों से मिल कर चली गई; श्रम विभाग को दी 190 हैल्परों की सूची पर कम्पनी ने कहा कि वे टालब्रोस फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर नहीं हैं; कम्पनी और श्रम विभाग में भाईचारा..... 190 हैल्परों ने नौकरी छोड़ दी। टालब्रोस फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और कम्पनी ने 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3510 रुपये कह कर नये हैल्पर भर्ती किये हैं।''

टालब्रोस वरकर : ''प्लॉट 60 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को जुलाई की तनखा 3510 रुपये दी। प्लॉट 75 वाली से अलग है....''

आहूजा प्लास्टिक उद्योग मजदूर : ''20ए/17 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 300 रुपये तनखा में बढाने के लिये हम पुरुष मजदूरों ने 5 जून को काम बन्द किया — महिला मजदूर भी काम बन्द करना चाहती थी पर हम ने यह कह कर मना किया कि हम तो कहीं कमा लेंगे, उन्हें परेशानी होगी। डायरेक्टर 200 रुपये ही बढाने पर अड़ा रहा तब हम ने 9 जून को काम शुरू किया.... हम से लिखवाया कि हम बिना बताये छुट्टी पर थे।'' (इन मजदूरों की बाकी बातें अगले अंक में)

बिजली का उत्पादन रात को खा गया — रात्रि को भी मनुष्यों द्वारा काम। इधर एटमी बिजली घरों का ताण्डव पृथ्वी से जीवन मिटाने के खतरे बढा रहा है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (8)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

मण्डी-मुद्रा की गतिक्रिया के चलते कानूनी/गैर-कानूनी में हुई इस उलट-फेर के सन्दर्भ में मालिक से दो-चार आने वाला हिस्सेदार से चन्द शेयरों वाला निदेशक से कर्ज पर टिकी फैक्ट्री-कम्पनी की मुख्य कार्याधिकारी बनने की प्रक्रिया की संक्षिप्त चर्चा कर चुके हैं। कम्पनी के शिखर से, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-सी ई ओ से आरम्भ होती कम्पनी की चोरी मैनेजमेन्ट के निचले स्तर तक फैली होने को मालिकाने में आये इन परिवर्तनों से कुछ हद तक समझा जा सकता है। अब आइये इन तीस-चालीस वर्ष के दौरान उत्पादन क्षेत्र में हुये कुछ उल्लेखनीय बदलाओं पर चर्चा आरम्भ करें।

● कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन विनाश का वाहक है। इन दो सौ वर्षों में इसने पृथ्वी पर अनेकानेक सन्तुलनों-सामंजस्यों को तहस-नहस कर दिया है.... सम्पूर्ण के विनाश की ओर अग्रसर है। और, कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन मण्डी के लिये उत्पादन की धुरी है — यह उत्पादन दस्तकारों व किसानों द्वारा निजी व परिवार के श्रम द्वारा किया जाता हो चाहे मजदूर लगा कर किया जाता हो। सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या के शिकार किसानों द्वारा रसायनों, परिवर्तित बीजों के संग भू-जल का, अपने तन-मन का निर्मम दोहन-शोषण इस कम में अधिक का परिणाम है।

कम लागत पर अधिक उत्पादन आकार-रफ्तार-मात्रा से घनिष्ठता से जुड़ा है। दस्तकारी और किसानी का सीमित आकार इनकी सामाजिक मौत बनता है। फैक्ट्रियों की बड़ी होती साइज. ... कारखानों के बढते आकार, उत्पादन की बढती मात्रा, काम की तेज होती रफ्तार ने लंकाशायर-मैनचेस्टर-शेफ्फील्ड की कपड़ा और स्टील फैक्ट्रियों के दौर में ही सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने बाहुपाश में ले लिया था।

● उत्पादन क्षेत्र की ही तरह व्यापार व अन्य क्षेत्रों में लागत कम करने की प्रक्रिया ने आकार, मात्रा, रफ्तार बढाई हैं। यूरोप-उत्तरी अमरीका में दुकानों को विशाल व्यापारिक संस्थानों ने खदेड़ा। यहाँ भी अब मॉल-संस्कृति का ताण्डव आरम्भ हो गया है. ... और, बचे-खुचे विकृत रिश्तों को भी निगलने के लिये इन्टरनेट व्यापार, ई-व्यापार सामने खड़ा है।

— चिकित्सा क्षेत्र को अस्पतालों ने उद्योग बना दिया था। उपचार की इन फैक्ट्रियों ने वैद्य-डॉक्टर को शिल्पी से वरकर अथवा अधिकारी में बदला। कुर्सी-मेज रख कर हुनर के जरिये रोजी वाली चिकित्सकों की बची-खुची जगह को इलेक्ट्रोनिक्स लील रही है। इन्टरनेट के जरिये चिकित्सा, चेहराविहीन ई-चिकित्सा हमारे सम्मुख है.....

— सिनेमा, सरकस ने मनोरंजन को दस्तकारी से उद्योग में ला दिया था। फिर भी मनोरंजन क्षेत्र में दस्तकारी का दखल बना रहा। इलेक्ट्रोनिक्स का प्रवेश दस्तकारी वाले कलाकार-दर्शक के बीच के विकृत सम्बन्धों को भी पौंछ रहा है....

—प्रयोगशालायें और विश्वविद्यालय ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियाँ बने। फिर भी अकडू शिल्पी-दस्तकार ज्ञानी अपनी छाप छोड़ते रहे हैं। इधर इलेक्ट्रोनिक्स का दखल ज्ञान के रूपों-क्षेत्रों में तेज परिवर्तन कर ज्ञान के शिल्प-स्वरूपों को संग्रहालयों की वस्तु बना रहा है। ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियों में इस पैमाने पर तथा इस गति से ज्ञान पैदा किये जा रहे हैं कि उनसे परिचित रहना भी किसी के बस की बात नहीं रही, उन पर मनन-चिन्तन तो बीते जमाने का हो गया है। कम्प्युटर-इन्टरनेट से नहीं जुड़े हैं तो आप अनपढ हैं..... ज्ञान कोई नहीं छीन सकता वाली बातें आई-गई हो गई हैं, एक के बाद एक प्रकार के ज्ञान-हुनर का नाकारा-फालतू होना सामान्य बन गया है और यह हम में से कब-किसको नाकारा कर दे किसी को पता नहीं....

प्रयोगशालाओं से सेनाओं को और फौजों से उद्योग में आये इलेक्ट्रोनिक्स ने हर क्षेत्र में प्रक्रियाओं को अति तीव्र गति प्रदान की है। कम्प्युटर-सैटेलाइट-इन्टरनेट हर क्षेत्र में मण्डी-मुद्रा की पूरी वीभत्सता को सामने ला रहे हैं।

●आकार-मात्रा-रफ्तार की प्रक्रिया ने उल्लेखनीय कारखानों में मजदूरों की सँख्या 10-20-30 हजार कर दी। यह तीस-चालीस वर्ष पहले की स्थिति है। फिर कारखानों के आकार और उनमें मजदूरों की सँख्या में एक उलट-सी प्रक्रिया नजर आती है।

सेनाओं से उद्योगों में आये इलेक्ट्रोनिक्स का दखल मजदूरों की सँख्या में भारी कटौती का एक कारक है। पर बात इतनी ही नहीं लगती।

इलेक्ट्रोनिक्स अपने संग कारखानों में उत्पादन की मात्रा और रफ्तार में बहुत ज्यादा वृद्धि लाया है। और, फैक्ट्री का आकार नहीं बढने-कम बढने-सिकुड़ने का मुख्य कारण है अधिकाधिक कार्य

बाहर करवाना, अनेक इकाईयों में करवाना, ''जमाना वैन्डरों का है'' । इसे यह कहना अधिक उचित होगा कि एक पूर्ण उत्पाद के लिये अनेक कारखानों को अपने में समेटती बहुत विशाल फैक्ट्री हमारे सम्मुख है । (जारी)

नोएडा से –

नलिनी सिल्क मिल्स मजदूर : ''ए-36 सैक्टर-111 नोएडा फेज-2 स्थित फैक्ट्री में भर्ती के समय हैल्पर की तनखा 3000 रुपये बताते हैं पर देते 2400 हैं, कारीगर की तनखा 3500 बताते हैं पर देते 3000 रुपये हैं । फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तथा वह भी तीसरे महीने में जा कर । फैक्ट्री में 500 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 200 के ही हैं । कैन्टीन नहीं है और कम्पनी 12 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती । नलिनी सिल्क में पीने का पानी खराब है और टॉयलेट गन्दे ।''

मदरसन सुमी सिस्टम वरकर : ''प्लॉट ए-15, सी-14, वाई-2 सैक्टर-6 नोएडा स्थित फैक्ट्रियों में सुबह 6 से 2.15, दोपहर 1.45 से रात 10, और रात 10 से अगले रोज सुबह 6 बजे की शिफ्ट हैं । दिन में आरम्भ होती दो शिफ्टों में लड़कियाँ तथा लड़के दोनों रहते हैं और तीसरी शिफ्ट में सिर्फ लड़के रहते हैं । ए-15 फैक्ट्री में 500-500 लड़कियाँ दो शिफ्टों में और 300-300 लड़के तीन शिफ्टों में थे — इधर कैजुअल वरकरों को फरीदाबाद में नई फैक्ट्री में भेज दिया है । सी-14 फैक्ट्री में 4000 मजदूर काम करते हैं और कम्पनी का मुख्यालय भी है । वाई-2 फैक्ट्री में 1400 लड़कियाँ और 1500 लड़के काम करते हैं । मदरसन फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूर बहुत कम हैं — वाई 2 फैक्ट्री में 200 लड़की और 100 लड़के ही स्थाई । नब्बे प्रतिशत मजदूर कैजुअल हैं । लड़कों का 8 महीने पूरे होने से पहले ब्रेक कर ही देते हैं और 6 महीने बाहर रख कर फिर दूसरे प्लॉट में रखते हैं । सामान्यतः लड़कियों का 3-4 साल तक ब्रेक नहीं करते पर कैजुअल वरकर ही रहती हैं, स्थाई नहीं करते ।

'' मदरसन फैक्ट्रियों में वाहनों के वायर हारनेस बनते हैं । हर दो माह में 15-20 दिन तो काम के लिये बहुत ज्यादा मारामारी होती है । सुबह 6 बजे काम में लगी लड़कियों से रात 10 बजे तक काम करवाते हैं । सुबह 6 बजे की ड्युटी के लिये 3½ -4 बजे उठना पड़ता है, नींद पूरी नहीं होती, पर कम्पनी मानती नहीं । शिफ्ट के बाद बस में बैठी लड़कियों को जबरन उठा कर फैक्ट्री में ले जाते हैं । बीमार होने पर भी छुट्टी नहीं देते । सुबह 6 बजे काम में लगे लड़कों को अगले दिन सुबह 6 बजे तक जबरन रोकते हैं और फिर दो-तीन घण्टे नहाने-धोने के दे कर 9 बजे ड्युटी आ जाने को बोलते हैं । उत्पादन से जुड़े सुपरवाइजरों की भी यही गत होती है । लड़कियों के महीने में 90 घण्टे और लड़कों के 175 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं लेकिन कम्पनी ओवर टाइम का एक घण्टा भी पे-स्लिप में नहीं दिखाती । अलग पर्ची बनाते हैं और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं ।''

दरारें और कोशिशें

फरीदाबाद में :

पुनीत उद्योग मजदूर : ''प्लॉट 37 ई सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ***पाँच भाई साबुन*** बनाते हम लोगों ने जुलाई की तनखा 3510 रुपये माँगी और कम्पनी जो 2554 रुपये दे रही थी उन्हें लेने से मना कर दिया । हमारा इनकार जारी रहा तब कम्पनी ने 23 अगस्त को 1000 रुपये 'एडवान्स' के तौर पर जोड़ कर दिये । हम ने अगस्त की तनखा 10 सितम्बर को 3510 रुपये ली और जिन 1000 को एडवान्स कहा गया था उन्हें कम्पनी ने जुलाई की तनखा का एरियर माना ।''

एल्पिया पैरामाउन्ट प्लास्टिक वरकर : ''प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में अगस्त की तनखा 10 सितम्बर को स्थाई मजदूरों को 3510 तथा 3640 रुपये दी और कैजुअल वरकरों को 2000 रुपये देने लगे तो कैजुअलों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया । दूसरी शिफ्ट के कैजुअलों ने भी 2000 रुपये तनखा लेने से मना कर दिया । फिर 11 सितम्बर को सुबह 8½ बजे कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, बाहर बैठे और 3510 की माँग की । कम्पनी ने पुलिस बुला ली — एक जिप्सी सैक्टर 55 से तथा दूसरी बल्लभगढ से आई । मैनेजिंग डायरेक्टर ने सितम्बर से तनखा 3510 करने की कह कर अगस्त के 2000 लेने को कहा । चार घण्टे बाहर बैठ तब मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये ।

''एल्पिया पैरामाउन्ट फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूर तथा 400 कैजुअल वरकर हैं । दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और महीने में 2-3 दिन तो लगातार 36 घण्टे रोक लेते हैं । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से तो देते ही हैं, महीने में 20-25 घण्टे खा भी जाते हैं । पीने का पानी 15 दिन खारा — शिकायतें करने पर ही मीठा पानी मँगाते हैं ।

''एल्पिया पैरामाउन्ट के बड़े साहब तनखा 3510 करने की कह अन्दर लाये थे और अन्दर साहब लोग थोड़े-थोड़े कैजुअल वरकरों को बुला कर कहने लगे कि 500 रुपये बढा कर तनखा 2500 रुपये कर देंगे..... परसनल मैनेजर ने 15 सितम्बर को दो कैजुअल वरकरों को कहलवाया कि गेट पर कोई मिलने आया है । वहाँ पुलिस की गाड़ी मिली — दोनों को गाड़ी में बैठा लिया और परसनल मैनेजर भी बैठ गया । पुलिस वालों और मैनेजर ने डरा-धमका कर उन मजदूरों को सैक्टर-22 श्मशान घाट के पास गाड़ी से उतारा ।''

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : ''48-49 इन्डस्ट्रीयल

एरिया स्थित फैक्ट्री में 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन के बाद कम्पनी ने डाइकास्टिंग मशीनों पर दो की जगह एक मजदूर से काम करने को कहा। इसके विरोध में ऑपरेटरों ने छुट्टी की तो 10 सितम्बर को 25 डाइकास्टिंग मशीनों में से 5 ही चली। फोरमैन 12 सितम्बर को सुबह मोटरसाइकिल पर ऑपरेटरों को ढूँढते फिर रहा था और ऑपरेटर आपसी तालमेल बढाने के लिये कहीं बातचीतें कर रहे थे।''

जय भारत मारुति वरकर: ''प्लॉट 269 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये एक विभाग में रखे मजदूरों को अगस्त के 31 दिन के 3510 रुपये 14 सितम्बर को देने लगे तो वरकरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। साप्ताहिक छुट्टी खा रहे थे, मजदूरों ने साप्ताहिक छुट्टी के संग महीने के 3510 रुपये देने को कहा।''

बिड़ला वी एक्स एल मजदूर : '' 14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में काम कर रहे 65 स्थाई तथा 450 कैजुअल वरकरों के सम्मुख कम्पनी ने अचानक 14 सितम्बर को अगले दिन से आठ दिन छुट्टी की सूचना टाँगी। हम ने कारण पूछा तो मैनेजमेन्ट ने बताया नहीं। फिर 15 सितम्बर को फैक्ट्री से मशीनें निकाले जाने की सूचना मिली तो हम स्थाई स्त्री व पुरुष मजदूर वहाँ पहुँचे और हम ने मशीनें निकालना रोक दिया। कम्पनी ने पुलिस बुला ली थी। इधर श्रम विभाग, पुलिस-प्रशासन अधिकारियों को शिकायतें करने के बाद हम 45 स्थाई स्त्री तथा 20 स्थाई पुरुष मजदूर अन्य कदमों के बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं।''

पैरामाउन्ट पोलीमर्स वरकर : ''सैक्टर-59 पार्ट-बी झाड़सेंतली-जाजरू मार्ग स्थित फैक्ट्री में 12 सितम्बर को अगस्त की तनखा 25 स्थाई मजदूरों को 3510 व 3640 रुपये दी और 130 कैजुअल वरकरों को 2000 रुपये देने लगे। कैजुअलों ने पैसे नहीं लिये और काम बन्द कर दिया। तब कम्पनी के चेयरमैन ने पूरे स्टाफ के सामने कहा कि इस महीने 2000 रुपये ले लो, सितम्बर की तनखा सब को 3510 देंगे, मेरे ऊपर भरोसा रखो। मजदूरों ने बड़े साहब की बात मान ली। फिर 13 सितम्बर से साहब लोग एक-एक कैजुअल को बुला कर कह रहे हैं कि ऐसे काम बन्द करना नहीं चलेगा, कुछ पैसे बढायेंगे पर 3510 नहीं देंगे, चुपचाप ले लेना, काम करना है तो रहो अन्यथा जाओ।''

लार्सन एण्ड टूब्रो वरकर : '' 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मात्र 66 स्थाई तथा 40-50 कैजुअल वरकर हैं। अधिकतर काम फैक्ट्री से बाहर करवाया जाता है। हम स्थाई मजदूरों ने तीन स्तर से प्रतिनिधि रख कर यूनियन को कम्पनी के माफिक नहीं होने दिया था पर इधर हम में तोड़-फोड़ कर मैनेजमेन्ट अपनी पसन्द के यूनियन लीडर लाने की जुगाड़ बिठा रही है। फैक्ट्री में स्टाफ के टॉयलेट बिलकुल साफ-सुथरे रहते हैं और मजदूरों के गन्दे। पीने के पानी की समस्या भी रहती है।''

एस.एच. इंजिनियर्स मजदूर : ''प्लॉट 33 गली 3, सरूरपुर गाँव में स्थित फैक्ट्री महीने-भर पहले ई-7 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 में थी। मैं, दिनेश कुमार, प्रेस ऑपरेटर हूँ और 22 मई को पावर प्रेस से मेरी दो उँगली कटी तथा एक कुचली गई। उपचार के बाद मैं 13 जुलाई से फिर फैक्ट्री में काम करने लगा। क्षतिपूर्ति के लिये दावे के कागज पूरे करने के लिये मैंने 17 से 20 सितम्बर तक ई.एस.आई. लोकल ऑफिस-डिस्पैन्सरी-अस्पताल भागदौड़ की। फिर मैं 21 सितम्बर को फैक्ट्री पहुँचा तो मुझे ड्युटी पर लेने से इनकार कर दिया।''

फैशन एक्सप्रेस मजदूर : ''100 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री के गेट पर हम सोमवार, 24 सितम्बर को ड्युटी के लिये पहुँचे तो हम ने वहाँ तालाबन्दी की सूचना टँगी पाई। प्रबन्धकों ने हम मजदूरों पर कम्पनी का भविष्य अन्धकारमय करने के आरोप लगाये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकरों को निकालने के बाद फैक्ट्री में हम 99 स्थाई मजदूर ही बचे — 47 महिला तथा 52 पुरुष। महिला मजदूरों से दुर्व्यवहार, सब मजदूरों से दुर्व्यवहार के खिलाफ हम स्थाई मजदूर एक यूनियन से जुड़े और जुलाई 06 में मैनेजमेन्ट को माँग-पत्र दिया था। हम में से कुछ को नौकरी से निकालने तथा कुछ से इस्तीफे लिखवाने के बावजूद कम्पनी हमारे आपस के तालमेल नहीं तोड़ सकी। इस वर्ष 20 मार्च को हम काम बन्द कर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये थे तब पुलिस की छत्रछाया में 8 अप्रैल को उपश्रमायुक्त की देखरेख में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता हुआ था। और, फैशन एक्सप्रेस को नये नाम से अथवा नये सिरे से चलाने के लिये मैनेजमेन्ट ने कदम उठाने शुरू किये। इस सिलसिले में कम्पनी ने समझौते का पालन ही नहीं किया। फिर 23 जुलाई से सिलाई व फिनिशिंग मजदूरों को काम देना बन्द कर दिया — 20 पीस पर एक साथ कढाई करने वाली कम्प्युटर इम्ब्राइड्री की बड़ी मशीन पर ही काम जारी रखा। जुलाई की तनखा नहीं दी.... श्रम विभाग में शिकायतों के बाद आधी तनखा 27 अगस्त को जा कर दी। अगस्त की और जुलाई की बकाया तनखा द्वारा हमें कमजोर कर अब तालाबन्दी की है।''

सौ वर्ष पूर्व प्रशान्त महासागर में एक द्वीप के सभ्यता से परे लोगों के अनुसार सामान्य व्यक्ति के सुफल जीवन के लिये एक सूर्योदय से एक सूर्यास्त के दौरान का समय पर्याप्त से अधिक है।

शिशुओं की दुलत्तियाँ

बच्चों की नजर से प्रगति और विकास मुर्दाबाद

● शिशु के सहज, स्वस्थ पालन-पोषण में साझेदारी वाले अलग-अलग आयु के पचास लोग आवश्यक हैं। अफ्रीका में प्रचलित एक कहावत अच्छे बचपन के लिये और अधिक लोगों के होने को जरूरी बताती है।

प्रगति और विकास के संग शिशु से लगाव रखते लोगों का दायरा सिकुड़ता जाता है। माता, पिता और बच्चा/बच्ची अब सामान्य बन गया है। मात्र माँ और शिशु प्रगति के शिखरों पर विचरने लगे हैं। एक-दो-तीन का होना माँ का पगलाना, पिता का पगलाना, शिशु में बम के बीज बोना लिये है।

● लगाव के बिना शिशु के संग रहते लोगों को भुगतना विगत में महलों में जन्म लेने वालों की त्रासदी थी। शिशु की देखभाल करने को मजबूर लोगों का स्वाभाविक अनमनापन, दिखावा, बेगानापन राजकुमार-राजकुमारी के टेढे-निष्ठुर-निर्मम-क्रूर व्यवहार का खाद-पानी था।

पति-पत्नी-बच्चे को सामाजिक इकाई बनाने के संग प्रगति और विकास पति के अलावा पत्नी द्वारा नौकरी करने की अनिवार्यता को बढाते हैं। नौकरी करती महिला द्वारा शिशु की देखभाल पैसों के लिये यह काम करने वालों को सौंपना मजबूरी है। बच्चों-युवाओं में टेढेपन-निष्ठुरता-निर्ममता-क्रूरता की उठती लहरें प्रगति का एक परिणाम हैं।

● घड़ी प्रगति और विकास का एक प्रतीक है। समय का अभाव तरक्की का पैमाना है — जितना कम समय आपके पास है उतनी ही अधिक प्रगति आपने की है, आप बेरोजगार हैं तो गर्त में हैं। विकास में सफलता और ''क्वालिटी टाइम'' एक-दूसरे के पूरक हैं। शिशु को समय नहीं दे पाने के अपराधबोध से ग्रस्त माता-पिता उसे ''क्वालिटी टाइम'' देते हैं..... ''क्वालिटी टाइम'' माता-पिता का कवच है और जाने-अनजाने में बच्चे को टेढेपन में दीक्षित करता है।

● स्वाभाविक को नकारना-छिपाना-बाँधना प्रगति-विकास-सभ्यता के प्रतिबिम्ब हैं। ''छी-छी नँगू'', ''टट्टी-पेशाब गन्दे'' के फिकरे सामान्य बन गये हैं। प्रगति और विकास शिशु को कपड़ों में लपेटना और टट्टी-पेशाब के लिये समय व स्थान निर्धारित करना लिये हैं। यह पहलेपहल माता-पिता की कुछ मजबूरी है और फिर क्रेच-विद्यालय का अनुशासन। टट्टी-पेशाब रोकना बच्चों को तन के अनेक रोग देता है। छी-छी की बातें मन के रोग लिये हैं।

● पक्के मकान, बिजली, इलेक्ट्रोनिक उपकरण, कुर्सी-मेज प्रगति-विकास-सभ्यता की देन हैं। शिशु के लिये ऐसे निवास यातनागृह हैं।

कच्चे घर में शिशु को चूल्हे की आग से बचाने पर ही विशेष ध्यान जरूरी होता है। पक्के घर में शिशु का हर कदम टोका-टोकी लिये है। चोट का डर, बिजली का भय, महँगी चीज तोड़ने की आशंका माता-पिता को चौकस-चिन्तित रखती हैं। टोका-टोकी शिशु में आक्रोश पैदा करती है और शिशु के क्रोध की अभिव्यक्ति पर रोक को सभ्यता ने एक अनिवार्यता बना दिया है... शिशु मन में यह बम के बीज बोना है। किराये के एक कमरे में रहने अथवा बड़े मकान में रहने से इसमें कोई खास फर्क नहीं पड़ता।

वैसे, आज के देव, प्रभु विज्ञान के अनुसार भी सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट वाले निवास तथा कार्यस्थल अत्यन्त हानिकारक हैं। यह इंग्लैण्ड के साठ प्रतिशत निवासियों की साँस की तकलीफों का प्रमुख कारण हैं।

● गति, तीव्र गति प्रगति और विकास का एक अन्य प्रतीक है। सड़क और वाहन सर्वग्रासी बने हैं। यातनागृह बने निवासों में बच्चों को बन्दी बना कर रखने का बाहरी कारण वाहन हैं, तेज रफ्तार वाहन। गये वह दिन जब साइकिल की रफ्तार को खतरनाक माना जाता था ....

''बाहर'' अब बच्चों के दायरे से बाहर है। सड़क पर बच्चों को कैसे खेलने दें .... अन्य सार्वजनिक स्थान हैं नहीं अथवा अनेक शर्तें लिये हैं। ऐसे में बच्चे मनोरंजन के लिये टी वी देखें..

सभ्यता के संग आई पहलवानी, मुक्केबाजी, नाटक, नौटंकी की प्रायोजित पीड़ा-प्रायोजित आनन्द में इधर बहुत प्रगति हुई है। टी वी ने प्रायोजित पीड़ा-प्रायोजित आनन्द को जन-जन तक पहुँचा दिया है। प्रगति-विकास ने एकाकी भोग को, तन की बजाय मस्तिष्क द्वारा भोग को महामारी बना दिया है। आत्मघाती बम बनना, 10-12 वर्ष के बच्चों द्वारा विद्यालय में 18-20 को गोली मारना इसके लक्षण हैं।

●शिशुओं का माटी-रेत-गारा के प्रति आकर्षण देखते ही बनता है। बड़ों की रेत-मिट्टी-कीचड़ से नफरत चिन्ता के संग चिन्तन की बात है....

बच्चों के अच्छे भविष्य के नाम पर अपनी दुर्गत करने, बच्चों की दुर्गत करने पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।■

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

विक्टोरा टूल इंजिनियर्स वरकर : ''प्लॉट 46 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 11 अक्टूबर को फिर एक मजदूर का हाथ कटा. ... दो उँगलियाँ गई, बल्लभगढ में भाटिया नर्सिंग होम ले गये, आज 16 अक्टूबर तक एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी है। ***मारुति कार*** के पुर्जे बनाती विक्टोरा टूल्स हाथ काटू फैक्ट्री है। पावर प्रेस विभाग के 2-3 बन्दे हर समय मेडिकल पर रहते हैं। अधिकतर हाथ कटों को नौकरी से निकाल देते हैं फिर भी पावर प्रेस विभाग में ही 70 मजदूरों में 25 के हाथ कटे हैं। कभी जाँच के लिये कोई अधिकारी आता है तब हाथ कटों को प्लॉट 118 वाली कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री में भेज देते हैं।

''विक्टोरा में कोहनी से हाथ कटे मजदूर को ठीक होने पर फैक्ट्री में गार्ड बनाया और महीने बाद निकाल दिया। अभी पहुँचे से हाथ कटे दो मजदूर गेट पर काम करते हैं। दो उँगली कटे राकेश को ठीक होने पर फिर पावर प्रेस पर लगाया। तनखा 2700 रुपये की बजाय जुलाई से देय 3510-4160 न्यूनतम अनुसार माँगने पर 10 सितम्बर को राकेश को नौकरी से निकाल दिया। अरुण का हाथ दूसरी बार कटा तब ई.एस.आई. करवाई.... फोर्क लिफ्ट चलाते दोनों ड्राइवरों की तीन-तीन उँगली कटी हैं। फैक्ट्री में रोज सुबह 8 बजे प्रार्थना, फिर 5 मिनट व्यायाम, फिर साहबों के भाषण.... ज्यादा उत्पादन वाले का नाम, ताली, 100 रुपये इनाम। इधर तीन-चार महीने से सफाई बहुत है, दफ्तर चमका रखा है, मजदूरों को टोपी-चश्मा-लम्बा कोट..... विक्टोरा की 7 गाड़ियाँ मारुति फैक्ट्रियों को पुर्जे पहुँचाने फरीदाबाद-गुड़गाँव दौड़ती रहती हैं।''

हिन्दुस्तान सिरिंज वरकर : '' प्लॉट 178 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम का भारी बोझ और 8 घण्टे खड़े-खड़े काम करना तो है ही, बी-शिफ्ट वालों के संग रोज कोई ना कोई लफड़ा रहता है। रात सवा बारह फैक्ट्री से निकलते हैं और लौटते समय कभी किसी से पैसे छीने जाते हैं तो कभी साइकिल। सीकरी अपने निवास लौट रहे एक मजदूर की सितम्बर-अन्त में लूटपाट में हत्या हुई। इसे एक्सीडेन्ट में मृत्यु कहा गया और कम्पनी ने नये नियमों की सूची टाँग दी : साइकिल के पीछे लाल रंग की रोशनी लगाओ, हल्के रंग के कपड़े पहनो, फैक्ट्री आने-जाने के दौरान मजदूर स्वयं जिम्मेदार है, कम्पनी की कोई जिम्मेदारी नहीं है।''

श्री भिक्षु कम्पोनेन्ट्स मजदूर : ''प्लॉट 83-84 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 300 टन की 4 और 150-200 टन की 40 पावर प्रेस हैं। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 120 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में पावर प्रेसें चलाते हैं। हाथ कटते रहते हैं। ठेकेदार के पहुँचने तक हाथ कटे मजदूर फैक्ट्री में छटपटाते हैं। कार्ड बना कर ठेकेदार ई.एस.आई. भेजता है और फिर हाथ कटे मजदूर श्री भिक्षु फैक्ट्री से बाहर कर दिये जाते हैं। कम्पनी ने टूल रूम के 35 और पैकिंग विभाग के 60 मजदूर स्वयं भर्ती किये हैं। ई.एस. आई. व पी.एफ. अब 3510 पर काटते हैं लेकिन हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 2800 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कोई छुट्टी नहीं — वर्ष में 365 दिन श्री भिक्षु फैक्ट्री में उत्पादन होता है। पीने के खारे पानी ने मजदूरों को उदर रोगी बना रखा है। दो साल से सीवर का ढक्कन टूटा पड़ा है — श्री भिक्षु फैक्ट्री हर समय बदबू से भरी रहती है।'''

सत्य की ओर

एक दिन में 8 घण्टे काम। तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं। उत्पादन कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये मजदूर नहीं रखना। यह कानून हैं।

दिल्ली, नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में 12 घण्टे प्रतिदिन काम करवाना सामान्य है। दिन में 16 घण्टे काम, 36 घण्टे लगातार काम करवाना अजूबा नहीं है। एक महीने में ही 120-150 घण्टे ओवर टाइम सामान्य है। प्रतिमाह 200-250 घण्टे ओवर टाइम अजूबा नहीं है। उत्पादन कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की बड़ी सँख्या सामान्य है। फैक्ट्री में उत्पादन कार्य करते मजदूरों में नब्बे प्रतिशत का ठेकेदारों के जरिये रखे गये होना अजूबा नहीं है।

कथनी और करनी का इतना बेमेल होना साहबों को कुछ ज्यादा ही झूठ बुलवा रहा है। सत्य की ओर थोड़ा सरकने के लिये कानून बदलने के बारे में 5.11.2007 के ''हिन्दुस्तान'' का समाचार : *''गुड़गाँव और उसके आस-पास के इलाकों में अपने यहाँ काम करने वाले हजारों श्रमिकों की नौकरी से छुट्टी करने को मजबूर हुये वस्त्र निर्यातकों को आर्थिक संकट से उबारने के लिये राज्य सरकार ने उन्हें कुछ तोहफे देने का फैसला किया है।*

''सरकार टैक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट और फुटवियर क्षेत्रों में भी कॉन्ट्रैक्ट लेबर सिस्टम को मंजूरी देने का मन बना रही है। फिलहाल इन क्षेत्रों में सिक्योरिटी, कैंटीन और बागवानी सेवाओं के लिये कॉन्ट्रैक्ट लेबर रखने की मंजूरी है। नियमित कर्मचारी की तुलना में कॉन्ट्रैक्ट लेबर काफी सस्ते पड़ते हैं.... इसके अलावा, एक अन्य प्रस्ताव पर भी विचार हो रहा है, जिसके तहत उत्पादकता आधारित पारिश्रमिक और दो घण्टे के स्वैच्छिक ओवर टाइम का प्रावधान है। इस प्रस्ताव पर एक माह के भीतर अमल किये जाने की सम्भावना है।.....'' ■

शिक्षण वेतन

मैं मजदूर समाचार पढ रही थी। मैं यह खबर पढ कर हैरान रह गई कि हरियाणा सरकार ने एक हैल्पर (अकुशल श्रमिक) की कम से कम मासिक तनखा 8 घण्टे प्रतिदिन काम करने तथा सप्ताह में एक छुट्टी के साथ 3510 रुपये रखी है। यह बात हैरानीजनक है क्योंकि स्कूलों में प्रशिक्षित टीचरों को इतनी तनखा नहीं दी जा रही।

मैंने और मेरे जैसी कई लड़कियों ने अध्यापन के लिये एन टी टी तथा ई सी सी ई द्वारा प्रशिक्षण लिया है। इन प्रशिक्षणों पर काफी पैसे खर्च करने के बावजूद विद्यालयों में 800, 1000, 1500, 2000, 2500 रुपये से ज्यादा वेतन नहीं देते। ढाई हजार रुपये तनखा तो तब देते हैं जब स्नातक की शिक्षा पूरी कर ली हो और पढाने का अनुभव भी हो।

मैं और मेरी सहेलियाँ कई विद्यालयों में गई हैं। स्कूलों में सुबह 6½से दोपहर 2½ बजे तक 8 घण्टे पूरा काम लेते हैं। कक्षा में पढाने के अलावा भी कई काम होते हैं। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक तथा मास्टर रजिस्टर भरने के काम घर ले जा कर करने पड़ते हैं। इस सब के बावजूद तनखा 2000 रुपये से ज्यादा नहीं। पर यह सब तो बड़े स्कूलों की बातें हैं। अब इन विद्यालयों को देखिये : 1. ***इरोस कॉनवेन्ट स्कूल,*** एन एच-3 में डी.ए.वी. कॉलेज के पास, में सुबह 7 से दोपहर 1 बजे तक पढाने की तनखा 1000 रुपये। 2. ***एम.डी. कॉनवेन्ट स्कूल,*** एन एच-5 मेन मार्केट, में सुबह 7 से दोपहर 2 बजे तक पढाने का वेतन 600 रुपये। 3. ***लिटिल चाइल्ड स्कूल,*** एन एच-5 एफ ब्लॉक, में सुबह 8 से दोपहर 1 बजे तक अध्यापन पर तनखा 500 रुपये। 4. ***परमार पब्लिक स्कूल,*** सोहना रोड़, में सुबह 7 से दोपहर 3 बजे तक पढाने की तनखा 1800 रुपये।

दरारें और कोशिशें

टाटा रायरसन स्टील मजदूर : ''33 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में हम 104 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते थे और 25 रुपये प्रति कार्यदिवस भोजन के देते थे। हरियाणा सरकार द्वारा जुलाई से लागू न्यूनतम वेतन कम्पनी ने अगस्त से लागू किया तब हैल्पर व ऑपरेटर, दोनों को ही 3510 रुपये तनखा दी और..... और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की जगह सिंगल रेट से किया तथा भोजन के 25 रुपये बन्द कर दिये, तनखा से भोजन के 650 रुपये काट लिये।

''10 सितम्बर को यह तनखा लेने के बाद रात को हम ने काम बन्द कर दिया। साहब लोग रात 8½-9 बजे फैक्ट्री पहुँचे और बोले कि काम करो, ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देंगे। लेकिन हम ने दोनों शिफ्टों के मजदूरों के एकत्र होने के लिये 11 सितम्बर की सुबह 9½-10 तक काम बन्द रखा। कम्पनी ने तनखा से काटे भोजन के 650 रुपये 11 सितम्बर को दिये। लेकिन बाद में साहब लोग ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से फिर करने की अपनी बात से मुकर गये हैं। ....''

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज वरकर : ''प्लॉट 47-48 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 8 सफाई कर्मियों ने 3510 रुपये से कम तनखा लेने से इनकार कर 7-8 सितम्बर को काम बन्द किया तब ठेकेदार ने आश्वासन से बात बना ली थी। इधर पहली अक्टूबर को सफाई कर्मियों ने सितम्बर की तनखा 3510 ली। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये हम मजदूरों ने सफाई कर्मियों के रास्ते पर चलना तय किया अगर .... कम्पनी ने 13 अक्टूबर को हमें सितम्बर की तनखा 3640 रुपये दी। उत्पादन कार्य में लगे ठेकेदारों के जरिये रखे 400 से ज्यादा वरकरों को सितम्बर की तनखा आज 17 अक्टूबर तक नहीं दी है...... वे भी आपस में सफाई कर्मियों की बातें कर रहे हैं। फैक्ट्री में 800 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सिर्फ 9 लैट्रीन थी, मैनेजमेन्ट ने 5 तुड़वा दी, अब मात्र 4 हैं।''

इन्डीकेशन इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : ''प्लॉट 19 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों को हरियाणा सरकार द्वारा जुलाई से लागू न्यूनतम वेतन कम्पनी यह कह कर नहीं दे रही थी कि न्यायालय का स्थगन आदेश है। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से हमें पता चला कि किसी अदालत की कोई रोक नहीं है। कई कम्पनियों में वरकरों ने नये न्यूनतम वेतन लागू करवाये। हमें अगस्त की तनखा भी पुरानी दर से दी तो 13 सितम्बर को सुबह हम कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर जाने की बजाय गेट पर रुक गये। स्थाई मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये पर हम कैजुअल वरकरों के बिना उत्पादन नहीं हो सकता क्योंकि हम मजदूरों का अस्सी प्रतिशत हैं। हमें अन्दर ले जाने यूनियन नेता गेट पर आये पर हम ने इनकार कर दिया (यूनियन के सदस्य स्थाई मजदूर ही हैं)। फिर एक मैनेजमेन्ट सदस्य ने गेट पर आ कर भोंपू से घोषणा की कि ओवर टाइम के पैसों के संग 16 सितम्बर को नये ग्रेड अनुसार पैसे दे देंगे। डेढ घण्टे फैक्ट्री से बाहर रह कर हम अन्दर गये। साहब की 16 तारीख की बात धरी रह गई तो उन्होंने 22 सितम्बर की कही.... दबाव बनाये रख कर हम ने तनखा 3510 रुपये ली है और एरियर भी।''

विज्ञान मण्डी–मुद्रा का वाहक वाहन है। मण्डी को, रुपये–पैसों को दफन करने की एक राह विज्ञान की आलोचना से आरम्भ होती है।

निर्भरता-आत्मनिर्भरता-परस्पर निर्भरता बनाम.... .....बनाम क्या ?

✶ शिशु की माँ पर निर्भरता को स्वयंसिद्ध माना जा रहा है। आइये इसकी थोड़ी पड़ताल करें।

स्तनपान को शिशु की माँ पर निर्भरता को साफ-साफ दर्शाने वाला कहा जा सकता है। परन्तु क्या बात वास्तव में ऐसी है ?

स्तनपान माँ को आनन्द प्रदान कराता है। क्या इसे माँ की बच्चे पर निर्भरता कह सकते हैं ?

वास्तव में जीवन बहु-आयामी है, जिन्दगी के कई पहलू हैं। इस अथवा उस पहलू को महत्वपूर्ण-अधिक महत्वपूर्ण करार देना और इन-उन आयामों को गौण बताना गड़बड़झालों की पूरी बारात लिये है।

✶ दरअसल समुदाय रूपी समाजों का टूटना और ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, बड़े-छोटे वाली समाज व्यवस्थाओं का उभरना-फैलना जीवन के विभिन्न पहलुओं में सामंजस्य को तोड़ता है। सम्पूर्णता में काट-छाँट कर कुछ पहलुओं को महत्वपूर्ण और अन्य को गौण बनाने की प्रक्रिया चलती है। मालिक जो करें वह महत्वपूर्ण, गुलाम जो करें वह गौण.....

जीवन के आयामों में सामंजस्य का टूटना और कुछ पहलुओं का महत्वपूर्ण तथा अन्य का गौण बनना सब को सिकोड़ना-खंडित करना लिये है।

दासों की पीड़ा का बयान करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामियों की पीड़ा की झलक के लिये महाभारत ही पर्याप्त है। भूदासों के दुख-दर्द के लिये उदाहरणों की जरूरत नहीं है। राजाओं की त्रासदी को शेक्सपीयर के नाटक बखूबी दर्शाते हैं।

✶ उपरोक्त को ध्यान में रखते हुये आइये निर्भरता-आत्मनिर्भरता-परस्पर निर्भरता पर कुछ चर्चा करें।

—वर्तमान की एक विशेषता यह है कि सहज के प्रति इसमें व्यापक असहजता है।

आयु का सन्दर्भ ही लें। जन्म-शैशव-युवावस्था-वृद्धावस्था-मृत्यु की स्वाभाविकता के प्रति चिर यौवन की लालसा को क्या कहेंगे?

—जवानी का एक अर्थ किसी पर निर्भर नहीं होना भी है। निर्भर मानी अधीन यानी दुखद ! लौटें माँ-शिशु पर और विचार करें कि कैसे पूरक का अनर्थ निर्भर है।

—वर्तमान के एक और लक्ष्य आत्मनिर्भरता को देखिये।

यहाँ हम सरलीकरण के लिये समूह की बजाय व्यक्ति-केन्द्रित उदाहरण दे रहे हैं।

आत्मनिर्भरता आगे ही एकांगी जीवन को एकाकी बनाने की राह है। आत्मनिर्भरता आज निवास के ऐसे स्वरूप लिये है कि किसी से कोई मिलना-जुलना न हो। भोजन ऐसा कि अकेले निगल सकें। यात्रा के दौरान सामने किताब और कानों में संगीत। "अपना पैसा" यानी नौकरी-चाकरी आदर्श। नीरस जीवन पर मनन से बचने के लिये टी.वी., प्रायोजित-आनन्द और प्रायोजित-पीड़ा का एकाकी उपभोग।

—निर्भरता और आत्मनिर्भरता में तवे और चूल्हे के भेद के दृष्टिगत विकल्प के तौर पर परस्पर निर्भरता आकर्षक लगती है। आइये इसे थोड़ा देखें।

विस्तार का अभाव और सम्बन्धों का सतही-छिछला होना ऐसी दवा की माँग करता है जो इन्हें कुछ जीवन दे सके। व्यवहारिकता वह औषधि है।

सम्बन्धों का प्रबन्धन करना, रिश्तों को मैनेज करना नया सूत्र है। किसने किस के लिये कितना किया है और क्या-कब करना है का हिसाब-किताब रखना और नफे-नुकसान का आंकलन एक सतत् क्रिया बनती है। सम्बन्ध बनाये रखना है अथवा तोड़ना है, नये रिश्ते बनाने हैं अथवा पुरानों को भुनाना है की ऊहापोह हर समय रहती है। व्यक्ति हो चाहे समूह या संस्था या सरकार, रिश्तों को मैनेज करने का अर्थ यही है।

और, परस्पर निर्भरता सम्बन्धों को मैनेज करना ही है।

निर्भरता का विकल्प आत्मनिर्भरता नहीं है और इन दोनों का विकल्प परस्पर निर्भरता नहीं है। तो क्या?

स्वयं को, मानव को प्रकृति का एक अंश लेना, सम्पूर्ण का एक अंश लेना विकल्पों के लिये प्रस्थान-बिन्दू लगता है।

फैक्ट्री रिपोर्ट

सेन्चुरी एन.एफ. कास्टिंग मजदूर : ''प्लॉट 1 सैक्टर-25 फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और कम्पनी की कोशिश रहती है कि मजदूर साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं करें — गर्मियों में तीन महीने (अप्रैल, मई, जून) एक भी छुट्टी नहीं करने पर एक हजार रुपये इनाम। भट्टी वालों को हर 3 महीने में और छँटाई करने वालों को हर 6 माह में चमड़े के जूते। सब मजदूरों को एक किलो साबुन हर महीने और सर्दियों में 2 किलो गुड़ प्रतिमाह। गर्मियों में सब को ड्युटी के दौरान एक बार नींबू पानी और ड्युटी छूटने पर भट्टी वालों को 2-2 नींबू तथा अन्य को एक-एक। इन मामलों में कम्पनी 100 स्थाई मजदूरों और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 400 वरकरों में भेद नहीं करती।

''सेन्चुरी कास्टिंग में 6 बड़ी और 2 छोटी भट्टियाँ हैं जिनमें अल्युमीनियम का कबाड़ा गलाया जाता है। कबाड़े में कभी-कभी बम और मिसाइल भी आ जाते हैं जिन्हें छँटाई के समय मजदूर एक तरफ कर देते हैं। कम्पनी उनका क्या करती है पता नहीं। दो- ढाई साल पहले मिसाइल या बम से एक भट्टी में विस्फोट हुआ था। कोई बोलते हैं 10 मरे, कोई 17 मरे बताते हैं, अखबारों ने दो मरे कहा था और वजह ज्यादा बारिश के कारण दीवार गिरना बताया था।''

डिलाइट प्रेसिंग मजदूर : ''प्लॉट 302 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 2000 तथा कारीगरों को 2800 रुपये तनखा देते हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। छूटने का समय अनिश्चित — 11 घण्टे से अधिक की ड्युटी पर 15 रुपये रोटी के। देर रात छूटने पर रास्ते में पुलिस परेशान करती है।''

फाइबरवेज वरकर : ''प्लॉट 3 सैक्टर-4, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में फाइबर से खिड़की, चौखट, गेट बनाने का बहुत ही गन्दा काम होता है। यहाँ हम 60 मजदूर काम करते हैं पर दस्ताने व मास्क सिर्फ 4 कटर को देते हैं। हैल्परों की तनखा 1800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कारीगरों की तनखा 3500-5000 रुपये।''

टी सी एस बजाज मजदूर : ''62 नीलम-बाटा रोड, फरीदाबाद स्थित मोटरसाइकिल बिक्री केन्द्र में 150 वरकरों की सुबह 9 से साँय 6½ की ड्युटी है और 7½ तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं। हैल्परों को 2500 रुपये तनखा देते हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। मैकेनिकों की तनखा 3500-4000 रुपये। मैनेजिंग डायरेक्टर राहुल सलुजा हर समय गाली देता है, थप्पड़ भी मार देता है — कहता है कि मुख्य मन्त्री मेरा है, सरकार और पुलिस मेरी हैं।''

वी एण्ड एस एक्सपोर्ट मजदूर : ''301 उद्योग विहार फेज-2 गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में हम 200 सैम्पलिंग टेलरों की तनखा 3800 रुपये थी। जुलाई से सरकार द्वारा 3510-4160 रुपये न्यूनतम वेतन लागू करने पर कम्पनी ने हैल्परों की तनखा 3510 कर दी पर हम उच्च कुशल सिलाई कारीगरों की तनखा पहले वाली 3800 रुपये ही रखी। इसके विरोध में हम ने 18 और 19 अक्टूबर को फैक्ट्री में मशीनें बन्द रखी। सुबह 9½ से रात 8 बजे की शिफ्ट है और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे देरी से देते हैं — अक्टूबर का वेतन आज 29 नवम्बर को देने की बात है और अक्टूबर के ओवर टाइम के पैसे 10 दिसम्बर को।''

तारसा एक्सपोर्ट वरकर : ''174 उद्योग विहार फेज-1 गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 3500-3600 रुपये। वेतन से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर कार्ड नहीं देते, पर्ची नहीं देते। सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और सितम्बर के यह आज 29 नवम्बर तक नहीं दिये हैं। फैक्ट्री में 700 मजदूर हैं पर कैन्टीन नहीं है। लैट्रीन बहुत गन्दे रहते हैं।''

एस एण्ड आर मजदूर : ''298 उद्योग विहार फेज-2 गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और डरा-धमका कर रात के 2 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में ओवर टाइम के 150-250 घण्टे। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 12 से 1 तथा 4 से 5 के बीच ही टॉयलेट जा सकते हैं, आगे-पीछे बिल्कुल नहीं।''

लिलिपुट किड्स वीयर मजदूर : ''ए-185 ओखला फेज-1 दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 500 सिलाई कारीगर, 60 कटिंग वाले, 20 चैकर, 18 स्टीम प्रेसों पर, 10 स्पोटिंग में, 50 हैल्पर काम करते हैं पर इन में 90 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। एक शिफ्ट है, सुबह 9 से रात 9 तक, रविवार को 8 घण्टे की ही। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3516 रुपये, रविवार के 8 घण्टों के लिये मात्र 60 रुपये, किसी दिन रात 9 बजे बाद 3 घण्टे रोकने पर उनके बस 50 रुपये। बिना ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 2800 रुपये, रविवार के 8 घण्टे के मात्र 40 रुपये, रात 9 से 12 तक रोकने के सिर्फ 40 रुपये। रात 9 से 12 के लिए स्टाफ को भी ओवर टाइम नहीं — लाइनमैन को 100, मास्टर को 100 और प्रोडक्शन मैनेजर को 200 रुपये मात्र। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले 20 सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे की ड्युटी व साप्ताहिक अवकाश पर महीने के 3940 रुपये पर

ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 16 रुपये 40 पैसे प्रति घण्टा के हिसाब से। बिना ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले 480 सिलाई कारीगरों को 17 रुपये प्रति घण्टा अनुसार पैसे। लिलिपुट किड्स वीयर की ओखला फेज-1 में ए-191, सी-113, डी-3, डी-95 व फेज-2 में एक्स- 62 तथा बदरपुर में 6 और फैक्ट्रियाँ हैं।''

पूजा इन्टरप्राइजेज- स्पार्कल ट्रेडिंग हाउस वरकर : ''सी-79 ओखला फेज-1 दिल्ली स्थित फैक्ट्री में ***डोमिनोज*** के लिये सब्जियाँ कटती हैं और हवाई अड्डे के पास स्थित ***ताज, सैफियर, एम्बैसडर होटलों*** के लिये नींबू पानी के पैक बनते हैं। पिज्जा हट, मार्क फ्राई, जूस जोन, पिज्जा कॉर्नर के ठेके टूट गये हैं। शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है पर समाप्त होने का कोई समय नहीं है, काम खत्म होने से पहले फैक्ट्री से निकलने नहीं देते। रोज रात 9½ बाद छूटते हैं, रात के 12-1, सुबह के 6 बज जाते हैं और फिर सुबह 9 बजे ड्युटी के लिये उपस्थित हो ! ओवर टाइम का एक पैसा भी नहीं। वर्ष के 365 दिन काम — रविवार को काम के बदले में छुट्टी की कहते हैं पर देते नहीं। अति तीव्र गति से काम के कारण उँगलियाँ रोज घायल होती हैं। गाड़ी भरो के चक्कर में चाय वापस भेज देते हैं और 1 से 1½ का भोजन अवकाश 2½ से 3 बजे। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती की सितम्बर से तनखा 3409 रुपये और ठेकेदार के जरिये रखों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2700 रुपये। वेतन देरी से — अक्टूबर की तनखा 20 नवम्बर को दी और ठेकेदार के जरिये रखों को तो आज 30 नवम्बर तक नहीं दी है।''

घायल—बीमार होने पर

दिल्ली, नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद में काम करते जिन मजदूरों पर कानून अनुसार ई.एस.आई. के प्रावधान लागू होते हैं उन में से 70-75 प्रतिशत पर कम्पनियाँ यह लागू नहीं करती। जिन्हें कैजुअल वरकर अथवा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर कहते हैं उन में नब्बे प्रतिशत की ई.एस.आई. नहीं होती।

ऐसे में फैक्ट्री में ज्यादा चोट लगने पर मजदूर को निजी चिकित्सालय ले जाना सामान्य है। हाथ कटने जैसे मामलों में इधर-उधर पैसे दे कर ई.एस.आई. पीछे की तारीख से करवा देना भी आम बात है। घटना से चन्द रोज पहले की भर्ती दिखाई जाती है। स्वयं भर्ती किये मजदूर को भी ठेकेदार के जरिये रखा दिखाया जाता है ताकि ठीक होने पर उसे फैक्ट्री में स्थाई तौर पर रखना नहीं पड़े। ताजा चोट के समय साहब लोग मोम हो जाते हैं — नौकरी पर रखने तथा अच्छे उपचार की बातें करते हैं, खर्च के लिये पैसे देते हैं। पुचकार कर कागजी खानापूर्ति करने के बाद साहब पहले जैसे हो जाते हैं।

इसलिये घायल होने पर हो सके तो ई.एस.आई. अस्पताल जायें — ई.एस.आई. कार्ड के बिना भी कैजुअलटी में जा सकते हैं। मैनेजमेन्टें निजी चिकित्सालयों में ले जाती हैं इसलिये तत्काल ई.एस.आई. अस्पताल नहीं जा सकें तो जितना जल्दी हो सके अवश्य वहाँ जायें। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी है तो ई.एस.आई. डॉक्टर भरवायेंगे। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट की फोटो कॉपी अवश्य लें और उस में थोड़े दिन की भर्ती, ठेकेदार आदि वाली गड़बड़ियों को देखें तथा कर्मचारी राज्य बीमा निगम अधिकारियों को लिखित में शिकायतें करें। ई. एस.आई. डॉक्टर द्वारा फिटनेस दिये जाने पर फैक्ट्री में ड्युटी के लिये जायें। ड्युटी पर नहीं लेना कानून अनुसार अपराध है। इसकी शिकायत ई.एस.आई. लोकल तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में लिखित में तुरन्त करें। ई.एस.आई. केन्द्र सरकार के तहत है और शिकायतें करने के लिये कुछ पते यह हैं : 1. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद—121002 (पूरे हरियाणा के लिये); 2. क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, डी.डी.ए. एस.सी. ओ., राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110008 (दिल्ली क्षेत्र के लिये); 3. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोटला रोड़, नई दिल्ली-110002 ; 4. श्रम मन्त्री, भारत सरकार, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 ; और

5. ई-मेल पता < id-sys @ esic.nic.in>

कार्यस्थलों की हालात के कारण अनेक पेशेगत बीमारियों की भरमार है, मजदूर बड़े पैमाने पर इन से ग्रस्त होते हैं। और, लीपापोती का हाल यह है कि फरीदाबाद में दस्तावेजों के अनुसार मात्र एक मामला आधे-अधुरे ढँग से अब तक उठा है.... सेवा निवृति के बाद भी तन और मन के इन पेशेगत रोगों की क्षतिपूर्ति तथा उपचार की जिम्मेदारी कम्पनियों व ई.एस.आई. की है। जानकारी प्राप्त कर कदम उठायें।

ई. एस. आई. के प्रावधान लागू नहीं करने, ई. एस. आई. कार्ड नहीं देने आदि की शिकायतें करना बनता है। कम्पनियों के नाम-पते लिख कर ऊपर दिये पतों पर पोस्ट कार्ड डालें, ई-मेल करें।

प्रगति-विकास का रथ भारत में ही हर रोज सड़कों पर वाहनों की चपेट में 275 लोगों की मौत को पार कर गया है। राज्य-केन्द्र सरकारें और हावी सोच इस आतंकवाद को बढाने में जुटी हैं।

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।